शान्ता झा

साहित्यक छात्रा श्रीमती शान्ता झाक अन्तस् मे साहित्यक अन्त: सलिला प्रवहमान छनि। कथा-कविता-उपन्यास आदि पढ़ब हिनक रुचिक संग आदति जकाँ बनल छनि। मैथिली, संस्कृत, हिन्दी, बंगला, अंग्रेजी आदि भाषाक साहित्यक प्रचुर अध्ययन कएने छथि, मुदा ओ अध्ययन मात्र तखनहि जखन सभ काजसँ फरागति भेटि जाइत छलनि। तँ अध्ययनक निरंतरता सदैव बाधित रहलनि आ लेखनक विषयमे ओ सोचिओ सकलीह वयसक पाँच दशक बितलाक बाद। मुदा जखन मनमे अयलनि त' ओ चुनलनि अनुवाद विधा आ शुरूह कएलनि हिन्दीक सुचर्चित, सुप्रतिष्ठित आ मानव-मनक कुशल चित्रकार शिवानीक कथादिक मैथिली अनुवाद करबाक विषयमे। श्रीमती शान्ता झाक ई पोथी पढ़ि हम कहि सकैत छी जे शिवानीक भाषा,भाव आ अभिव्यक्तिसँ तालमेल करैत ई अनुवाद अहाकँ कत्तहु जर्क नहि देत। ओएह सहजता, अभिव्यक्तिक सहज शैली आ प्रवाहात्मकताक रक्षा करैत 'पहाड़क गाथा' नामक ई पोथी कुमाउनी भावभूमिके मैथिल टेस्ट दैत न्याय करैत देखाइत अछि।

-आभा झा

ISBN 978-81-990217-4-7

मैत्रेयी प्रकाशन
बी-2187, गली नं . 45, कौशिक एन्क्लेव
बुराड़ी, दिल्ली-110084
ई-मेल : maitreyipublication@gmail.com

9 788199 021747

मूल्य : ₹ 300/-

पहाड़क गाथा

शान्ता झा

पहाड़क गाथा

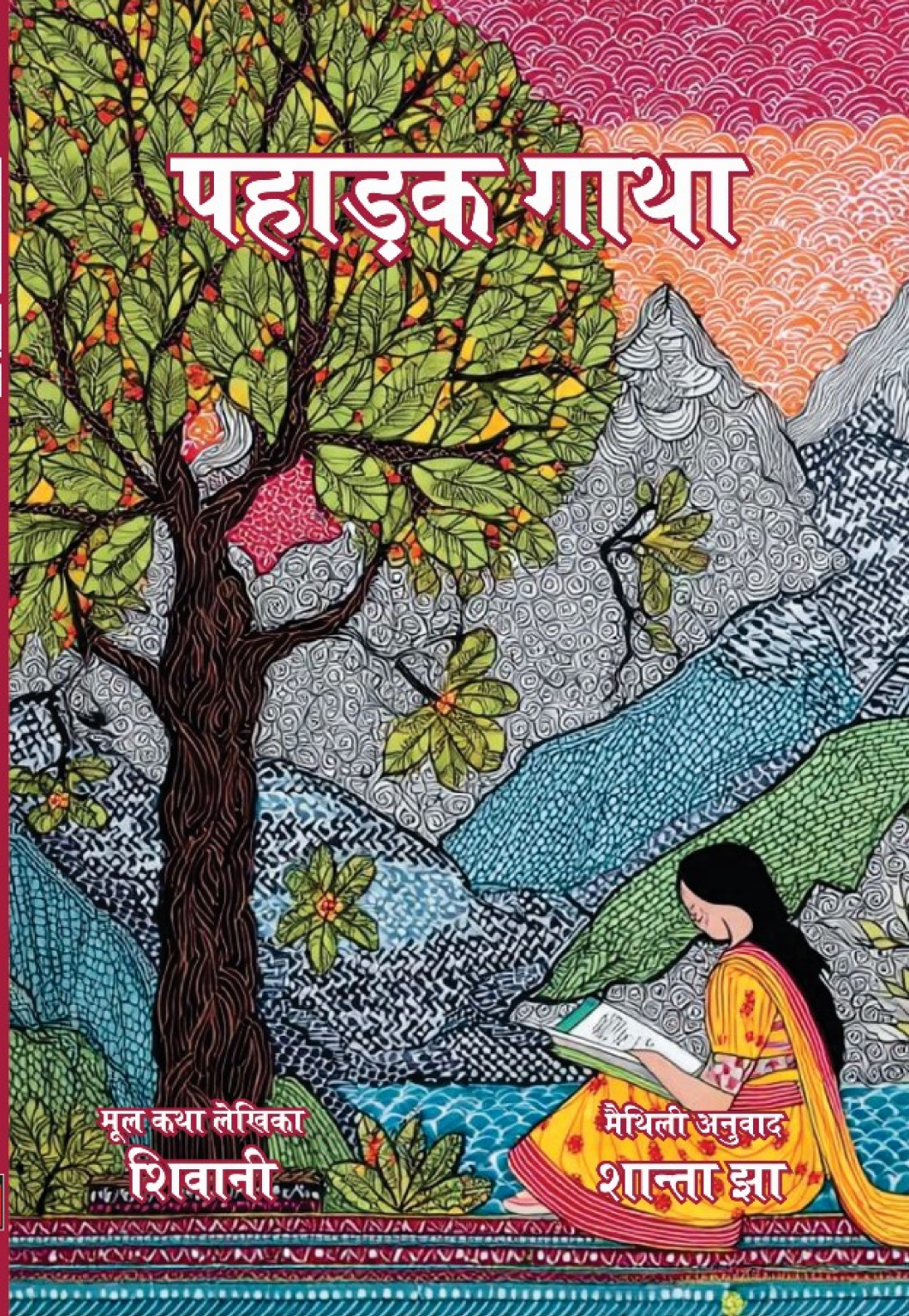

मूल कथा लेखिका
शिवानी

मैथिली अनुवाद
शान्ता झा

पहाड़क गाथा

पहाड़क गाथा

मूल कथा लेखिका
शिवानी

अनुवादिका
श्रीमती शान्ता झा

मैत्रेयी प्रकाशन, दिल्ली

पहाड़क गाथा

मूल कथा लेखिका : **शिवानी**

अनुवादिका : **श्रीमती शान्ता झा**
557, अरुण विहार, 29 नोएडा
सम्पर्क : 9608447601
ईमेल : shantabhushan@gmail.com

ISBN : **978-81-990217-4-7**

प्रकाशक : **मैत्रेयी प्रकाशन, दिल्ली**
बी-2187, गली नं. 45, कौशिक एन्क्लेव
बुराड़ी, दिल्ली-110084
संपर्क: 9431693352
ईमेल: maitreyipublication@gmail.com

© : **शान्ता झा**

प्रथम संस्करण : **2025**
मूल्य : **₹ 300**

कला संपादन : **मणिशंकर कुमार**
संपर्क : 9312766899
ईमेल : kmanishankar@gmail.com

मुद्रक : **आर.के. ऑफसेट प्रोसेस**
नवीन शाहदरा, दिल्ली-32

Pahadak Gatha by Smt. Shanta Jha
First Edition : 2025, Price : ₹ 300

पूजनीया माँक हाथमे ओ दिवंगत पूज्य बाबूजीक स्मृतिकेँ समर्पित अछि हमर ई पहिल पोथी, जनिक समदृष्टि, स्नेह आ विश्वासक संबल, शिक्षाक इजोत ओ संस्कारक थातीक बले पर आइ हम पठनक संग संग लेखनक दिशामे पहिल डेग उठयबाक साहस क' सकलहुँ।

– शान्ता झा

अनुक्रम

- हमर मोनक गप 7
- भाषिक विस्तृतिक बाट पर पहाड़क गाथा 9
- माई 12
- दण्ड 26
- सपना आ सत्य 42
- कालू 47
- गलती 54
- मँझिला भैया 63
- मामाजी 71
- लाटी 82
- रतिविलाप 92
- गाढ़ निन्न 122
- लाल हवेली 132
- भिक्षुणी 140
- बौका 150
- मित्र 159
- प्रतिशोध 164

हमर मोनक गप

ई हमर सौभाग्य छल जे जाहि समयमे स्त्री- शिक्षाक प्रति समाजमे बहुत उत्साह नहि छलै, तखन हमर माता-पिता हमरा सभ भाइ बहिनक लेल शिक्षाग्रहण करबाक प्रचुर अवसर आ प्रेरणा दैत रहलाह। तकरे परिणाम रहल जे हम सभ छओ भाइ- बहिन न्यूनतम स्नातकोत्तर परीक्षा त' उत्तीर्ण कएबे कएलहुँ। इंटरमीडिएटमे पढ़िते छलहुँ कि विवाह भए गेल, मुदा अपन इच्छाशक्तिक संग पिताक यथाशक्ति सहयोग आ पति आ सासुरक उच्च शिक्षामे बाधा नहि देबाक प्रवृत्तिक फलस्वरूप शिक्षाक क्रम जारी रहल। हँ, मुदा ओतबहि धरि! गृहस्थीक नानाविध व्यस्तता कखनो ई पलखति नहि द' सकल जे नोकरीक विषयमे सोचबो करितहुँ। तथापि बचपनेसँ भेटल साहित्यिक परिवेशमे कथा, उपन्यासादिक प्रति लगाव थातीमे भेटल अछि। बहुत लेखक-लेखिकाक किताब पढ़लहुँ, एखनहुँ पढ़बाक इच्छा होइत अछि आ समय निकालि पढ़ैतो छी। मुदा मात्र पढ़बे कयलहुँ, स्वयम् किछु नहि लिखि सकलहुँ। 'हाउस वाइफ' छी आ ओ त 'बिजी फार नथिंग' रहिते छथि। अहिना समय बितैत रहल, मुदा किछु नहि क' सकबाक कचोट त' मोनक कोनमे रहिते छल।

कोरोना कालमे एक दिन सोचलहुँ जे मौलिक लिखब पार लागत वा नहि, जानि नहि, अनुवादे करबाक प्रयास कियैक नहि करी! भाषाक भंडार समृद्ध बनयबामे अनुवादोक महत्त्व त' छैहे-ओ दोसर भाषाक साहित्यसँ परिचित करबैत छै, ओकर सरसतासँ सन्तृप्त आ अन्यान्य भाषाक स्वाद आ सुगन्धिसँ अलौकिक आनन्द दैत छैक।

बहुत भाषा पर अपन अधिकार रखनिहारि, विशाल पाठकवर्गक प्रिय लेखिका शिवानीक कथाक अनुवाद करबाक योग्यता हमरामे अछि की

नहि, ई हमरा ज्ञात नहि, तथापि हुनकहि रचना अनुवाद लेल चुनबाक कारण अछि जे हुनकर कथा सभ हमर मोनक बहुत लगीच अछि। हुनकर कथाक सहज प्रवाह, गतिमयता आ मनोवैज्ञानिक उपस्थापन हमरा बहुत आकर्षित करैत अछि। बेर-बेर पढ़लाक बादो नवताक अनुभूति होइत अछि। भ' सकैछ हमरहु समानधर्मी केओ हेतै, जकरा ई कथा सभ नीक लगतै, तेँ एक गोट छोट प्रयास मैथिलीमे अनुवादक!

डॉ. आभा झा डेग-डेग पर हमर उत्साहवर्धन करैत रहली आ जरूरति पड़ला पर मदति लेल सेहो तैयार छली, तेँ हुनका हृदयसँ आशीष दैत छियनि।

मात्र माता-पिता अपन संततिक दिग्दर्शक नहि होइ छैक, कौखन धिया-पुता सेहो अपनाकेँ चिन्हबाक, अपन सूतल रुचि-प्रवृत्ति जगैबाक आ अपना लेल जीबाक प्रेरणा दैत छैक। एहि क्रममे पुत्र पीयूष, पुत्री पल्लवी आ पुतहु तूलिकाक नाम लेब आ हुनकर योगदान एक्नोलेज करब अत्यंत महत्त्वपूर्ण अछि। अपन तीनू संतानक प्रोत्साहन, लैपटॉपक दुनियासँ परिचय करायब, टाइप करब सिखायब आदि हमर आत्मविश्वास बढ़ौलक आ तकरे परिणाम अछि जे हम एहि वयसमे लेखनक दिशामे अपन पहिलुक डेग बढ़ा सकलहुँ।

एहि किताबक 'कवर पेज' केँ तूलिका डिजाइन कयलनि अछि, सेहो हमरा लेल विशेष अछि। पौत्री धृति आ त्विषा सेहो अपन बाल-सुलभ चंचलतासँ मोहि हमर सकारात्मकता बनौने- बचौने छथि। हिनका सभक प्रति 'आभार' शब्दक आवश्यकता नहि बस आशीर्वचनेटा देय अछि। पति डॉ. भुवन भूषण लेल अवश्य आभार बनैत छनि, जे किताब छपयबा लेल सहर्ष स्वीकृति देलनि। संगहि अपन सभ आत्मीयक प्रति आभार व्यक्त करैत छी जे कोनो न कोनो रूपमे हमर सहायक रहल छथि।

एखन एतबहि!

– शान्ता झा

भाषिक विस्तृतिक बाट पर पहाड़क गाथा

अनुवाद विविध भाषाक साहित्यसँ परिचित होयबाक, ओकरा संग तादात्म्य स्थापित करबाक आ भाषिक समरसता दिसि डेग बढ़यबाक एकटा सेतु थिक। एहिसँ मनुक्ख अपन ज्ञान-वैभव त' समृद्ध करिते अछि, संगे संग क्षेत्रीयतावादक संकुचित परिधिसँ बाहर निकसि मानवीय एकताक केन्द्र-बिन्दु धरि पहुँचि सकैत अछि। अनुवादक माध्यमसँ विभिन्न वैचारिक धरातलक परिचय आ विभिन्न सामाजिक एवं सांस्कृतिक क्षेत्रक ज्ञान सहज रूपमे भए जाइत छैक। अनुवाद तुलनात्मक साहित्यक अध्ययनमे सहायता सेहो करैछ, जेना देश, काल आ समयक भिन्नताक बादो विभिन्न भाषाक साहित्यमे साम्य कोना अछि आ वैषम्य अछि त' किऐक?

हम सभ जनैत छी जे संसारक विभिन्न भाषामे लिखल गेल साहित्यमे ज्ञानक विपुल भण्डार अछि, जकर अध्ययनसँ अपन मानस प्रदीप्त, ज्ञान समृद्ध, अनुभव प्रगाढ़ तथा संबंध विस्तृत कएल जा सकैछ। जहिना हम सभ शेक्सपियर, लॉरेंस, मोपासाँ, सार्त्र, इलियट, वर्ड्सवर्थ आदि चिन्तकक रचनासँ साक्षात्कार कए आनन्दक अनुभव करैत छी, तहिना कालिदास, रवीन्द्रनाथ, प्रेमचन्द, निराला, दिनकर, राजकमल आदिक रचना-संसारसँ विश्व प्रभावित भेल अछि। गेटे त' कालिदासक रचनामे यौवनक फूल आ परिणत वयसक फलक संगम देखि अभिभूत होइत रहलाह। गुरुदेव रवीन्द्रनाथ टैगोर कालिदासक शकुन्तला आ टेम्पेस्टक मिराण्डाक चरित्रक तुलनात्मक अध्ययन करैत दुहूक व्यक्तित्वक भिन्नताक कारण-अन्वेषण सेहो करैत छथि।

त' हमर कहब एतबहि जे कोनो भाषाक भंडारकेँ समृद्ध बनयबामे अनुवादक महत्त्वपूर्ण योगदान होइत छैक। एखन जाहि अंग्रेजी भाषाकेँ

विश्व भाषाक दर्जा देल गेल छै, ओहिमे प्राय:संसारक समस्त भाषाक उत्तम साहित्य अनुवादक माध्यमे आबि गेल छै। मैथिली भाषामे सेहो एकर खगता छै। एहि भाषाक श्रीवृद्धि लेल किछु विविध भाषाविद् मौलिक रचनाक संग संग संसारक आन-आन भाषाक उत्तम साहित्यक अनुवाद कय मैथिलीक भंडारकेँ समृद्धतर करबाक दिशामे प्रयत्नशील छथि। अनुवादक ई गप नीक जकाँ बुझैत छथि जे जीवन्त अनुवाद लेल तत्तद् भाषाक साहित्यक अध्ययन, ओहिसँ आत्मीयता- स्थापन आ ओहि भाषाविशेषक प्रकृतिकेँ गहनतापूर्वक बुझबाक आवश्यकता छै।

अनुवादक मादेँ एतेक गप करबाक उद्देश्य मात्र एतबहि जे आइ हमर हाथमे अछि श्रीमती शान्ता झाक अनुवादक पोथी 'पहाड़क गाथा'। ई हिन्दीक सुचर्चित, सुप्रतिष्ठित आ मानव-मनक कुशल चित्रकार शिवानीक पन्द्रह गोट कथाक मैथिली अनुवाद थिक। पोथीक शीर्षक कोनो कथाक शीर्षक नहि अछि, ई अछि अनुवादिकाक दृष्टि। जे कि कथा सभमे लेखिकाक चिंतन आ अभिव्यक्तिमे सर्वत्र पहाड़ अछि, ओतुका संस्कृति अछि, लेखिकाक रक्तमज्जामे बसल ओहि ठामक संस्कार अछि जे ने बंगालक शैक्षिक प्रतिष्ठानमे पढ़लासँ बदलैत अछि आ ने कलकत्ता वा गुजरातमे व्यवसाय केलासँ। तेँ अनुवादिकाक दृष्टिमे शिवानीक कथाक अनुवादोमे पहाड़ अवश्य रहबाक चाही।

हिन्दी, संस्कृत, बंगला, गुजराती, उर्दू आ अंग्रेजी पर मजगूत पकड़ रखनिहार लेखिका शिवानीक कथा आ उपन्यासमे कुमाउनी संस्कृति पदे पदे देखाइत अछि। हुनकर लेखन साठि आ सत्तरक दशकमे जतेक पसिन्न कएल जाइत छल, आइयो ओही सम्मोहनक संग पाठककेँ बन्हबाक क्षमता रखैछ। शिवानीक स्त्री परिस्थितिक तूफानसँ संघर्ष करैत अछि, कौखन डूमि जाइत अछि आ कौखन निकलि अबैत छै ओकर मजगूत स्वतंत्र व्यक्तित्व जे सामाजिक परम्पराक शल्यचिकित्सा करैत एकटा आदर्श सोझाँ रखैत अछि। रतिविलापक अनसूया अपन मामाक द्वारा लूटल आ विक्षिप्त व्यक्तिसँ विवाह करा क' बर्बाद कएल जाइत अछि, मुदा अपन संपूर्ण पीड़ाक संग ओ

जिबिते नहि अछि, मानवीय मूल्यक निदर्शन सेहो ठाढ़ करैत अछि।

कथाक यैह प्रवाहात्मकता संभवतः श्रीमती शान्ता झाकेँ एकर मैथिली अनुवाद लेल प्रेरित कएलकनि। कथा प्रस्तुतिक एकटा इहो ढंग थिकै, पाठकमनमे जिज्ञासा उत्पन्न करबाक इहो कला थिकै, सर्वत्र फैन्टेसी नहि, समाजक यथार्थो कथा वस्तु बनि सकैछ, मुदा ओकर ट्रीटमेंट ओहि स्तर पर होयबाक चाही जे पाठक पात्रक पीड़ासँ 'आह' आ ओकर सफलता पर 'वाह' कहबा लेल बाध्य भ' जाइ।

संस्कृत साहित्यक छात्रा श्रीमती शान्ता झाक ई पहिल पोथी थिकनि। एकटा प्रश्न सहजहिँ पाठकक मनमे आबि सकैछ जे पहिल पोथी एतेक विलंबसँ किऐक?एहि प्रश्नक उत्तर अवश्य भेटबाक चाही-जहिना कोनो नोकरिहारा आदमी सेवानिवृत्तिक बाद अपन मनक काज दिसि ध्यान लगबैत अछि, तहिना एकटा महिला अपन परिवार सम्हारैत, सासु-ससुरक सेवा-शुश्रूषा करैत, पतिक मनोभूमिक ध्यान रखैत, धियापुताक पालन-पोषण, शिक्षण आ विवाहादि दायित्व पूरा केलाक बाद कनेक पलखतिमे अबैत अछि आ तखन ओकर मनक एकान्त कोनमे नुकायल, चिर उपेक्षित रुचि- प्रवृत्ति करौट लैत छै, घरक साफ सफाई करैत बाल्यकालक जीर्ण-शीर्ण डायरी ओकरा प्रेरित करैत कहैछ, आबहु जंग छोड़ा, नहि त' हमरा संगहि तोहर प्रतिभा समाप्त भए जेतौ आ ओ चिहुंकि उठैत अछि, ओकर भक्क टूटि जाइछ आ ओ मजगूतीसँ पकड़ि लैत अछि अपन रुचिक बाट!

श्रीमती शान्ता झाक ई पोथी पढ़ि हम कहि सकैत छी जे शिवानीक भाषा, भाव आ अभिव्यक्तिसँ तालमेल करैत ई अनुवाद अहाँकेँ कत्तहु जर्क नहि देत। ओएह सहजता, अभिव्यक्तिक सहज शैली आ प्रवाहात्मकताक रक्षा करैत 'पहाड़क गाथा' नामक ई पोथी कुमाउनी भावभूमिकेँ मैथिल टेस्ट दैत न्याय करैत देखाइत अछि।

अनुवादिकाकेँ अजस्र शुभकामना आ शीघ्रहि दोसर मौलिक पोथीक प्रतीक्षा।

– आभा झा

माई

हम हुनका कहिओ माइ नहि कहलियनि। हमरा लेल त ओ अन्त धरि रुक्की मौसिये बनल रहली। ओ छलीह त' हमर मायक दूरक ममियौत बहिन!

हमर मायक नैहर उप्राड़ामे छलनि। उप्राड़ाक पन्त ताहि समय अपन दू टा विशिष्टता लेल प्रसिद्ध छलाह। एक त' तलवारक धार-सन उद्धत नाक, दोसर हुनकर तामस। 'ताहि समय' शब्दक उपयोग एहि लेल क' रहल छी किएक आब त' कुमाउँक पूरा भूगोले बदलि गेल छै। हृदयहीन बनि गाछ काटब जतय कुमाउँक रत्नगर्भा वन- सम्पत्तिक खजानाकेँ खाली क' देने छै, तत्तहि विभिन्न प्रदेशक संस्कृति आ अंतर्जातीय विवाह कुमाउँक सुन्दर नस्लेकेँ एकदम्मे बदलि देने छै। रुक्की मौसीक पिता दरोगा छलाह, ओहि पर उप्राड़ा केर पंत, जेना नीम परहक गुड़ीच। ताहि दिनक थानेदारी, आजुक मंत्रीपदसँ कम नहि होइत छलै-झमटगर लाल रेशमी पगड़ी, जकर झब्बा गरदनि इम्हर-उम्हर हिलेला पर नचैत मोरक पाँखिए जकाँ पसरि जाय, ठसकदार वर्दी पर चमकैत पित्तरक बटन, जकरा रुक्की मौसी, पहाड़ी नेबोसँ रगड़ि-रगड़ि क' चमकबैत रहैत छलखिन। जाँतक पाट सन चाकर छातीक आधा अंश घेरने कारतूसक पेटी, हाथमे साँपिनक चिरायल जीह सन लपलप करइत हंटर। थानासँ ओ घर आबथि त' मौसी डरे थर-थर करय लागथि।

ओएह रुक्की मौसी जखन पतिसँ ठोकरायल गेली आ सभ दिनक लेल पिताक आश्रिता बनि सिसकैत दुआरि पर आबि ठाढ़ भेली, तहिया हुनकर वयस छलनि मात्र चौदह बरख। अभागिनी मौसीक एकमात्र अपराध छलनि हुनकर श्याम रंग। ओ कारी नहि छली, गहूम सनक रंग छलनि, मुदा

गोर त’ नहिए छली। कने काल लेल कुमाऊँमे कन्याक अंगदोषकेँ सेहो अनठाओल जा सकैछ मुदा श्याम रंगकेँ कहिओ मान्यता नहि भेटैत छै। परित्यक्ता भेलाक बादो मौसीक श्याम चेहरा उज्ज्वल हँसीसँ दमकैत रहैत छलनि।

ताहि दिन गोरखाक कनियाँ सँ सीखि क’ रंग-बिरंगा डिजाइन बला मोजा पहाड़ी घरोमे बिनाय लागल छल। हमरा मोन भेल जे हमहूँ अपन फुटबॉलक खेलाड़ी भाय लेल एक जोड़ बनाबी। रुक्की मौसी एहि कलामे विशेष दक्षता पओने छथि। हम हुनका कहलियनि-"ये रुक्की मौसी, अहाँ त’ एतेक सुन्दर मोजा बुनै छी, लाल-पीयर-खाकी ऊन त’ हमरा लग अछि-थोड़े कारी ऊन द सकब?"

गंभीर होइत मौसी बजली, "दिन भरि संतोष क’ ले, राति क’ बाबूजी सुतथिन त’ हुनकर दुनू दिसक मोंछ थोड़े-थोड़े कतरि क’ राखि लेबनि त’ काटला पर डेढ़ औंस बढ़िया पशमीना कारी ऊन निकलि एतै, पकिया रंगक गारंटी सेहो!"

श्याम रंग होइतो, मौसीक देहक गठनि अनुपम छलनि। हम हुनका कहिओ ओ सब आन्तरिक वस्त्र पहिरैत नहि देखलियनि, जकर वैशाखी पकड़ि, नारी अपन यौवनकेँ आकर्षक बना लैत छथि। भरि बाँहिक एकदम ढीला कुर्ती, कारी कोर वाला प्लेन साड़ी, मुदा मौसीक छन्दमय चालिमे एहन मोहिनी छलनि कि हुनका संग मेलामे जाइ त’ देखियै जे हुनका दूरे सं देखि आवारा सभ सीटी बजबय लागय मुदा लगीच अबिते हुनकर निचला ठोरक मोहक भंगिमा, महिमामय मुँहक रेखा, आँखिक निर्भीक दृष्टि, चिबुकक दृढ़ता, भृकुटिक खिंचाव देखिते सीटी बजौनिहारक धृष्ट सीटी कण्ठेमे घुटकि जाइ। ओहि निर्दोष चेहराक गढ़निमे नहि जानि की छलै कि लगै जेना पुरान मन्दिरक गर्भगृहमे कोनो देवमूर्ति मानवताक उच्चतम शिखरसँ अपन मुग्ध भक्तकेँ देखि रहल छथि। मौसीक एहन अद्भुत व्यक्तित्व छलनि जे लगै जेना कोनो प्रसिद्ध चित्रकार अपन कृतिमे मानव-अस्तित्वक समस्त विडम्बना, हर्ष, विषाद आ रहस्यक संगहि प्रस्तुति क’

रहल छथि। मौसी स्त्रिये नहि, स्त्रीत्वक अनुपम नमूना छली।

मौसीक लेल होलीमे विशेष कड़ा नियम छलनि। हुनकर पिता भोरेसँ बेटीक गेट पर बड़का ताला लगा दैत छलखिन। असमयक स्त्री-वियोग पिताकेँ बहुत शक्की बना देने छलनि।

'एहि स नीक त' बाबू दोसर विवाहे क' लितथि। कहू त'-ई नै कर, ओ नै कर, जोरसँ नै हँस, होलीमे बाहर नै निकल। आब सालो भरिक पाबनिमे एहि जरल कपार पर रंग-अबीरक ठोप नहि लागत त' कहिआ लागत?"- कननमुँह भ' क' ओ बाजथि।

मुदा नियम त' नियम छलै। भरि थारी पिरुकिया, ठंढई केर छलकैत गिलास सजा क' मौसिये बाहर पठबथिन आ केबाड़क फाँकसँ देखैत रहैत छलखिन। नहि जानि कतेक दूरक सम्बन्धक रसिक देओर, बहिनोइ सब ओही केबाड़क फाँक दिस नजरि देने, लम्बा साँस भरैत थानेदारेकेँ अबीर लगा आपस भ' जाइथ। मौसीक वैधव्यक करुण इतिहास ककरोसँ नुकायल नहि छलै। बेटीक लेल थानेदार अपने जातिमे लम्बा कड़ियल जवान, देखि-सुनि क' छँटने छला, मुदा ओ ई नहि देखि सकला कि चाननक ओहि गाछकेँ अदृश्य घुन भीतरे-भीतर चाटि क' खाली क' देने छै, हाथ लगिते ओ ढहि जेतै। विवाहक पचीसमे दिन रुक्की मौसी मात्र पहिरल कपड़ाक संग पिताक दुआरि पर सिसकैत ठाढ़ छली।

कनेक काल दरोगा अवाके ठाढ़ रहि गेला-ई की? एस्कर खाली हाथ कोना नैहर पठा देलखिन!

'की बात रुक्की', बहुत दुलारसँ ओ पुछलखिन। पिताक एहन दुलारक अभ्यास रुक्कीकेँ नहि छलन्हि, आइ धरि पिता की बिनु गारिक हुनकासँ किछु पुछने छलखिन्ह?

ओ जोरसँ कानय लगली ", बाबू हम आब कहिओ ओहि ठाम नहि जायब, देखियौ हमर पीठ "-ई कहि ओ अपन चिक्कन पीठ पिताक सोझाँ उघारि क ठाढ़ भ' गेली। लगैत छलै, जेना कसाइ हंटरसँ रुक्कीक पीठक चाम उखेहि देने हो।

एक क्षणक लेल दरोगा पाथरक मुरुत बनि गेला-अपना जीवनमे ओहो त’ नहि जानि कतेक अपराधीक पीठकेँ अहिना हंटरसँ छीलि क’ राखि देने छलखिन, की आइ ओकरे दण्ड हुनकर बिनु मायक निरीह बेटीक पीठ पर भगवान लिखि देलखिन? धीरे-धीरे ओ अपन पिताकेँ एक-एक गप कहि देलखिन। हुनकर शराबी, व्यभिचारी पतिक एक नहि कइएक टा ने रक्षिता छलनि, नवकनियाँक सभ गहना ओ अपन ओही गोपिका सभमे बाँटि आयल छल। क्रोधसँ दाँत पीसैत दरोगा भयानक हुँकारी भरलनि। लगलै जेना पूरा देहक रक्त हुनका आँखिमे उतरि आयल होनि। बेटी, तों भीतरसँ केबाड़ बन्न क’ ले, हम आबि रहल छी।

"कतय जा रहल छी बाबू?"-चिंतासँ आतुर रुक्की मौसी मने-मन बूझि गेली जे हुनकर पिता अपन जमायसँ हिसाबे बराबर करय जा रहल छथि। पिताक तामस की हुनका नहि बूझल छलनि?

दोसर दिन भोर हयबासँ किछु पहिने ओ अयला त’ रुक्की मौसीकेँ कहलखिन, "जो बेटी, अपन मंगलसूत्र खोलि क’ बाहर पाथर पर राखि आ।"

रुक्की मौसी ओत्तहि धम्मसँ बैसि रहली, "की कहि रहल छी बाबू, की क’ आयल छी अहाँ?"

"ओएह क’ आयल छी बेटी जे करब उचित छल। जो बेटी! अपन मंगलसूत्र बाहर पाथर पर राखि आ।"

कोनो कुमाउँक सधवाक लेल एहिसँ खराब गारि आर की भ’ सकैत छल!

"तों चिन्ता नै कर बेटी! तोहर बाप कहिओ ओहन काज नहि करै छौ, पच्चीस वर्ष थानेदारी क’ चुकल छी, ओहो कुमाऊँक सभसँ बीहड़ अपराधी इलाका कत्यूरमे। काल्हि सुनि लिहेँ, थानेदारक जमाय दुर्गिया कुमाऊँ मोटर यूनियनक बससँ पिचा गेलखिन, माथ अलग, देह अलग। नीक भेलै जे सार शराबक निशाँमे चूर छल। जाँच हेतै त’ ओएह दोषी सिद्ध हेतै। ड्राइवर बेदाग छूटि जेतै। ओहुना हम ओकर बाल-बच्चाक पूरा

इन्तजाम क’ देने छियै।"

"छी-छी-अहाँ ई की केलहुँ बाबू? अपने बेटीकेँ विधवा बना देलियै!"ओ चिकरि उठली।

"एहन सधवासँ विधवा नीक, तोरा कथीक चिन्ता छौ बेटी, तोहर बाप एखन जिबैत छौ।"

भोर होइते खबर सुनिते पूरा गाम उनटि आयल छल, हे राम, बेचारी कोन सुख देखलक! नेन्ने छल त’ माय मरि गेलखिन, विवाह होइते पति। सात घर दुश्मनोकेँ एहन दिन भगवान नहि देखबथुन। ठाकुरक बेटी रहितै त’ दोसर विवाहो भ’ सकैत छलै मुदा अभगली अछि त’ ब्राह्मणक बेटी।"असमयक वैधव्य मौसीक चेहराकेँ आर कमनीय बना देने छलनि।

पिताक घरमे आब हुनका पर कोनो रोक-टोक नहि छलनि। जतय मोन हो घुमि आउ, जे पहिरबाक मोन हो से पहिरू, मुदा स्वेच्छेसँ मौसी वैधव्यक एहन कठोर व्रत लेलनि जे गामक वरिष्ठ विधवा लोकनि सेहो देखिते रहि गेली। ने ओ कतौ जाथि आ ने संगिये सभ संग बैसथि। पहिने किनारी बला रंगीन साड़ीसँ हुनकर पेटी भरल छलनि, सभ साड़ी लोक सभकेँ बाँटि देलखिन। बिनु कोरक उज्जर पुरुषाही धोती, ने हाथमे सोनक चूड़ी, ने गरदनिमे सोनक चेन, जकर लॉकेटमे मीनाकारी 'ॐ' गॅथबा क’, हुनकर पिता बहुत सौखसँ कहिओ अपने पहिरा देने छलखिन। लाख कहलो उत्तर ओ फेर चप्पल नहि पहिरलनि। पहाड़क विधवा की कहिओ पएर मे किछु पहिरै छै बाबू? हुनकर निर्दोष प्रश्नक कठोर श्लेषसँ अपराधी पिताकेँ खूब चोट पहुँचल छलनि। जे मौसी पहिने पाँचे मिनटमे 'विष्णु-विष्णु 'कहि बहुत अधैर्यसँ पूजा-पाठसँ निवृत्त भ’ जाइत छली, से आब घण्टो पूजा करय लगलीह। स्वर त’ मधुर छलनिहे, संस्कृतक उच्चारण सेहो त्रुटिहीन छलनि। हम एक दिन भेंट करय गेलियनि त देखलहुँ, तुरत नहायल मौसीक पीठ पर घनगर केश पसरल छलनि, आँखि मूनि, विष्णु सहस्र नामक पाठ क’ रहल छथि-

"रामो विरामो विरजो मार्गो नेयो नयोनयः वीरः शक्तिमतां श्रेष्ठो धर्मी

धर्मविदुत्तमः "

चुपचाप हम हुनका देखैत रहलियनि। पछिला होलीक एखन साते मास त' भेल छलै, हम भेंट करै गेल छलहुँ त' ओ रोटी बना रहल छली। ओ बहुत उत्साहसँ पुछलनि 'काल्हि किएक नहि अयलह'? हम त' खैर सब वर्ष जकाँ अहू बेर कोठरीमे बन्न छलहुँ, मुदा होली गाबै लेल बागेश्वरवाला बहिनोइकेँ बाबू बजबौने छलखिन।

"आहा! की कंठस्वर छनि हुनकर! एहन बढ़िया होली गयलनि कि बस! तों सुनबह? आ चुट्टासँ समक आह्वान करैत ओ स्वयं गुनगुनाय लागल छली-

"जाय पड़ूँ पी के अंक

चाहे कलंक लगे री "–

फेर कुटिल कनखीसँ हमरा बेधि ओ बजली, "पिये नहि रहला त ककरा अंकमे जा क' खसू, तोहीं कहऽ?

आइ वैह कंठस्वर कतेक बदलि गेल छनि।

रुक्की मौसीक वैधव्य-व्रतक चर्चा पूरा गाममे छलनि। की अवस्था छलनि हुनकर, मात्र पंद्रह वर्ष, मुदा की संयम छलनि, केहन अपूर्व शुचिता। प्याज, टमाटर, भाँटा, मसुरिक दालि, जे-जे चीज विधवाक लेल वर्जित छलै, दुर्भाग्यसँ ओएह सब चीज कहिओ मौसीकेँ प्रिय छलनि, मुदा की मजाल जे कोनो वर्जित चीजक ओ जीहसँ स्पर्शो करथि वा कोनो एकादशी छूटि जाइनि। हम जतेक बेर हुनका देखियनि, लगै जेना, ओ साधारण मानवीक स्तरसँ लगातार ऊपर उठैत, हमरा सभक पकड़िसँ दूर भेल जा रहल छथि। की वैधव्योमे स्त्रिगणक रूप निखरै छै, मन निर्मल होइ छै आ कि विशुद्ध पतिविरहित चित्तक निष्काम भावना एकताक खोज करैत फिरै छै? गाममे ककरो मोन खराप भ' जाय, चाहे ओ शूद्र हो वा चांडाल, ओकर सेवामे मौसी दिन-राति एक क' देथि। लगै जेना काम, क्रोध, मद, लोभ सन चोर सेहो मौसीक पाछाँ-पाछाँ पोसुआ कुकुर बनल सदिखन नांगरि डोला रहल अछि। हमरा विश्वास भ' गेल जे मनुक्खमे

कोनो एहन इच्छाशक्ति अवश्य होइ छै जे दारुण आघात पाबि ओकरा जितेन्द्रिय बनबाक प्रेरणे टा नहि दैत छै ओकरा जितेन्द्रिय बना सेहो दै छै। जाहि सहजतासँ ओहि बालिकाक वैधव्य ओकरा विवेकशील प्रौढ़ा बना देने छलै, से देखि हम अवाक् रहि गेलहुँ। जीवनक सोलह वसन्त बीतैत-बीतैत जेना ओ बीत भरिक छौंड़ी जीवनक महान सत्य सँ परिचित भ' चुकल छल कि मनुष्य भोगसँ शाश्वत सुख नहि पाबि सकैत अछि, त्यागमे सेहो ओकरा चिरन्तन सुख भेटि सकै छै। हमरा मुदा मौसीक भविष्यक प्रति एकटा आशंका रहि रहि क' विचलित करैत रहैत छल। जे वास्तविकता छै तकरा एहन दृढ़ इच्छाशक्ति सँ दबेनाइ की मौसीक अभिनय छनि? वास्तवमे जँ ई सब मात्र अभिनये छै, मात्र समाजकेँ भ्रमित करबाक चेष्टे टा छै त' ई वास्तविकता कहिओ नग्न रूप लय कुत्सित त' नहि भ' उठतै? बन्हल-बन्हायल आचार-विचारक भाफ जखन तीव्र भए भटकय लगतै त' की मौसीक हृदय पर राखल संयमक ढाकन हिलि-हिलि क' खसबा लेल तत्पर नहि हेतै? जँ मौसी बाहरी संसार आ अपन अंतःकरणकेँ एक सूत्रमे नहि बान्हि पौती त' तमोगुणक भयंकर धुआँमे घुटि क' मरि नहि जेती? अनकर दुःखसँ दुखी होयब, अपार करुणा, कठोर आत्मदमन अन्तमे स्वयं हुनके त' नहि खंडित क' देतनि? सोलह वर्षक अवस्थो कोनो अवस्था होइ छै? ओहि काँच वयसमे एहन वैराग्य? अंत तक ओ निमाहि सकती?

फेर कतेक वर्षक एहन अंतराल एलै, जकर गह्वरमे मौसीक पूरा अतीत बहि गेलनि। सोलहे वर्षमे मौसी चारु धाम क' आयल छलीह, तैयो मोन नहि भरलनि। पूर्णकुम्भक पुण्य लुटबा लेल गामक भीड़ गेलै त' ओहो जिद कय हुनका सभक संग विदा भेली। निश्चय केलनि जे ओतय मास करब! मुदा ओहि वर्ष मेलाक जनमारा भीड़क रेलामे कुमाउँक कतेक धर्मभीरु गाम सभ बिला गेलै आ लाख तकलो उत्तर लाशक ढेरीमे मौसीक देह नहि भेटलनि।

मृत्यु त' जीवनक अपरिहार्य अंग छै। जे दरोगाजी नोचाएल, थकुचल, पानिमे हेलैत असंख्य लाशक पंचनामाक साक्षी छला, ओएह अपन

दुखिनी बेटीक अस्वाभाविक अकालमृत्युक चोट नहि सहि सकला। एक दिन हृदयक एहन भयानक आघात भेलनि जे ककरोसँ एको बुन्न पानिओ नहि मांगि सकलाह।

गामक लेल मरि चुकल रुक्की मौसी, तीन वर्षक बाद अचानक एक दिन स्वयं प्रकट भेली। पहिने लोक सब नहि चिन्हलकनि। हरदम जागेश्वर-बागेश्वरसँ आयल भैरवी सभ धूनी रमौने रहैत छली, इहो होयती केओ!? एक दिन मुदा हुनकर बागेश्वरबला बहिनोइ चीन्हि गेलखिन, चिन्हितथिन कोना नहि? केबाड़क फाँकसँ कहिओ जकर ठाढ़ नाक, अधखुजल गेटेसँ हाथ बढ़ा क' देल गेल चाहक गिलास परहक़ आँगुर, कटगर आँखि, छलकि रहल दमित उल्लासक सुस्पष्ट रेखा, सभ किछु त' हुनकर मोनक कैमरा उतारि क' अपन लेंस मे अमिट बना क' राखि नेने छलनि। एक बेर त' ओ रुक्की मौसीक उग्र पितासँ हुनका अपन बना लेबाक दुःसाहसी प्रस्ताव करबाक धृष्टता सेहो केने छलाह।

तामससँ बताह भेल रुक्की मौसीक पिता कहलखिन-"सुनै छी जमाय बाबू, पहाड़क ब्राह्मण एक्कहि बेर कन्यादान करैत अछि, खबरदार जँ एहन पापक गप कहिओ मुँहोमे अनलहुँ?"

बेचारा नुकाइये-चोरा क' अपन सुन्नरि साइरक छवि निहारि अपन अतृप्त क्षुधा शान्त क' लैत छला। कखनो नदी-घाट पर नहाइत, कखनो छत पर अदौरी-दनौरी पारैत रुक्की मौसीक एक-एक नैन-नक्श हुनका कण्ठस्थ भ' गेल छलनि। मुदा आइ त' हुनकर पहिरन ओढ़न सभ विचित्रे छलनि-गेरू रंगक विचित्र मेखला, माथ पर जटाजूट, ताहि पर कुटिल साँपिन सन लेपटायल रुद्राक्षक माला, कण्ठमे रंग-बिरंगक मूँगा, तुलसीक अनेक माला आ कान फाड़ि क' लटकल भैंसाक सिंघक कुण्डल! पहिने 'अलख माइ भीख दियऽ' कहि परिचित गृहस्थक दुआरि पर ठाढ़ भेल छलीह, मुदा केओ चीन्हि नहि सकलनि। देह पहिनेसँ कनि भरि गेल छलनि। ओ अपूर्व यौवन जे पहिने नब पकड़ल कोबरा जकाँ देखय बलाकेँ फन उठाय कटबा लेल दौड़ैत छलै आब भाग्यविधाता कोनो दक्ष सँपेराक

कौशलसँ, कुण्डलीमे लपेटि, फेर जेना गेरुआ मेखलाक टोकरीमे बन्न क’ देने छलखिन।

ओहि आकारविहीन ढील लबादामे एक्के नहि, पाँच टा रुक्की मौसी सन्हिया सकैत छली। मनोहर उठान नहि जानि कोन जादूसँ सपाट भए कतौ हेरा गेल छलनि। ललाट पर भष्मक लेप, तकरे बीच साँपक उद्धत फन सन बनल त्रिपुण्ड, आँखि आर तरल भए कान धरि पसरि गेल छलनि। 'जय बाबा गोरखनाथ 'कहि मौसी बीच-बीचमे क्रुद्ध नागिन जकाँ फुफकार छोड़थि, जे एक टा पातर सीटीक आवाज जकाँ बिला जाय, कौखन अकारण झूमय लागथि, ओझरायल जटाजूट कन्हा पर पसरि जानि, स्तब्ध भीड़ सहमि क’ फुसफुसाय लागय, सुनबामे आयल, भीड़ जखन पीचि देलकनि त’ कानफाटल जोगीक टोली हिनका कन्हा पर लादि अपना अखाड़ामे उठा क’ ल’ गेलनि। ओत्तहि गुरु महाराज दीक्षा देलखिन। ओत्तहि सँ सिद्धि पाबि देवी बनि हमरा सभक लेल आयल छथि। देखै नहि छी, साक्षात अम्बिका माइ पर उतरल छथिन-जै माइ, जै जगदम्बा, जै माता।"

ताहि दिनसँ रुक्की मौसी सिद्धि माय बनि गेली। लोक सभ बहुत बुझौलकनि, "माय, अहाँक पिताक खाली घरमे भम्ह पड़ै अछि। एहि साल बहुत ठंढा पड़ै छै, अपने घरमे धूनी रमा क’ चुट्टा गाड़ि दिऔ माय।" मुदा माय नहि सुनलखिन। आवाज सेहो एकदम मोट भ’ गेल छलनि, "जाउ भागि जाउ सभ। केहन घर? ककर घर? जोगी आ साँपक कि कोनो घर होइ छै?

अपने घर लगहक, विशाल देवदारक गाछक तर धूनी रमा क’ छ: माससँ माय जमल छली। पूस-माघक शीतलहरीसँ टक्कर लय रहल छली। अन्न-पानि कहिया ने छोड़ि चुकल छली, कहिओ तुलसीक पात चिबा लैत छली, त कहिओ आड़ू-सेबक, बादमे ओहो खायब छोड़ि देलनि। अपर्णा बनि गेली। किनको बेटा असाध्य रोगसँ ग्रसित भए मृत्युक बाट पर छल, डॉक्टर-वैद्य जवाब द’ देलकनि त’ माय-बाप डांडी पर लादि मायक

स्थान पर ल’ अनलखिन–"जय बाबा गोरखनाथ "कहि माय बच्चाक माथ पर हाथ देलखिन, आ बच्चाक सभ बेमारी दूर।

किनको भैंस हेरा जानि त माय दिन, दिशा, नक्षत्र सभ कहि देथिन-फल्लाँ दिन, फल्लाँ दिशामे फल्लाँ नक्षत्रमे भैंस भेटि जायत, जाउ, भागू। धीरे-धीरे मायक ख्याति बहुत ठाम पसरि गेलनि। बम्बइक कोनो सेठ हवाइजहाजक टिकट नेनहि एलनि आ अपन ल्यूकोमाग्रस्त पौत्रक रोगमुक्तिक लेल मायकेँ मान-सम्मानक संग ल’ गेलनि। कुबैतक कोनो लखपति त’ अपन दीनार भरल पूरा झोरे मायक पएर पर उझीलि देलकनि, मुदा माय नहि गेलखिन।

"जा क की करबै, तोहर बेटा त’ ओत्तहि जा चुकल छौ, जतय जयबासँ रोकबा लेल तों हमरा लेबय आयल छें।"

लोक सब अवाक् रहि गेल। माय एकदम सत्ये कहैत छलखिन, दोसरे दिन ओहि शेखक सेक्रेटरी हुनका बजबय आबि गेलनि-’केबल आयल अछि, अहाँक बेटा नहि रहल’।

दुर्भाग्यसँ रुक्की मौसीसँ हमरा जहिया भेंट भेल, ओ स्वयं असाध्य रोगसँ ग्रसित, जिनगीक अंतिम घड़ी गनि रहल छली। रीनल फेलियर छनि, बचबाक कोनो उमेद नहि छनि। भ’ सकैत अछि जे डायलिसिस वा किडनी ट्रांसप्लांट किछु दिन अरुदा बढ़ा दैनि, मुदा ओहि पवित्र देवमंदिरमे के अपन संसारी गुर्दा स्थापित करबाक दुस्साहस क’ सकैत छल? मृत्यु आ मौसी साप-बिज्जी जकाँ एक-दोसरासँ लड़ि रहल छली, तैयों मौसीक भक्त लोकनि अपन मायक पराजय स्वीकार करबा लेल तैयार नहि छलनि। जे सैकड़ो लोककेँ जीवनदान देने छलखिन, ओ कि चाहला उत्तर स्वयं रोगमुक्त नहि भ’ सकैत छली? अवश्य भ’ सकैत छली, मुदा माय महान छथि, सिद्ध अवतार, ओ इच्छामृत्यु चाहैत छथि। ताही द्वारे हमरा सभकेँ कहने छथि-अहाँ सभ बाहर बैसू। ककरो भीतर नहि आबय देबै, हमरा शान्ति चाही, अहाँ सभ कीर्तन करैत रहू।

हम ओहि रामधुनि करयवलासँ स्वयंकेँ बचबैत, पछुआड़क सुरंग सँ

निःशंक भीतर चलि गेलहुँ। ओहि सुरंगक बारेमे हम, रुक्की मौसी आ दरोगेजी टा जनैत छलहुँ। हम भीतर गेलहुँ त’ एक टा विचित्र सन सुगन्धि सँ नाक फड़कि उठल। की ई वैह दिव्य सुगन्धि छलै-अगरु, केसर, चानन, तुलसीदलक ओ सुगन्धि, जे दिव्य विभूतिक देहसँ निकलि हुनकर सन्त होयबाक प्रमाण द’ जाइत छनि? मुदा केहन लगैत छली रुक्की मौसी? आँखि बन्न छलनि वा फूजल? सीक- सन दुब्बरि, दुनू हाथ कैंची बनल छाती पर राखल छलनि, जटा एम्हर-ओम्हर पसरल छलनि। हम आर लग गेलहुँ। पहिने त’ अपन एकांतमे आयल व्याघातसँ मौसीक भृकुटि तनि गेलनि। ओ अपन भक्तमंडलीकेँ स्पष्ट आदेश देने छलखिन जे क्यो भीतर नहि आबि सकय। फेर हमरा चीन्हि ओहि कोटरमे धँसल आँखिक विस्मय, उल्लासक रेखा बनि ओहि पीयर चेहराकेँ उत्फुल्ल क’ देलकनि, "अरे अहाँ? देखू न, हम अहींकेँ मोन पाड़ैत छलहुँ। हमर एकटा काज क’ देब? देखू जल्दी करबाक छै, हमरा लग समय बहुत कम अछि, हमरा जयबाक अछि।"-ओ बालिका-जकाँ अधीर भ’ गेली।

"एहनमे अहाँकेँ कतय जयबाक अछि मौसी। आब हम आबि गेल छी, अहाँकेँ कत्तहु नहि जाय देब।" ई कहि हम झूला बनि गेल खाटक पासि पर बैसि गेलहुँ।

"धुर बताहि "ओहि करुण हँसीमे जेना मौसी अपन प्राण निकालि क’ राखि देने छलखिन। आवाज जेना मीलो दूरसँ आबि रहल छलै "जेबाक त हमरा अछिए, चाहलो उत्तर की अहाँ हमरा रोकि सकब? मुदा ई काज अहीं क’ सकैत छी।"

"कहू, की करबाक छै मौसी?"

"लियऽ" अपन सिरमासँ निकालि दू टाका ओ हमरा हाथमे देलनि, "कचहरी लगहक लोहाक शेरवाली सड़क जनै छी न? आर आगाँ बढ़ब "..फेर ओ रुकि गेली, जेना बोल नहि फूटि रहल होनि।

"हँ, हँ, जनै छी "ओहि लोहक शेरबला सड़ककेँ अल्मोड़ामे तहिया के नहि जनैत छल? ओहि आकारहीन, निर्जीव शेरक ख्याति, ओकर

कोन कलात्मकताक कारण भेलै, से हम आइ धरि नहि बूझि सकलहुँ अछि, एकदम कुरूप ओहि शेरक चेहरा एकदम बिलाड़िये सन लगै छलै, देहक कारी-पीयर धारीकेँ अल्मोड़ाक अनेक वर्षक वर्षाक प्रहार एकदम रंगविहीन बना देने छलै। तैयों ओ अल्मोड़ाक चलैत-फिरैत गाइड स्टोन छलै।

"ओहि ठामसँ सीधा चलि जायब। गरीबुल्लाक दोकानसँ थोड़ेक आगाँ एकटा मुसलमानी बिरयानीक दोकान छै, ओत्तहिसँ हमरा लेल एक कटोरी सालन जल्दीसँ नेने आउ।"

हमरा जेना केओ ऊँच पहाड़सँ अन्हार घाटीमे ठेलि देलक। की कहैत छथि मौसी। ओ मासु खयती। जे अपन कैशौर्य, जवानी स्वेच्छासँ पवित्रताक कठोर बन्हनमे बान्हि, अपन सभ इन्द्रियकेँ जीति लेने छली, जे अन्न-पानि छोड़ि खाली पाते टा चिबा क' जीहकेँ पोसुआ बिलाड़ि बना नेने छली, पवित्र, बेदाग, सात्विकी सिद्धि माय, ई केहन बचपना क' रहल छथि, केहन अविवेकी फरमाइश क' रहल छथि? बताहि त' नहि भ गेली?

"जाउ-जाउ, देरी नहि करू "फेर ओ स्वयं सफाइ देमय लगली, "जीवन-भरि कहिओ मासु नहि चिखलहुँ, सुनै छियै बहुत बढ़िया स्वाद होइ छै। अतृप्त लालसा नेने चलि जायब त' एक बेर फेर एहि धरती पर आबय पड़त-जाउ बाउ जाउ, जल्दीसँ ल' आनू।"

फेर हम हवाइ घोड़ा पर सवार चलल जा रहल छलहुँ, नहि जानि कतोक पगडंडी फनलहुँ-जारवनदेवी, मोतियाधारा, सात-सात गजी सीढ़ी– कंठ सुखा गेल, पएर काँपय लागल, मुदा हम ओहि दोकान पर पहुँचि गेलहुँ। जखन ओही वेगसँ घुरलहुँ त' रामधुनिक सामूहिक कंठस्वरकेँ देवदारक हवा आरो तेजीसँ दोहरा रहल छल। हम फेर ओही सुरंगकेँ टटोलैत भीतर पहुँचलहुँ। निढाल भेल साँझ पूरा कोठरीमे प्रसवसँ थाकल माय जकाँ पसरल पड़ल छल। मौसीक पीयर, रुग्ण चेहरा सेहो ओहि रक्तिम आभामे लाल लागि रहल छलनि "ल अनलहुँ?" पड़ले-पड़ल मासुक

बासन लेबा लेल मौसी अपन हाथ बढ़ा देलनि। हम बोटीसँ भरल लाल-लाल मासु हुनका हाथमे द’ देलियनि। ओ हँफैत-हँफैत कहलनि-"हमरा बैसा दियऽ आ केबाड़क किल्ली लगा दियौ, केओ आबि ने जाय।"हम किल्ली लगा देलियै, फेर हुनका सहारा दैत बैसा देलियनि। बैसैत देरी हमरा हाथसँ मासुक बासन ल’ भुखायल शेरनी जकाँ ओहि पर टूटि पड़ली। 'आह-आह' कहैत ओ जेना हड्डी चिबाबय लगली। हमरा डर भेल जे ओ मासु बला माटिक बासन सेहो ने चिबा जाथि। मुदा खाली बासन हमरा थमा, परम तृप्तिसँ हाथ चटैत अपसियाँत भए पड़ि रहली।

"अहाँ लाख बरख जीबू। करेजा ठंढा भ’ गेल। कहिओ नहि चिखने छलहुँ, सुननहि टा छलियै, आइ बूझि गेलियै। आब एक टा काज आर क’ दियऽ। ओहि ठाम पेटार राखल छै, ओहिमे ऊपरेमे हमर विवाह बला ओढ़नी राखल छै, हमरा ओढ़ा दियऽ। आ एकटा ठोप सेहो क’ देब, सिनुरक डिबिया सेहो ओही पेटारमे छै। ऐना सेहो द’ देब।" हम कँपैत मौसीक एक-एक आदेशक पालन केने चलि गेलहुँ।

"पहिने एहि गेरुआ वस्त्रकेँ दूर हटाउ।"

हम सएह कयलहुँ, नीक जकाँ मौसीक शृंगार केलियनि, कनी टा घोघ सेहो तानि देलियनि, छोट-सन सिनुरक ठोप सेहो क’ देलियनि। कँपैत हाथसँ ऐना देखि ओ हँसली। ओ हँसी छल वा जोरसँ रोकल गेल सिसकी।

"'एतेक खराब त’ नहि छी देखै मे। आइ सभ इच्छा पूर भ’ गेल। बस एक्कहि टा इच्छा बाकी रहि गेल।" हुनकर लम्बा साँस ऐना के मलिन क’ देलकै। .

इच्छा रहलो उत्तर हम ई नहि कहि सकलियनि, "कोन इच्छा बाकी अछि मौसी, कहू न?"

मुदा हम त’ स्त्री छलहुँ। बूझि गेलहुँ जे मौसीक कोन इच्छा प्रेतछाया जकाँ हुनका संगे जैतनि।

" जा क’ पतिक अंकसँ लागि जाय चाहे कलंके किएक नहि लागय।"

कनिए कालक बाद ओ निर्वाक् भए चारक बल्लीकेँ देखय लगली।

उन्टा साँस कण्ठमे घरघराय लगलनि। केहन स्थिर दृष्टिसँ छत देखि रहल छली।

"मौसी-मौसी?" हम हुनका कान लग माथ ल' गेलहुँ। ओहने पथरैल दृष्टिसँ मौसी चार दिस ताकि रहल छली।

एना भ' क'/ मौसी ककरा देखि रहल छली। की वैतरणीक ओहि पार सँ नर-मांसभक्षी गिद्ध-चीलक गोल-गोल मँडराइत पाँति मौसी देखि लेने छली? आ कि रक्तक लहरिसँ लहराइत स्वयं वैतरणीये उद्वेलित भए हुनका लेबय लेल आगाँ बढ़ैत आबि रहल छल? आ कि यमदूतक पाछाँ-पाछाँ बड़का-बड़का मांसभक्षी कुकुरक लपलपाइत जीहे मौसीक पुतरीकेँ एना विस्फारित क' रहल छलनि? मौसी निश्चेष्ट पड़ल छली- ने साँसक उतार-चढ़ाव, ने कण्ठक घरघरी। हम बुझि गेलहुँ। फेर हम धीरे-धीरे हुनकर कड़ा भेल जा रहल देहसँ शृंगार उतारि, ओएह गेरुआ वस्त्र पहिरा, रुद्राक्षक मालाक भ्रामक जाल ओहि निष्प्राण छाती पर पसारि देलियनि। अपनहि आँचरसँ ठोप मेटा देलियनि। रामधुनि, तेज हवाक संग क्रमशः लग अबैत जा रहल छल-'जय माँ, जय सिद्धि माँ।"हम एक बेर फेर ओहि शान्त-स्निग्ध चेहरा दिस देखलहुँ-चेहरा पर केहन अपूर्व सन्तोष छलनि! शान्ति!

भीड़ कोनो दुःसाहसी, निडर डकूबाक दल जकाँ भीतर आबि रहल छल, ई हमरा बुझा गेल। .

जहिना हम चुप्पेचाप ओहि सुरंगसँ भीतर आयल छलहुँ, तहिना चुप्पेचाप बाहर निकसि गेलहुँ।

दण्ड

सिंह नर्सिंग होममे पैघ-सन ताला लटकल छलै। लोकप्रिय डॉ सिंहक अकस्मात् एहि तरहेँ अलोप भ' गेला उत्तर, हुनकर कइएक टा रोगीक दशा आर बिगड़ि गेल छलनि। अपन हाथक चमत्कार देखा, हुनका सभक मृत्युकेँ जीतै वाला औषध पियाबै बला भगवान् एना अदृश्य किएक भ' गेला? आब की हेतै? ई ठीक छलै जे डॉ सिंह कइएक दिनसँ अपन क्लिनिकमे नव रोगीकेँ नहि भर्ती कयने छलाह, तथापि निराश रोगीक असहाय आत्मीयक लम्बा पाँति, हुनकर सेक्रेटरीक पएर पर माथ राखि गोहारि लगा रहल छल। कहुना, एक बेर हुनकर रोगीकेँ डॉ सिंह देखि भरि लेथुन, मुदा सेक्रेटरी बेचारा की करितै? डॉ सिंह अपन कोठीक सभसँ उपरका कोठरीमे स्कॉच ल' क' बन्न छथि। ककर मजाल छै जे केबाड़ खटखटा देतनि। बीच-बीचमे हुनकर बौक नौकर बदलू, कॉफीक ट्रे ओत्तय पहुँचाबय छलनि। 'साहब की करैत छथि?', 'केहन मूड छनि?', 'बैसल छथि वा पड़ल छथि?'-कोनो प्रश्नक उत्तर ओ नहि द' पाबय त' डॉ सिंहक सेक्रेटरी सुशील रॉय खौंझा उठथि। कतबो अटूट सम्पत्ति किएक नहि हो, कहू त' एना कतेक दिन काज चलतै? नियमित रोगी सभ की हुनका लेल बैसल रहतनि? यैह सब कहय चाहैत छलनि हुनकर युवा सेक्रेटरी डॉ सुशील रॉय, मुदा साहेबक कठोर आदेश छलनि जे बौका बदलू छाड़ि आन क्यो हुनका कोठरी मे नहि आबनि। नहि जानि कतेक इष्ट-मित्र सभ आबि घुरि गेलखिन। जखन लम्बा नह आ रांगल केश वाली विधान सभाक सदस्या रानी शिवसुन्दरी सेहो बहुत काल धरि केबाड़ खटखटा क' भनभनाइत आपिस घुरि गेली, तखने शान्त स्वरमे डॉ सिंहक कहब सुशील सुनलनि-'हमरा किछु दिन क्षमा क दियऽ शिवी! हम शरीर आ

मोन दुनू सँ अस्वस्थ छी '। आब सुशीलकेँ बुझबामे कोनो भांगठ नहि रहलनि जे ई केबाड़ आब कोनो भेंट कैनिहार लेल नहि खुजतनि। मुदा दोसर दिन अर्धरात्रिमे कनेक काल लेल केबाड़ खुजल छलै। नर्सिंग होमक जाहि वी आई पी रोगीकेँ अगिला दिन छुट्टी भेटय वाला छलै, ओकरा अचानक हृदयक दोसर आघात पड़ि गेलै। डेराइत-डेराइत डॉ रॉय केबाड़ खटखटएलनि। जँ नहि खटखटेबितथि आ एहि बीच रोगीकेँ किछु भ' जइतै त' सिंह नर्सिंगहोमक न्यो हिलि जइतै। रोगी कोनो जनसंघी मन्त्रीक सार छलै, एकदम टाइम बम, नहि कहि कखन घातक रूपसँ फाटि जाय। सेवा-सुश्रूषा लेल संग मे छलखिन हुनकर समाजसेविका सारि। एक तरहेँ ओएह कन्हा पकड़ि सुशीलकेँ सीढ़ी पर धकेलि देने छलनि।

"जेना हो तेना डॉ सिंहकेँ नीचाँ आनू। नहि अओता त' ई हुनका लेल ठीक नहि होयतनि। रोगीकेँ जखन एहि ठाम भर्ती कयने छथिन, त' ओकर जीवनक जिम्मेवारी सेहो हुनका उठबय पड़तनि"।

संभवतः डॉ सुशील कनी बेशिए जोरसँ केबाड़ खटखटा देने छलखिन, "सर, मन्त्रीजीक सारक हालत बहुत ख़राब छनि, एक बेर देखि लितियनि त .."

"चूल्हिमे जाय तोहर मन्त्रीक सार।"ओ जोरसँ चिकरि उठला। मुदा फेर किछु सोचि स्वयं केबाड़ फोलि देलखिन।

डॉ सिंहक स्याह चेहरा देखि सुशील सहमि गेल छला। कइएक दिनसँ अपनाकेँ कोठरीमे बन्न कए डॉ सिंह शरीर पर खूब अत्याचार कएने छला। अव्यक्त व्यथासँ चेहरा एकदम कारी भ' गेल छलनि। सुशील दस वर्षसँ जिनका एक्कहु दिन बिनु दाढ़ी बनौने नहि देखने छलखिन, जनिक सुडौल चिबुक आ भरल गाल सदति जनमौटी बच्चाक नरम गाले जकाँ बुझाइ छलनि, ओहि पर खुरदुर उज्जर सन दाढ़ी जनमि गेल छलनि। जे व्यक्ति दिनमे दू बेर बढ़िया-बढ़िया सूट बदलिये क' रोगीक नाड़ी पकड़ैत छला आ जिनकर हाथमे अबिते नाड़ी स्वयं आश्वस्त भए ऐक्यूजर बनि, कोनो अपराधी सन रोग-दस्युकेँ धरा, ओकर पूरा इतिहास उगलि दैत छल,

ओएह सुदर्शन व्यक्ति आइ स्वयं कठघरा मे ठाढ़ अभियुक्त सन लगैत छला। खाली गंजी आ पैजामा पहिरने ओ रोगी देखय लेल उतरय लगला त सुशीलकेँ मोन भेलनि जे टोकि दियनि-'सर, ड्रेसिंग गाउन पहिरि लियऽ, ओहि ठाम हुनकर सारिओ छथिन।' सुशील जनैत छला जे स्वाभाविक मानसिक अवस्थामे एहन पहिरना पहिरि घरक मेसतरनिओ लग डॉ सिंह नहि ठाढ़ होइतथि।

रोगीक अवस्था सत्ते चिन्ताजनक छलनि। मुदा हुनका देखिते डॉ सिंह एक बेर फेर पुरना डॉ सिंह भ' गेला, रोगीक शोचनीय अवस्थे त हुनका पुलकित क' दैत छलनि। शत्रुपक्षसँ टकरायब तखने आनन्दप्रद भ' सकैत छल, जखन दुनू दिसका पलड़ा समान हो। अपन शत्रुक दुर्बलता अहू बेर हुनका पकड़मे आबि गेलनि। सिद्ध पहलवान जकाँ आत्मविश्वासक गण्डा बान्हि ओ अखाड़ा मे कूदला, आ कनिये कालमे शत्रु हुनकर दाव-पेंचसँ उन्टा पड़ल छलनि।

"ऑक्सीजन प्लान्ट लाउ, फल्लाँ इंजेक्शन, फल्लाँ दवाइ-"

"अहाँ एहि ठाम की करै छी? बाहर जाउ।" हो-हल्ला मचबैत रोगीक तेज सारिकेँ एना डपटि देलखिन, जेना ओ कोनो स्कूलक छात्रा होइथि। रोगीक कोठरीमे आत्मीय स्वजनक भीड़ देखिते डॉ अहिना भड़कि उठथि। भरि राति ओ रोगीक छाती पर अपना हाथेँ एना मालिश करैत रहला, जेना कोनो स्नेही महिसबार अपन महीसकेँ रगड़ि-रगड़ि क' नहा रहल हो। भोर होइत-होइत मृत्यु-द्वार सँ आपिस आबि रोगी चैनक निन्न सूतल छल। समाजसेविका सारि विधुर बहिनोइक धड़कि रहल हृदय पर हाथ राखि एक बेर फेर आश्वस्त भए बैसि रहली। एहि अद्भुत डॉक्टरक कृपासँ कालक कुड़हड़ि एहि बेर हुनकर वैधव्यक कल्पतरुक जड़िकेँ स्पर्श नहि क' सकल छल। धन्यवाद दितथिन, ओहिसँ पहिनहि डॉ धड़धड़ाइत अपन कोठरीमे जा क' किल्ली चढ़ा नेने छला। विधिक केहन विडम्बना छल जे मुर्दोमे जान फूकय बला ई अद्भुत जादूगर आठ दिन पहिने हाथ बन्हने ठाढ़ देखिते रहि गेल आ बलवान मृत्यु अपन शत-सहस्र पराजयक प्रतिशोध एक्कहि

आघातमे लय, हुनकर उपहास कय चलि गेल।

फ्रिजमे राखल तारबूजक लोभाउन लाल रंगक भीतर नुकायल कुटिल मृत्यु मुस्की द’ रहल छल, ई की बाप-बेटा जनैत छला? एक फाँक पिता सेहो खयने छला, तखन मृत्यु पुत्रकेँ किएक ल’ गेलनि? पिता-पुत्र की एहन-ओहन छलाह? दुनू सँग ठाढ़ होथि त’ लगै जेना दू टा जौंआ भाय ठाढ़ छथि। डॉ सिंह पचास वर्षसँ किछु बेशिये उमिरक छलाह, जँ चाहितथि अखनो विवाह क’ सकैत छलाह। ने एक्कहु टा पाकल केश, ने एक्कहु टा झुर्री। दिल्लीक ऊँच वर्गक स्त्री-समाजक प्रौढ़ा लोकनि चोरा-नुका क’ सुशीलसँ भेद लेबाक चेष्टा करैत छलीह, 'कोन हेयर-डाइ यूज करै छथि डॉ सिंह?' आ जखन सुशील हँसि क’ कहथिन जे डॉ साहेबक व्यक्तित्वमे हुनकर केशसँ ल’ क’ पएर धरि सभ किछु विधाताक देल छनि, त’ ओ सभ अविश्वाससँ देखिक’ चलि जाथि! दोष हुनको सभक नहि छलनि। डॉ सिंहक मोती सनक दाँतक पाँति देखि क’ त’ तीन-चारि वर्ष धरि स्वयं सुशील सेहो भ्रममे छलाह। मात्र बत्तीसे वर्षक आयुमे सुशीलक आगाँक तीन टा दाँत बनबेबामे डेढ़ सै लागि गेल छलनि, ताहि पर दिल्लीक प्रसिद्ध डेंटिस्ट एहन ठकलकनि कि जीहक स्पर्श पबिते तीनो दाँत कागदक शटल कॉर्क जकाँ उछलै लागनि।

'अहीं सन डेन्चर बनबाबय चाहैत छलहुँ सर, के छलाह अहाँक डेंटिस्ट?' सुशील लड़की जकाँ लजा क’ पुछलखिन। 'डेन्चर?' डॉ सिंह ठठा क’ हँसि पड़ला-के कहलक जे हमरा डेन्चर अछि? हिला क’ देखू।' फेर ओ जोर-जोरसँ अपन दाँत हिलबै लगला, 'कोनो डेंटिस्टक बापक हथौड़ी सेहो एकरा नहि हिला सकैत छै। जनै छी एहि डेन्चरक रहस्य?' ठोर केँ टेढ़ क’ क’ हँसला पर ओ कठोर व्यक्ति सेहो केहन मधुर लगैत छलाह! चेहरामे एखनहुँ नहि जानि केहन स्त्री-सुलभ आकर्षण छलनि।

'हमर जिनगीक पचास वर्षमे आरम्भक बीस वर्ष छाड़ि शेष तीस वर्षमे हमर दाँत चीनीक एको कणक स्पर्श नहि कयने अछि।' ठीके त’ कहि रहल छलाह ओ। कृतज्ञ रोगीक घरसँ आयल कतेक मधुर भरल टोकरी एम्हर-

ओम्हर पड़ल रहैत छलै। कहिओ रानी शिवसुन्दरी अपन कारमे भरि क' लय जाथि, कहिओ नौकर-चाकर खानि।

सुशीलक माय कहथिन-"अरे बेटा, आन्हरक राज्यमे गदहा मेवा खाय। कनियाँ रहितथिन त एना होइतै?'

मृत पत्नीक पैघ सन तैलचित्र डॉ सिंहक विजिटिंग रूममे टाँगल छलनि। किछु दिन पूर्व हुनकर एकटा प्रतिभाशाली रोगी कृतज्ञतावश डॉक्टर-पत्नीक विराट ताम्र मूर्ति उपहारमे द' गेल छलनि। केहन तेजस्विनी स्त्री रहल होयती ओ! ताम्रतेज सँ घुलि-मिलि गेल अद्वितीय गढ़निक चेहराक गंभीर तेज आँखिकेँ अनायास बान्हि लैत छलै। केशक एकटा घनगर लटकेँ चतुर मूर्तिकार भरिसक सुडौल वक्षस्थल पर जानिए-बुझि क' उतारि देने छलै। ओहि मूर्तिक ओएह अंग हुनका लेल मृत्युक सन्देश ल' क' आयल छलनि। पच्चीसे वर्षक अल्पावस्थामे डॉक्टर-पत्नीक मृत्युक कारण बनल छल असाध्य ब्रेस्ट-कैंसर।

पिताक कहलाक बादो ओ फेर विवाह नहि कयलनि।

डॉक्टरीक पढ़ाइ पूरा कय ओ किछु दिन विदेशेमे बसि गेला, बादमे अपन देश घुरि अयला। जमीन्दारी बेचि ओ दिल्लीमे अपन क्लिनिक खोलि लेलनि। बेटा विदेशमे डॉक्टरी पढ़ि रहल छलनि। पछिला साल ओ बहुत कम्मे वयसमे एफ आर सी एस कय दिल्ली आबि गेलनि। अबिते ओ पिताक दहिना हाथ बनि गेलनि। जाहि पुत्रक प्रेममे पड़ि ओ दोसर विवाह नहि कयलनि, पुत्र सेहो ओहि त्यागक पुरस्कार देलकनि। पिता लाखमे एक सर्जन छला त' पुत्र लाखमे एक चिकित्सक। पिता बामो हाथसँ कठिन-सँ-कठिन ट्यूमर तेना भ' क' चीरि देथिन, जेना कोनो सुगृहिणी सधल हाथ सँ अचारक नेबो चीरैत छथि, आ पुत्र ओही अनुभवक अंदाजसँ दवाइक मसल्ला भरि दैनि। शरीरक शीशाक पारदर्शी बोयाममे भरि ओहि स्वरचित प्रिज़र्वकेँ पिता-पुत्र गौरव सँ देखथि। आब त' सालों ओकरा सड़बा-गलबाक प्रश्ने नहि उठैत छैक।

मुदा कौखन नाम केहन व्यर्थ मरीचिका बनि क' रहि जाइत छैक। डॉ

सिंहक श्वसुर छलखिन, रसिक कवि, अवधक प्रसिद्ध जमींदार। ओ नातिक नाम रखने छलखिन 'मृत्युञ्जय'। मुदा ओ मृत्युकेँ नहि जीति सकल। बेचारा! मृत्युए ओकरा जीति लेलकै। मृत्युञ्जयकेँ क्लिनिकमे बैसिते देरी समृद्ध घरक सुन्दरी किशोरी सभ स्वेच्छासँ नकली रोगक वरण कय डॉ सिंहक तेज छुरी पर खसय लेल बहुत संख्यामे आबय लगलनि त' डॉ सिंहकेँ हँसी लागि गेलनि। चञ्चल फतिंगी सभ सुदर्शन पुत्रक पौरुष दीपे पर जरै लेल जुटि रहल अछि, ई हुनका बुझबामे भाङठ नहि भेलनि। हुनका सभकेँ कोनो बीमारी नहि फुराइन त' अपन टौंसिले बढ़ा लैत छली। पुत्रक अबिते किशोरी रोगिणी सभक संख्या एतेक बढ़ि गेलनि जे डॉ सिंहकेँ नव विंग बढ़बय पड़लनि। मुदा बेटा बापसँ बेशी चतुर छलनि।

विदेशक सुरा-सुन्दरी की हुनकर कार्तिकेय-सन पुत्रकेँ निरामिषभोजी रहय देने हैतनि? डॉ सिंह अपन अनुभवक डायरी खोलि विदेश-प्रवासक रंगीन पृष्ठक स्मृतिमे घण्टों डूबि जाथि। भारतक सुस्वादु छाया-ग्रासकेँ विदेशी सिंहिनी सभ केहन स्वाभाविकतासँ ग्रास बना लैत छथि, ओ नीक जकाँ जनैत छलाह। इंडियन झोर जकाँ इंडियन पुरुषोकेँ देखि अनायासे हुनकर सभक नेर बहुत गँवार जकाँ चूबै लगै छनि, एकर अनुभव हुनका स्वयं छलनि। पुत्रक चेहरा देखि ओ सन्तुष्ट भ' गेल छला। ओ चेहरा अनुभवहीन युवकक नहि छलै। एहन नहि रहितै त' एखन धरि ओ भूखल भिखारि जकाँ क्लिनिकक एयरहोस्टेस सन सुंदरी नर्स सभक एक इशारा पर कहिया ने खसि पड़ितथि! विधुर पितासँ भेंट करय आबय बलामे आकर्षक स्त्रिगणेक संख्या बेशी छलनि, से संसारी पुत्र सेहो बुझैत छलनि। मायक आदमकद ताम्रमूर्ति दिस ओ कखनो आँखि उठा क' नहि देखैत छथि वा देखि नहि सकैत छथि, ई बेटा खूब बूझैत छलनि। फेर नर्सिंग होमक नाम पड़ल छलै-'सुधा नर्सिंग होम'। जखन मरल मायक चित्र एकान्तमे देखथि त' जवान मृत्युञ्जयक ठोर व्यंग्यसँ टेढ़ भ' जाइनि। पिताक ई केहन मिथ्या प्रदर्शन छलनि। मायक मूर्ति लग ब्रिज-टेबल पर की ओ विधानसभाक ओहि धूर्त सदस्याक संग पिताक ही-ही-ठी-ठी नहि सुनि चुकल छथि?

'जाहि पतिकेँ अपन पत्नीसँ प्रेम हेतै, ओ कम सँ कम अपन कोठी, कोनो कॉलेज वा उद्यान-पार्कक नाम पत्नीक नाम पर कखनो नहि राखत सुशील! 'एक दिन ओ अपन मित्र डॉ सुशीलसँ हँसिक' कहने छल, सत्य कहू त' हमरा कहिओ ताजमहलो देखबाक इच्छा नहि भेल। ई देखौंस किएक? जँ पत्नीकेँ चाहै छी त' पूरा दुनियामे अपन प्रेमक ढोल किएक पीटै छी यौ?' आ ओ जिद कय क्लिनिकसँ अपन मायक नाम हटवा देने छलनि। पिताक सभ दुर्बलता जनितो ओ स्नेही पुत्र पितासँ क्षणो भरि लेल दूर नहि भ' पबैत छल। शाइलॉक सन क्रूर पिता आसन्नमृत्यु रोगिओसँ अपन ऊँच फीसक बीमा करबा लैत छथि, से मृत्युञ्जयसँ नुकायल नहि छलै। पिताक आसवसँ आसक्ति, स्त्रिगणक प्रति झुकाव, किछुओ त' मृत्युञ्जयसँ नुकायल नहि छलै, मुदा ओ स्वेच्छेसँ अनजान बनि, पिताक समस्त दुर्गुण झाँपि दैनि। पुत्रक क्षमाशील व्यक्तित्व देखि पिता संतोषक साँस लेने छला। मुदा ठीक तेसरे मास सालोसँ मित्र बनल पुत्र अचानक शत्रु बनि करेजमे छूरी भोंकि देत, ओ की जनैत छला? पल खसिते सभ खतम! दू-तीन टा रद्द, दू-तीन टा दस्त आ आँखिक पुतरी उनटि गेलनि। खाली एक बेर ओ अर्थी पर अबोध बच्चा जकाँ बिलखि क' बाजल छलाह, 'ई हमरा केहन दण्ड देलहुँ भगवान?' कनेक काल लेल ओ लौहपुरुष टूटि गेल छलाह, फेर ओतयसँ पड़ा क' ओ कोठरी बन्न क' नेने छलाह।

अरथी के ल' गेलै, के कन्हा देलकै, के मुखाग्नि देलकै-ई सभ हुनका किछु नहि बूझल छलनि।

कखनो-कखनो सुशीलक मोनमे आबनि जे हुनका बाँहिमे भरि क' कहियनि, 'सर! मोन किएक छोट करै छी, हम आब अहींक बेटा छी। हम वचन दै छी सर! भरि जिनगी कुमार रहि अहाँ लग रहब। आब हम अहींक बेटा छी। अहाँक पुत्र नहि रहल, मुदा अनकर पुत्र त' छै। ओकरा सभकेँ असाध्य रोगसँ मुक्त कय अपन पुत्रक अमर स्मारक बनाउ। '

मोने-मोन सुशील ई बुझैत छलाह जे कहनाइ आसान छै मुदा ओहि आघातकेँ बरदाश्त केनाइ बहुत कठिन। तैयों ओ भरि राति जागि कइएक

बेर रटि ओ सभ बात याद करैत छलाह जे हुनका डॉ सिंह सँ कहबाक छलनि, आइ कहुना हुनका क्लिनिकमे लय आनबनि। सुशील जयबाक लेल तैयारे भ' रहल छलाह कि बौक बदलू डॉ सिंहक चिट्ठी थमा गेलनि- सुशील!

लम्बा छुट्टी पर जा रहल छी, भ' सकैत अछि घुरि क' आबी वा नहिओ आबी। एकाउंट आ क्लिनिक अहाँकेँ द' क' जा रहल छी, मोन हो त' चलायब नहि त' ताला बन्न क' देबै।

अहाँक

डॉ सिंह

बदलू हिचकि-हिचकि क' कानि रहल छल। कतऽ गेलखिन? कखन गेलखिन? सुशील ओकरा झिकझोरि क' पूछय लागलखिन, मुदा ओ फलविहीन ठुट्ठ गाछ सन बौक झिकझोरलो उत्तर कोना बजैत? ओ जीहकेँ बहुत चेष्टासँ हिला क' प..फ.. आवाजे टा निकालि सकल। ओ विवशतासँ दुनू हाथसँ करेज पीटय लागल छल। ई के बूझि सकैत छल जे डॉ सिंह लूप लाइनक ओही गाड़ीमे जा क' बैसि जैता, जाहिमे अट्ठाइस वर्ष पहिने बैसल छलाह। वीरभूमक युगपुरुष करौट फेरि क' भरिसक बेसुध पड़ल छल। जाहि ठामसँ एक बेर साँस रोकि क' भागि पड़ायल छलाह, ओत्तहि फेर साँस रोकि क' भागल जा रहल छलाह। की घीचि रहल छलनि हुनका-राँगामाटिक बीच सापिन जकाँ अर्राइत कोपाय नदी वा वर्षासँ भीजल संथाल झोपड़ीक खढ़क भीजल पंखा सन सुगन्धि वा संथाल ताड़ी हड़ियाक मादक स्मृति? जीवनक रससँ छलकैत घैल जखन खाली भय ढुलकि गेल, तखन एहि गामक स्मृति हुनका किएक बजौलकनि?

वीरभूमक जमींदार सुधीर रंजन रॉय चौधरी पिताक अंतरंग मित्र छलखिन। दशमीक छुट्टीमे ओहि स्नेही संतानहीन जमीन्दार दम्पतीक पाहुन बनि ओ गोआलपाड़ा गेल छलाह। अपन विदेशी मित्र सभक लेल बनबाओल गेल अतिथिगृह स्नेही जमींदार हुनका लेल खोलि देलखिन आ कहलखिन एकान्तमे अहाँ मोन लगा क' परीक्षाक तैयारी क' सकैत

छी। एहि ठाम केओ अहाँकेँ व्यवधान देमय नहि आयत। मोट-मोट डॉक्टरी किताबमे डूमल तरुण डॉक्टर जहिना खिड़की खोलि क' बैसथि, तहिना लगे मे जमींदार साहेबक बेटीक स्मृतिमे बनि रहल कन्या-पाठशाला भवन-निर्माणक काज शुरू भ' जाय।

छत पिटैत संथाल युवतीक आकर्षक पएरक ध्वनिक मृदु-संगीत सुनि पढ़बासँ हुनकर मोन उचटि जानि। .

'राजा गेलो सरके-सरके
रानी गेलो काँची सरके
ओ राजार छाता पड़े गेलो जले
रानी हाँसिलो मने-मने। '

(राजा पक्की सड़क पर चलि रहल छथि, रानी कच्ची सड़क पर। राजाक छत्ता पानिमे खसि पड़लनि आ रानी मने-मन हँसय लगली।)

कखनो-कखनो संथाल सभक सरल भाव-व्यंजना सुनि युवा डॉक्टर मने-मन हँसय लागथि। फेर देखथि, डोरीक पातर सीढ़ी पर कोनो सर्कसक सुन्दरीक सहज भंगिमासँ एक पाँतिमे चलि रहल सन्थाल किशोरी सभ खिलखिलाइत गारा-सीमेंट ऊघि रहल अछि। साँचमे ढलल अंग, चिक्कन मोहक मरोड़मे बान्हल पंखाक आकारक सन्थाली खोपा, कारी कोबरा सन चिक्कन उघार पीठ, ठेहुन धरि पहिरल साड़ी आ चेहराक कारी रंगक विरोधाभास प्रस्तुत करैत लाल अड़हुल फूल। कखनो ककरो सुडौल वक्षस्थल पर अचानक युवा डॉक्टरक निर्दोष दृष्टि पड़ि जानि आ ओ लजा क' आँखि फेरि लेथि, मुदा जिनका देखि ओ लजा क' आँखि फेरथि, हुनका ने लजेबाक अवकाश छलनि, ने चिन्ता। भरिसक हुनकर चित्त पढ़ि-लिखि क' बुझनुक भ' गेल छलनि, मुदा ओहि अनपढ़, गँवार, प्रकृतिक निर्जन वनस्थलीमे जन्मल, पलल-पोसल वन-कन्या सभक चित्त छलनि शिशु सन निष्कपट, निर्दोष। अबोध शिशु के की अपन नाँगट अंग पर लाज भ' सकैत छै? कखनो-कखनो ठेकेदारक कर्कश स्वरमे एक्के नामक पुनरावृत्ति होइ, 'ऐ चाँदमनी, तू अपनाकेँ की बूझै छही? अपन एहि रूप पर

तोरा एतेक घमंड किएक छौ? अत्यधिक रूपेक कारण जनकसुताक हरण भेल छलनि, ई मोन राख छौंडी! तखन सँ एक्के तसला मसल्ला अनने छें! '

अतिरूपसँ हरल जयबाक भय देखा क' डेराओल गेल ओहि सुंदरी जनकसुताकेँ देखबाक लोभ एक दिन डॉ सिंह सेहो संवरण नहि क' सकला। माथ पर तसला धयने ढीठ चाँदमनी जानिए क' अलसायल मंद गतिसँ चलल जा रहल छल कि बूढ़ ठीकेदार कर्कश स्वरमे बाजल, 'तोरासँ आब काज नहि हेतौ। घाघूसँ आइए कहय पड़त जे तोरा आब बीरूकेँ सौंपि दय। बीरू एक लाठी देतौ त' ई सब डाँड़ लचकेनाइ बिसरि जेतौ। 'चाँदमनी भभा क' हँसि पड़ल आ चौंकि क' डॉक्टरक आँखि स्वयं उठि गेलनि। बाँस-वनक झोझरिसँ घेरायल ओहि जंगलमे समयसँ किछु पहिनहिए साँझ भ' जाइत छलै। झलफल अन्हारक कैनवस पर तसला लेने ओहि मुग्धाक श्याम-सोहनगर छवि, सिंहकेँ कोनो कलाकारक बनाओल कारी लिनोकट जकाँ आकर्षक लगलनि। जल्दीसँ ओ खिड़की बन्न क' लेलनि। अच्छा, त यैह छलै घाघूक बेटी! एक दिन ओ कहैत त' छलै कि ओकरा एक्कहि टा बेटी छै, ओकर सगाइयो क' देने छै। एखन ठीकेदार लग काज क' रहल छै, थोड़ेक पैसा कमा लेतै त' विवाह क' देतै।

घाघू माँझी जमींदार साहेबक सन्थाल नौकर छलनि। ओकरा ओ मित्र-पुत्रक सेवा लेल ओहि ठाम पठा देने छलखिन। चुपचाप रहयवाला हब्शी सन कारी ओ नौकर, नव परदेशी मालिकक भाषा नहिओ बुझैत हुनकर एकहक आदेश तेना पूरा क' दै कि डॉ चकित रहि जाथि। एहन कुरूप पिताक पुत्री एहन सुन्दर कोना भ' गेल हेतै! बहुत राति धरि डॉ. सिंह पढ़ैत रहला आ दोसर दिन अबेर तक सूतल छलाह। अचानक तेज अपरिचित स्त्रिगणक आवाज सुनि ओ हड़बड़ा क' उठि बैसला। देखलनि हुनकर खिड़की पर ठाढ़ सुंदरी चाँदमनी ठेकेदारकेँ औंठा देखा रहल छल। ओ जाहि भाषामे हँसि-हँसि क' अपन सखी सभसँ जे किछु कहैत छलै, ओकर एको शब्दक अर्थ डॉ केँ नहि लगलनि, मुदा औंठा देखेबाक विजयी मुद्रासँ ओ बूझि गेला जे आब ओ ठेकेदारक ओहि ठाम काज नहि करतै।

अचानक चाँदमनी खिड़की बन्न क’ देलकै आ हुनका दिस घूमि क’ हँसय लागल। दूरसँ आकर्षक लागयवाली ओ श्यामांगी लगो सँ देखला पर सुन्नरि छल। पहिने सिंह ओकर मोती सन उज्जर दाँतक मनोहारी पाँतिकेँ अवाक् भए देखय लगला, फेर अचानक याद एलनि जे ओ नाइटसूटक पायजामे टा पहिरि क’ सूतल छलथि। लाजसँ हुनकर चेहरा लाल भ’ गेलनि। केहन बेहया छौंड़ी छल जे हुनकर उघार देहकेँ एहन मुग्ध दृष्टिसँ देखि रहल छल! प्रकृति केहन उन्टा गंगा बहा रहल छल!

'के छें तों? एहि ठाम कोना चलि अयलें? घाघू-घाघू! 'विवश स्वरमे डॉ. सिंह शोर पाड़लखिन। तखने अपन मराल गरदनिकेँ झटकाऱ्ॅ पाछाँ कय ओ वनकन्या अपन पहाड़ी झरना सन मीठ हँसीसँ कोठरीकेँ बिहुँसा देलकै।

'चेचाछिश केनो रे बाबू?' (किएक चिचिआइ छी बाबू), फेर अपन माथ पर हाथ धय, नकली खोंखी कय अपन नाड़ी पकड़ि हुनका बुझा देलकनि जे घाघूकेँ बोखार छै, आब ओएह काज करतै।

जंगली घाघू अजीब मूर्ख अछि। अपन एहि चञ्चल सुंदरी बेटीकेँ एकटा परदेशी युवकक कोठरीमे ओ कोना पठा देलकै!

तकर बाद त’ थोड़बे कालमे चाँदमनी हुनकर कोठरीक छतकेँ कोनो प्रचंड गतिक साइक्लोन जकाँ उड़ा क’ राखि देलकनि। पहिने खूब उत्साहसँ लाल जूता पर कारी पॉलिश पोति देलकनि। जुत्ताक दुर्गति देखि, जाबत ओ छिनबा लेल बढ़ला, ताबत नव लाल जुत्ताक अर्धांग कारी भ’ गेल छलनि। फेर स्टोवमे नहि जानि कतेक बेर पम्प क’ देलकै कि किरासन तेलक फुहार छोड़ैत स्टोव क्रोधित साँप जकाँ फुफकारय लागल। खौझायल सिंह जल्दीसँ स्टोव मिझेलनि आ ओकरा इशारासँ दूध आ पावरोटी देखा देलखिन आ ओकरा चलि जाय लेल कहलखिन। ई सब छै ओ खा लेता। मुसुकि क’ ओ तेना बैसि गेल, जेना सब बात बूझि गेल हो। तहन ई बैसल किएक? 'तुई बोलेलिश खा। '(अहाँ कहलहुँ–खो)ओ बाजल।

हाय रे दुर्भाग्य! पता नहि, किछु के किछु बुझय वाली ई बताहि, कखनो

कोनो अनर्थ ने क’ बैसय। खा-पी क’ चाँदमनी हुनकर भोजनव्यवस्थामे लागि गेल। नहि जानि कतयसँ ढेरी रास शुकटी (सुखायल गेल छोट माँछ) आँचरमे ल’ अनने छल, ओकरे जल्दीसँ तेलमे भूजि लेलक आ अरबा चाउरक भात रान्हि टेबल पर प्लेट लगा, ढेर रास गायक गरम घी भात पर उझीलि देलकनि। जाबत ओ खाइत रहला, ताबत ओ भनसा-घरमे नुकायल रहल। भरिसक ओकरा बुझा गेलै जे ओकर उपस्थिति संकोची पाहुनकेँ भरि पेट नहि खाय देतनि।

ओ हाथ धोबा लेल उठला त’ बापे जकाँ चिलमची, जग, तौलिया लय आबि गेल। तसलामे गारा-सीमेंट ढोअयवाली कोना ई सभ सीखि गेल छल।

तीने दिनमे ओ कर्मपरायण सुंदरी सेविका अपन निःस्वार्थ सेवासँ डॉ सिंहकेँ तेना जीति लेलकनि कि जकर वन्य उपस्थिति युवा डॉ केँ खौंझा दैत छलनि, आब ओकरे अयबाक समय होइ त’ हुनकर आँखि स्वतः ऐना दिस उठि जानि। पहिल दिन जे छाती आ पीठकेँ उघार रहलाक कारणे लाजसँ लाल भय नाइट कोट तकबा लेल बेहाल भ’ गेल छला आब ओएह अपन पौरुषक दर्पण ओहि किशोरीक आँखि पर दय, ओकरा चोन्हिया देथिन आ ओ मुग्धा हुनकर उघार छातीकेँ एकटक देखय लगैन्हि। डॉक्टरीक पढ़ाइ बिनु पूरा भेनहुँ भरिसक नव प्रेमिकाकेँ प्रभावित करबा लेल ओकर बापक पसली ठोकि-पीटि एकटा छोट-मोट पुरजा सेहो लिखि आयल छलखिन। चाँदमनीक पैघ आँखि प्रशंसामे विस्फारित भए आर पैघ भ’ गेल छलै।

कखनो-कखनो रंग-रभसमे डूबि चूल्हि पर चढ़ल माछ जरय लगै। जरबाक गन्ध पाबि ओ माछ उतारय लेल भागय त’ युवा प्रेमी ओकरा फेर आलिंगनमे बान्हि लेथिन।

अद्भुत देह-गंध छलै ओहि वनकन्याक! नव बनि रहल बँगलाक सोन्ह-सोन्ह गन्धे ओकरा देहमे बसि गेल छलै वा काँच ताड़ीक रसक मादक सुगन्धि छलै ओकर साँस-उसाँस मे? केहन सरल निष्काम आत्मसमर्पण छलै ओकर! एक बेर तरुण डॉक्टरक संस्कारी चित्तक अधमरल विवेक

विरोधमे गर उठाय आपत्तिओ कयने छलनि- ‘ई अहाँक सरासर अन्याय अछि, कियै परिणामसँ आँखि मूनि रहल छी? एहि निर्दोष अनुभवहीन किशोरीक सँग कएल गेल ठकपनी की भरि जिनगी अहाँकेँ त्रास नहि देत?' मुदा चौबीस बरखक उद्दाम यौवन, चारू दिस जंगलसँ घेरायल अतिथिगृह आ डूबैत साँझमे सोलह वर्षक अनुभवहीन किशोरीकेँ देखि विवेक हेरा गेलनि। क्रूर नियति दुनूकेँ पतनक गर्तमे खसा देलकनि।

चाँदमनी चन्द्रपात मनिये जकाँ तेजस्विनी बनल जा रहल छल। सातम दिन घाघू स्वस्थ भए आबि गेल। चाँदमनीसँ ओ कखनो-कखनो ओकर पिताक उपस्थितिये मे चौल क’ देथिन!

'की घाघू कहिया क’ रहल छहक एकर विवाह? बीरू त’ कहि रहल छल जे अही वैशाखमे विवाह क’ एकरा ल’ जेतै। '

बीरू माँझिक नाम सुनिते ओ भड़कि जाय। घाघू किछु कहितै, ओहिसँ पहिने ओ कहय, 'बीरू मुखे आगुन(बीरुक मुँह मे आगि)। सात दिनक लेल आयल पाहुनकेँ बीस दिन भ’ गेलनि। आधा राति क’ निडर अभिसारिका बनि चाँदमनी रोज हुनका खिड़की लग ठाढ़ भ’ जाय। दू टा लम्बा-लम्बा हाथक डोरी ओकरा तेना ऊपर घीचि लै, जेना ओ कागजक फूल होइ। .

एक दिन ओकरा उठेबा लेल दुनू हाथ झुकलै त’ रोज जकाँ ओ ठाढ़ि नहि छलै। महुआ गाछक नीचाँ रद्द करैत चाँदमनी कनिए कालक बाद हँसैत खिड़कीक नीचाँ ठाढ़ भ’ गेल। 'आइ मौसी बहुत- रास रस पिया देलक, तही द्वारे मन घूमि गेल। 'कहि जोर सँ हँसय लागल।

डॉ. सिंह भरि राति सूति नहि सकला। की मौसीक पियायल ताड़िएक रससँ ओकर मन घूमल छलै? भगवान करथिन ओएह होइ-भरि राति ओ यैह मनबैत रहला। दोसर दिन सूति क’ उठिते ओ अपन सामान बान्हि लेलनि। ताहि दिन चाँदमनी अपन मौसीक सँग शिउड़ीक मेलामे रस बेचय जा रहल छल। अपन जयबाक गप चाँदमनीसँ बिनु कहने ओ चुपचाप निकलि गेला। विदा हैबा काल घाघूक हाथ मे सौ-सौक दू टा नोट द’ देलखिन। कॉलेज-फीसक लेल राखल दू सै घाघूक हाथमे दय ओहि मूर्ख

स्वार्थी युवककेँ लगलनि जे ओ संसारक सब सँ उदार व्यक्ति छथि।

एतेक रुपैया! सरल घाघू अचम्भित रहि गेल। एहन टिप त' ओकरा जमींदार साहेबक अतिथियो कहिओ नहि देने छलखिन। चाँदमनीक विवाहमे लगा दिहक। फेर बुजुर्ग जकाँ बजला- 'आब विवाहमे देरी नहि करिहें घाघू! '

फेर तेसरे मास डॉ सिंह पिताकेँ अपन विवाहक स्वीकृति द' देने छलखिन। एतेक वर्षसँ अपन वैभव आ प्रभुताक मद सँ आन्हर बनल ओ जानिए-बूझि क' अतीतकेँ अपन मजगूत बाँहिसँ ठेलैत रहला, मुदा आइ ओहि मजबूत बाँहिक शक्ति समाप्त भ' गेल छलनि। जाहि सरला किशोरीकेँ ओ असहाय अवस्थामे छाड़ि भागि आयल छलखिन, जकर निःस्वार्थ आत्मसमर्पणक यादि सुखक क्षणमे भरिसके कहिओ आयल हेतनि, ओही श्यामल चेहरा पर जड़ल दू टा करुण आँखिक मौन उपालम्भ आइ अपन चरम दु:खक क्षणमे बताह बना देलकनि। अपन निरुपायता, आवारापन हुनका धिक्कारय लगलनि आ ओ फेर ओही बिसरल गाम दिस पड़ेला।

गाम पहुँचैत साँझ भ' गेल छलनि। पन्सारीक एकटा छोट-छीन दोकान छलै। ओहि ठाम एकटा पैघ-सन डिपार्टमेंटल स्टोर ठाढ़ छलै। जमींदार साहेबक पता पुछनाइ व्यर्थ छलै, ओ संथाले गाम दिस बढ़ि गेला। ओएह वेणुवन आ एके साइजक, परेड-सन करैत झोपड़ी सभ। बड्ड अन्हार भ' गेल छलै। अचानक विलापक करुण स्वर सुनि ओ थकमका गेला।

"आ बलाई चाँद रे–सोना!"(रे बलाई चाँद रे–सोना)

हुनक सर्वाङ्ग सिहरि उठलनि। धीरे-धीरे ओ चोर जकाँ आगाँ बढ़ि खिड़कीसँ हुलकी मारलनि। पहिने हुनका मोनमे अयलनि, ओहो जोरसँ चिकरि उठथि। छोट सन कोठरीकेँ पूरा घेरने जे लम्बा लाश पड़ल छलै, ओ त' हूबहू मृत्युंजये सन छलै। की ओएह पिताकेँ चमत्कृत करबा लेल एक बेर फेर अरथीमे बन्हाय लेल आबि गेल छल? ओएह चेहरा, देहक ओएह गढ़नि आ ओएह श्यामल कान्ति! ओकरा चारू कात घेरा जकाँ

बनौने संथाल स्त्री सभ ठेहुनमे मूड़ी देने, करुण सिसकीक ओहने लयबद्ध संगीत प्रस्तुत कय रहल छलीह, जेहन छत पीटबा कालमे करैत छलीह। लाशक सोझाँ ओंघड़ाइत मायक बगलमे बैसल आदमी बहुत सम्हारि क' ओकरा उठेलकै आ डॉ सिंह माटिक देबार पकड़ि लेलनि। बूढ़ बीरू माँझीकेँ ओकर घनगर उज्जर मोंछोक बीच ओ चीन्हि गेलखिन।

"नहि कान चाँद, तोरा कनलासँ की आब ओ घुरि एतौ?"

बताहि चाँदमनी फेर ओंघड़ा क' खसि पड़ल।

डॉ सिंह घुमला आ तेजी सँ भागय लगला। कनी काल लेल ओ भरिसक मानसिक संतुलन हेरा बैसल छलाह। हुनका लगैत छलनि, जे उन्मत्त संथाल भीड़, मृत बलाइक लाश लय हुनका खेहाड़ि रहल छनि। हुनका पकड़ि, ओ सभ हुनके कन्हा पर अरथी टिका देतनि। हँफैत घामसँ लथपथ जखन ओ बोलपुर पहुँचला त' सब पैसेंजर गाड़ी जा चुकल छल।

स्टेशन मास्टरसँ पुछलखिन त' ओ कहलकनि- "एखन कोनो गाड़ी नहि जेतै साहेब।"

"मुदा हमरा त' एखने जयबाक अछि"-फाटल स्वरमे ओ बजला।

छौंड़ा सन स्टेशन मास्टर ओहि विक्षिप्त सन लोकक प्रश्नक उत्तरमे कहलकनि, "यार्डमे एकटा मालगाड़ी अवश्य ठाढ़ छै। आठम दिन कलकत्ता पहुँचतै, मोन हो त' ओहीमे चलि जाउ।" मुदा ओकर व्यंग्य बुझबाक अवस्थामे ओ नहि छलाह।

"धन्यवाद, धन्यवाद।" कहैत रोज एयरकंडिशनर गाड़ीमे यात्रा कैनिहार सुरुचि-संपन्न स्वामी चोर जकाँ एम्हर-ओम्हर तकैत, सत्ते मालगाड़ीक डिब्बा मे बैसि गेला। सहयात्री छलनि पैघ-पैघ दाढ़ी वाला दू टा बकरा आ चारि टा गाय।

सब चौंकि क' ओहि डेरायल-सहमल यात्रीकेँ देखलकनि, फेर पाउज करैत पैघ-पैघ करुण आँखि वाली गाय सींगसँ स्वीकृति द' देलकनि, जेना सब किछु बूझि गेल होइ।

अंजर-पंजर हिलबैत मालगाड़ी चलल।

बकराक संग-संग ओहो धक्का खा क' खसला, फेर खुजल तिनकोनमा खिड़की पकड़ि क' बैसि रहला। खिड़कीक ओहि भूरसँ कतेक वर्ष पहिनेक परिचित स्टेशन सब एकाएकी हाथ मिला गेलनि। मुस्करा, बोनपास, तालित आ भेदिया, भीजल घास आ गोबरक मिलल-जुलल सुगन्धि, हुनका संसारक सर्वश्रेष्ठ सुगन्धि लागय लगलनि। ओ अपन आँखि मूनि लेलनि। लगमे ठाढ़ दढ़ियल बकरा हुनकर ठेहुन चाटय लगलनि। भरिसक एक पशु दोसर पशुकेँ चीन्हि गेल छल। हिलैत मालगाड़ीक कम्पनसँ, गायक गराक घंटी बाजि रहल छलै। डॉ सिंहकेँ लगलनि, ओ कोनो पवित्र देवस्थलमे बैसल छथि आ मन्दिरक छोट-छोट घंटी बाजि रहल होइ।

"हमरा ई दण्ड किएक देलहुँ प्रभु?"

पंद्रह दिन पूर्व, जवान बेटाक अरथी पकड़ि, ई मूर्ख विधाताक न्यायालयमे नालिश कयने छलखिन। जे भरि जिनगी कहिओ अपन जन्मदातोक स्मरण नहि कयलनि, ओही नास्तिक संतानक कमजोर मुकदमाक निर्णय देबा लेल भरिसक ओ न्यायप्रिय न्यायाधीश हुनका एतेक दूर ल' अनने छलखिन।

मृत्युदण्ड सुनि, बहुत अभियुक्त चेहरा पर स्वयं रूमाल बान्हि लैत अछि।

डॉ सिंह कँपैत ठेहुनमे अपन मुँह नुका लेलनि।

सपना आ सत्य

बहुत पहिने हम एकटा किताब पढ़ने छलहुँ, 'द प्रॉफेटिक ड्रीम्स '। ओहि किताबकेँ पढ़ि तखन विश्वास नहि भेल छल। एहनो कतौ सम्भव छै कि निन्नमे देखल सपना जीवनक वास्तविकता बनि जाय? मुदा एक दिन हम स्वयं एहन सपना देखलहुँ, जे हमरा जीवनमे अविस्मरणीय भ' गेल।

तहिया हम बेंगलूरुमे छलहुँ। एक राति आँखि लगिते हम एकटा विचित्र सपना देखलहुँ। बहुत तेजीसँ हम कत्तहु जा रहल छी-चारू कात रेलक पटरी बिछल छै। ओकरा नँघैत हम एकटा जंगलमे पहुँचिते छी कि मेघ गरजय लागल आ पानि पड़य लागल। रेलक पटरी सभकेँ नँघैत हम एकटा जंगल मे पहुँचले छलहुँ कि एकटा दुब्बर सन, श्याम वर्णक नाम युवती हमर रस्ता रोकि ठाढ़ भ' गेली। ओ मुँहसँ किछु नहि बजै छथि मुदा नवजात बच्चाकेँ कोरामे नेने हमरा दिस बढ़ैत छथि। नील रंगक बेंगलूरी साड़ीमे लपटल ओहि गोर दकदक बच्चाकेँ हम आश्चर्यसँ देखैत रहलहुँ। चमकैत बिजुरीक इजोतमे ओहि युवतीक चेहरा हमरा स्पष्ट देखा रहल छल। ओकर बज्र कारी रंग, रातुक घोर अन्हारमे घुलि-मिलि गेल छलै। दुनू दिस छेदायल नाकमे तीन-तीन नग बला हीराक दू टा छक झिलमिला रहल छलै।

ढेका खोसल दक्षिणी रेशमी साड़ीक चौड़ा जरी, डाँड़मे बान्हल सोनक भारी डरकस आ स्वयं ओकर व्यक्तित्वक गरिमा ओकर सम्भ्रान्त कुलक परिचय द' रहल छलै। ओकर दुनू ठोर काँपि उठै छै, मुदा वाणीक विवशता, ओकर कारी कपोल पर नोरक धार बनि बहय लगै छै। फेर बिनु किछु कहने, कनैत बच्चाकेँ हमरा पएर लग राखि, तेजीसँ ओहि जंगलमे बिला जाइत अछि।

हम चौंकि क’ जगबे नहि कयलहुँ, सपनाकेँ सत्य बूझि गोरथारीमे बच्चाकेँ टोहियाबय लगलहुँ। ठीक एक्के मासक बाद, ओएह सपना हम फेर देखलहुँ। मुदा एहि बेर हमर पल बन्न नहि छल, ने हम अपनामे एतेक साहस पौलहुँ जे पएर लग पड़ल ओहि परित्यक्त बच्चाकेँ फेर टोहियाबी।

जिनगीक कतोक वसन्त आयल आ चलि गेल, मुदा ओहि वसन्तकेँ हम आइ धरि नहि बिसरि सकल छी, भरिसक कहिओ बिसरिओ नहि सकब। मेघसँ भरल आकाशकेँ देखिओ क’ हम घरसँ बहरा गेल छलहुँ। सभ दिनक संगी पितियौत बहिन मुन्नीकेँ सेहो हम संग नहि केलियै। ओहि भुवनमोहिनीक संग रहलासँ बीसो तरहक रोक-टोक रहैत छल।

हमर ओ बहिन अपूर्व सुन्दरी छल। संग रहैत छल, त’ माँ एहन सुन्न-मसान रस्तासँ जयबा लेल कहैत छल जे पहुँचइयेमे घण्टों लागि जाइत छलै। पुस्तकालय ठीक सात बजे बन्न भ’ जाइत छलै। तहिया बेंगलूरु छावनीमे आयल बनरमुँहा आस्ट्रेलियन सेनाक टुकड़ीक आतंकक डेराओन खिस्सा रोज सुनबामे अबैत छल, मुदा बेंगलूरुक ओहि शान्त भव्य पुस्तकालयमे बैसि अलभ्य विदेशी पत्रिका पढ़बाक लोभ हम नहि रोकि सकलहुँ, आ घरसँ एसकरे निकलि गेल छलहुँ।

शेषाद्रिपुरमसँ पुस्तकालयक एकटा शॉर्टकट रस्ता हमरा विशेष प्रिय छल। एकटा पैघ सन बंजर मैदान पार कय, अगल-बगल बिछल रेलक पटरीक रहस्यमय योग-वियोग उचकि-उचकि क’ नँघैत, रेस-कोर्सक लम्बा रस्ता कनिए कालमे कटि जाइत छल। रस्ता एकदम बीहड़ आ सुन्न-मसान होइतो रेसिडेन्टक महल सन ऊँच ऊँच मकानक गुलाबी छत देखाइत रहैत छलै। ओहि विराट घेराकेँ घेरने बन्दूक नेने सिपाही सभकेँ देखि हम सभ दिन निर्भय बढ़ल चलि जाइत छलहुँ।

पुस्तकालय पहुँचि पढ़ैत-पढ़ैत एकदम साँझ भ’ गेलै। संगहि टिप-टिप पानि सेहो पड़य लगलै। तैंयो हमर प्रिय एकपेरियाक बजाहटि हमरा ओही बाटसँ घुरबा लेल विवश क’ देलक आ हम बगलमे किताब दबने तेज चालिसँ विदा भेलहुँ। कनिए दूर गेल छलहुँ कि जोरसँ पानि पड़य लगलै।

एखन धरि एम्हर-ओम्हर उड़ैत मेघक टुकड़ी सब मिलि क’ पूरा आकाश घेरि लेलकै। घटाटोप अन्हार कोनो दुर्मुख दैत्य जकाँ मुँह बेने, बहुत तेजीसँ हमरा दिस बढ़ल आबि रहल छल। बेर-बेर चमकैत बिजुरीक उदारतेसँ हम ओहि कठिन रस्ता पर बढ़ि रहल छलहुँ कि बहुत लोकक पएरक आवाज सुनि हम ठमकि गेलहुँ।

जोरक हँसी आ भारी बूटक आवाज सुनबामे हम गलती नहि कयने छलहुँ। निश्चय ओ फौजी टुकड़ी हेतै। खून जमि गेनाइ ककरा कहै छै, एकर अनुभव हमरा जीवनमे पहिल बेर भेल। आगाँ पसरल बियाबान जंगल, बहुत दूर टिमटिमा रहल सिगनलक दम तोड़ैत लाल-हरियर बत्ती आ धीरे-धीरे लग अबैत निर्मम विदेशीक बूटक आवाजसँ मिलल-जुलल मदमत्त हँसी! बिजली एखनो ओही उदारताक संग चमकि रहल छल, आ सँगहि निशाँसँ अलसायल कण्ठसँ निकलल गीतक आवाज-

'ही इज ए जॉली गुड फेलो
ही इज ए जॉली गुड फेलो।
एन्ड सो से ऑल ऑफ़ अस। '

गीतक आवाज हमरा लग अबैत जा रहल छल। बगलक किताब छातीसँ सटने हम एकटा नारंगी फूलक छितरल झाड़ीक पाछाँ दुबकि गेलहुँ। जँ ओ टुकड़ी ओहि झाड़ीक सोझाँसँ निकलल आ तखनहि जँ बिजली चमकल, त’ ओ सभ हमरा निश्चय देखि लेत। फटाफट एक सँगे फौजी चालि चलैत ओ सभ झूमैत-गबैत चलि अबैत छल। झाड़ीक पाछाँ नुकायल हम थर-थर काँपि रहल छलहुँ। ताल मिला क’ चलैत ओ सभ कखन आगाँ बढ़ि गेल, हम बूझि नहि सकलहुँ। अही बीच बिजलिओ चमकलै, कड़ाकसँ कतौ खसबो केलै, मुदा स्नेहसँ भरल माय जकाँ अपन फाटल आँचरसँ झाँपि क’ ओ झाड़ी हमरा बचा लेलक।

बिजली खसिते वर्षाक वेग बहुत बढ़ि गेलै। हमर साड़ी भीजि क’ देहसँ सटि गेल आ भागनाइ असंभव भ’ गेल। ठेहुन धरि भीजल साड़ी समेटने, हम कहुना चलल जाइत छलहुँ कि बच्चाक कानब हमरा रुकबा

लेल विवश क’ देलक। एहन तेज वर्षामे नव जनमल बच्चाकेँ ल’ क’ के बताहि एहि जंगलमे आबि गेल छल?"के अछि?"-हम पुछलियै। अन्हारमे हाथ केँ हाथ नहि सूझैत छलै, मुदा फेर हमरा लागल जेना ठीक हमरा पएरे लग केओ ओहि कनैत बच्चाकेँ सुता गेल अछि।

"के?" हम फेर पुछलियै। एहि बेर जवाब भेटल बिजलीक इजोतसँ। नान्हि टा दुनू मुट्ठी कानसँ सटेने, नील रंगक रेशमी कपड़ामे लेपटल ओ नाँगट बच्चा चिचिया रहल छल। बिजली फेर चमकलै, ओहि बच्चाक विदेशी गोराइ आ नीलकमल सन आँखि देखा हमरा तृप्त क’ देलक। ओह! एहने बच्चा त’ हम सपनामे देखने छलहुँ! एकदम यैह सोन सन वर्ण आ नील आँखि! ओ फौजी टुकड़िये की एकरा एहि ठाम छोड़य लेल आयल छल? आ कि सपनामे देखल ओ उदास माय?

हम ओत्तहि बैसि क’ ओकरा कोरामे उठब’ लगलहुँ कि गिरगिट सन फिसलैत बाँहिक स्पर्श सँ हम सिहरि उठलहुँ। तहिया ओहि फिसलैत मक्खनी स्पर्शकेँ बुझबाक हमर अवस्था नहि छल। किछु वर्षक बाद, जखन हम स्वयं माय बनलहुँ, तखने ओहि स्पर्शक रहस्य बुझलहुँ। ओ छिछलब धरती पर तुरत जनमल बच्चाक छिछलब छलै, मुदा एहन सुन्दर बच्चाकेँ के पाथर एना छोड़ि गेल हेतै?

मोन भेल, ओकरा कोरामे उठा जल्दीसँ घर भागि जाइ, मुदा तत्क्षणे एकटा आशंका त्रस्त क’ देलक। नारी जन्मक विवशता हमरा पहिल बेर नागिन जकाँ डसि लेलक। हम जँ एकरा घर ल’ गेलियै त’ की घरक लोक हमर सहृदयताकेँ स्वीकार करत? बहुत पहिने एक बेर हम सड़क पर पड़ल देशी कुकुरक बच्चाकेँ घर नेने गेल छलियै, त’ कतेक बिगड़ाइ पड़ल छल! माँ कहने छली..."एकर आँखिओ नहि खुजल छै, के पोसतै एकरा?" मुदा तइयों रुइक फाहासँ दूध पिया क’ हम ओकरा पोसि नेने छलियै।

मुदा कुकुरक बच्चाकेँ पोसब कतेक आसान छै, मनुक्खक दुधमुँहा बच्चाकेँ पोसब कतेक कठिन! कुकुरक बच्चाक कुल-गोत्र समाज नहि मांगै छै, ओकर पिताक परिचय ओकर जीवन लेल अनिवार्य नहि होइत

छै, मुदा मनुक्खक शिशु लेल जनकक अभिमान ओकर प्रत्येक साँसक लेल अनिवार्य भ’ जाइ छै। आइ अही जंगलमे, नील साड़ीमे लपटल एहि कनैत बच्चाक संग हमरा केओ पकड़ि लिए, तखन?

हमर स्वार्थ, सत्रह वर्षक अल्प वयसोमे हमरा उचित-अनुचित बुझनिहार वयसगर स्त्री बना देलक। हम ओहि बच्चाकेँ ओत्तहि छोड़ि उठलहुँ आ शीघ्र गतिसँ आगाँ बढ़ि गेलहुँ। वर्षामे भीजैत, बिजलीक कड़कड़ाहटिकेँ चीरैत, ओहि असहाय नाँगट बच्चाक हृदयकेँ द्रवित करै बला कानब, हमर पीठमे असंख्य भाला भोकैत, हमरा खेहारि रहल छल। खसैत-पड़ैत, हँफैत घर पहुँचलहुँ त’ पूरा परिवार हमर फज्झति कर’ लागल।"केहन मूर्ख छें तों! एहन बरखा-बुन्नीमे केओ बहराइ अछि! कनियों आरो देरी होइतौ त’ थानामे खबरि देबय पड़ितै। शहरमे गोरा सभक केहन आतंक छै, नहि बूझल छौ?

हम कोना कहितियनि कि एहन वर्षामे हमहीं टा नहि, केओ आरो घरसँ बहरायल अछि। हम त’ साँझो क’ घर आबि गेलहुँ, मुदा ओ भरिसक कहिओ नहि आबि सकत! हम कइएक दिन धरि स्थानीय अखबारक एक-एक लाइन पढ़ि गेलहुँ मुदा जंगलमे पड़ल, वर्षामे भीजैत कोनो लावारिस बच्चाक समाचार नहि भेटल।

हम कतेक बेर अपनाकेँ आश्वासन देबाक व्यर्थ चेष्टा कयलहुँ। भ’ सकैत अछि अंतमे ओहि अभगली मायक विवेक जागि गेल होइ आ ओ बच्चाकेँ ल’ गेल होइ! बिलाड़िओ त’ कखनो काल अपन छोड़ल बच्चाकेँ मुँहमे दाबि उठा क’ ल’ जाइ छै। इहो भ’ सकै छै ओ जनमौटी बच्चा ओही रस्तासँ जाइत कोनो संतानहीन पथिकक पुत्र बनि गेल होइ!

मुदा अंतरात्माकेँ ठकनाइ की एतेक आसान छै? एखनो जखन सपनामे देखल ओहि उदास मुँह वाली युवतीक करुण आँखि मोन पडैत अछि, त’ हम दलमलित भ’ उठै छी। आइयो हम भ्रममे छी-ओ स्वप्न सत्य छल अथवा ओहि बरसाती साँझक आंखि देखल घटना?अथवा मनक कायरता नुकेबाक लेल स्वप्नक बहन्ना!

कालू

आइसँ तेइस वर्ष पहिने शान्तिनिकेतनक उपासना-गृहक रंगीन लाल-हरियर शीशासँ अबैत माघी सूर्यक इन्द्रधनुषी किरण रंग-रसक जाल बुनि रहल छल। माघोत्सवक उपासनाक सभापतित्व स्वयं गुरुदेव कय रहल छला आ आश्रमक नव विद्यार्थी कालू पहिल बेर अपन मधुर संगीतसँ आश्रमवासी सभकेँ आत्मविभोर क' रहल छल अपन गीत गाबि, जे ओकरा एक्कहि दिनमे प्रसिद्ध क' देने छलै...

'आमार हियार मान्झे
लुकिये छिले
देखते आमी पायनी तोमाय
देखते आमी पायनी'

(अहाँ हृदयमे नुकायल छलहुँ, मुदा हम अहाँकेँ देखि नहि सकलहुँ-हाय, देखि नहि सकलहुँ!)

'देखि नहि सकलहुँ' लाइन गाबि ओ अपन ज्योतिहीन आँखिकेँ आकाश दिस उठा दै, त' लगै ओ लयबद्ध रवीन्द्र-संगीतक संगीत-मुखर व्याख्या सेहो कय रहल अछि! केहन मीठ आवाज छलै! केहन मर्मस्पर्शी टीस! लगै छलै बचपन बहुत पहिने छूटिओ गेने ओकर कण्ठक काँच स्वरकेँ कैशौर्यक ओ बदलैत खनक नहि छूबि सकल छै।

ओ अचानक कतय सँ आबि गेलै, केओ नहि जानि सकलै। केओ कहै- गलीमे गबैत छलै, एकर गीत सुनि गुरुदेव अपना सँगे नेने एलखिन। केओ कहै- गुरुदेव कहाँ अनलखिन! अपने आश्रमक पता पुछैत-पुछैत आबि गेलै। केओ इहो कहय जे बिना टिकट यात्रा करैत, गबैत रेलमे भीख मँगैत पकड़ल गेल छल!

किनको ओकर कण्ठ-स्वरसँ ईर्ष्या होइत छलनि त’ किनको ओहि नेत्रहीन लग जुटल रंगीन छात्राक भीड़ देखि ओकर सहज सौभाग्य पर अनेरो द्वेष। ओ के छै, कत’ सँ आयल छै? ई सभ प्रश्न हमरा सभक लेल वर्जित छल।

हमर फ्रेंच वार्डन हमरा सभकेँ डाँटि क’ कहने छली- एक टा नीक विद्यार्थी अहाँ सभक बीच आबि गेल अछि, की एहिसँ अहाँ सभकेँ सन्तोष नहि अछि? दोसर दिनसँ एक-न-एक विद्यार्थी ओकर लाठी पकड़ि ओकरा भोजनशालामे पहुँचा जाइत छलै। भोजनशालामे आश्रमक सभ छात्र-छात्रा एक्के संग भोजन करैत छल। भोजनक बाद ओ प्रायः एकटा नीम गाछक सहारा नेने अपन संगीक प्रतीक्षा मे ठाढ़ रहैत छल। ओत्तहि हमरा ओकरा सँ पहिल बेर भेंट भेल छल। दुब्बर-पातर आ हँसमुख तेहन कि हँसी पहिने देखाय पड़य, कालू बादमे।

हम एक दिन ओकरा पुछलियै-अहाँ बहुत बढ़िया गबै छी कालू! की हिंदी भजन सेहो गाबि सकै छी? ओ अपन खाली दृष्टि हमरा दिस उठा देलक। हम चकित भय ओकरा देखैत रहलियै। के कहतै जे ओ आन्हर छै! अदमनीय उत्साह आ आनन्दक सहस्र किरण ओकरा आँखिसँ फूटि पड़लै।

"भजन, कीर्तन, बाउल, रामप्रसादी, झूमर, भगवतीक गीत-की सुनब, कहू? सभ किछु गाबि सकै छी हम। एक टा यैह गुण त’ भगवान देने छथि।" ओ उदास भए बाजल। तकर बाद त’ कालूकेँ देखिते हमरा सभक फरमाइश शुरू भ’ जाय।

ताहि दिन उत्तरायणमे वर्षामंगल उत्सवक रिहर्सल गुरुदेवक भतीजी इंदिरादेवी करबैत छलखिन। एक टा विशिष्ट गीतक बिना तहिया वर्षामंगल नहि भ’ सकैत छलै आ ओ गीत छल-

'मन मोर मेघेर संगी
उड़े चले दिक्-दिगंतेर पाने
निःसीम शून्ये
रिमझिम रिमझिम रिमझिम। '

वर्षाक आवाहनक एहन मधुर-मीठ स्वरलिपिकेँ गबिते लागय, जेना वर्षाक बुन्न रिमझिम करैत आश्रमकेँ भिजा रहल छै। एहि गीतक अंतरा खाली छात्रक दल गबैत छलै। तारसप्तकमे जतए कुण्डमुण्डा रेड्डीक मांसल कण्ठक आवाज गूंजैत छलै, ओत्तहि हमरा दलमे कालू अपन मिसरी सन कण्ठक मिठास घोरि क' राखि दै। ओ चारिम कालाक स्वर मे गबैत छलै, जाहिमे प्रायः छात्रा सभ गबै छथि, ओकरा हमरे सभक पाँतिमे बैस' पड़य।

नहि जानि कोन अमानवीय घ्राणशक्तिसँ हमरा सुँघैत ओ हमरे लग आबि क' बैसि जाय। हम ओकर तेज दिमाग, संगीत-स्वरक असामान्य पकड़ आ स्मरणशक्ति देखि आश्चर्यचकित भ' जाइ छलहुँ। रवीन्द्र-संगीतक स्वर-लिपिकेँ हमरा कतेक बेर प्रयास क' सीखय पड़ैत छल।

ताहि पर इंदिरादेवीक संगीत-शिक्षा कोनो साधारण गुरुक संगीत-शिक्षा नहि छलनि। एक-एक मुरकी-कम्पनकेँ सोनार जकाँ तराजूमे तौलि-तौलि क' हमरा सभक कण्ठमे उतारैत छलथि। 'नील अंजन घन पुंज छायाय' सन कठिन वर्णाक्षरी, बेर-बेर कॉपीमे देखि कण्ठमे खीच' पड़ैत छल। ओही ठाम जन्मसँ आन्हर ओ दुब्बर-पातर अनपढ़ किशोरकेँ कविता आ स्वरलिपि तुरत कंठस्थ भ' जाय।

एक टा बात आरो छलै, लड़की सभक कण्ठस्वरक बीचो ओकर असाधारण कण्ठस्वर एकदम अलग रहैत छलै आ कखनो-कखनो त' छात्र सभक परुष तार-स्वरक बीच कोनो दक्ष कथाकार जकाँ अपन मधुर-स्वरक 'दुगुन' स्रँ 'ट्रिक एंडिंग' केर आनन्द दै।

"ढाकाक कव्वाल सभकेँ हम एक बेर एना करैत सुनने छियै, "ओ कहै- ओ सभ छोट बच्चाकेँ अपना संग दुगुना स्वरमे गाबय दैत छलखिन। सुननिहारकेँ सुनबामे अपूर्व आनन्द अबै।"

कालूकेँ विधाता आँखि नहि देने छलखिन, मुदा ओकर जाहि दिव्यदृष्टिक आभास हमरा एक दिन भेटल, ओ देखि हम चकित रहि गेलहुँ। की सभ आन्हरकेँ विधाता एहन तेसर आँखि खोलि दैत हेथिन? आश्रमक कोनो उत्सवक भीड़सँ निकलि हम तेजीसँ श्रीभवन दिस जा रहल छलहुँ।

अचानक कालू पर नजरि पड़ि गेल। ओ नीम गाछसँ टिकल ठाढ़ छल। हाथमे लाठी नेने चुपचाप अपन डिम्भा रहित आँखिसँ टुकुर-टुकुर ताकि रहल छल।

हम सोचलहुँ, एक त' ओहिना हॉस्टल पहुँचबामे देरी भ' रहल अछि, ताहि पर जँ कालूसँ गप्पमे ओझरा जायब, त' भरिसक ओकर लाठी पकड़ि ओकरा कलाभवन धरि पहुँचाबय पड़त। स्पष्ट छलै कि ओकर लाठी पकड़ै बला ओकरा धोखा देलकै।

बिना एको शब्द बजने हम चुपचाप ओकरा लगसँ आगाँ बढ़ले छलहुँ कि ओ हँसल-"वाह! ठकि क' भागि रहल छलहुँ गौरा दीदी! नहि जानि नीलमाधव कतय रहि गेल? कहि गेल छल, नीम गाछ तर ठाढ़ रहिहें। कती कालसँ त' ठाढ़ छी। नहि जानि एखन की दन पएर परसँ सर्र स' निकलि गेल! सोचलहुँ, कतौ गोखरू महाशय ने होथि-"

ओ जोरसँ हँसल आ हम लाजे मरि गेलहुँ। कतेक स्वार्थी छी हम! एकटा आन्हर बेबस मित्रक लाठिओ पकड़ैसँ पहिने हमरा अपन स्वार्थे देखायल। आश्रमक गोखरू आ केवट सर्पक महिमा ककरा नहि बूझल छलै। हमरा ओकरासँ पुछबाक इच्छा भेल-कालू, तों हमरा कोना चिन्हलें? तोरा लग कोन एहन शक्ति छौ? मुदा हम किछु नहि पूछि सकलियै। एक बेर हम एहन मूर्खता क' चुकल छलहुँ। एक दिन हँसिये-हँसिये मे हम कालूसँ पुछने छलियै-"कह त' कालू, हम केहन छी? नाम कि भुट्ट, गोर कि कारी?"

"अहाँ नाम छी, , गोर छी आ हमरा बुझाइ अछि अहाँक आँखि कुरि अछि।"

ओ कोनो दार्शनिकक गंभीरतासँ कहलक, त' हम जोरसँ हँसय लगलहुँ।"ऊँह, केओ कहने होयत!" हमर बात सुनि ओ उदास भ' गेल।

"भगवानक किरिया खा क' कहै छी हमरा केओ नै कहने अछि। हम सभकेँ देखि सकै छी। ओ एहन स्वरमे कहलक जे हम अकचका क' ओकर आँखिक पुतरीकेँ गौरसँ देखलियै।

नहि, ओकर दुर्भाग्यक अन्हार दुर्गमे इजोतक एकटा क्षीणो किरण

विधाता नहि रह’ देने छलखिन। ओ निपट्ट आन्हर छल! हम ओकर लाठी पकड़ने ओकरा नेने जा रहल छलियै आ ओ कहैत जा रहल छल-"हम नील आकाश देखने छियै, हरियर सागवानक गाछ देखने छियै, आश्रमक सागवानक वीथिका देखने छियै, बोलपुर स्टेशनक धुआँ छोड़ैत करिछौंह इंजन देखने छियै।"

ओ कहिते जा रहल छल कि ओकर संगी ओकरा अचानक भेटि गेलै। कालूक ठेंगा ओकरा दय हम जाय लगलहुँ त’ ओ फेर सोर पाड़लक-"सुनै छी गौरा दी, सभ फूसि अछि, एकदम फूसि। हम किछुओ नहि देखने छी। ने नील आकाश, ने गाछ, ने इंजन।" उदासीमे डूमैत ओकर स्वर ओकर लाठीक ठक-ठक संग बिला गेलै।

कालू एकदम कारी छल। भरिसक ताही द्वारे लोक सभ ओकर नाम 'कालू 'राखि देने छलै। कारी होइतो ओकर आँखि-नाक सुन्दर छलै। सभसँ बेशी ओकर सदाबहार हँसी सभकेँ मोहि लैत छलै। आश्रमक छात्रा सभक ओकरा पर विशेष कृपा छलै। एक त’ ओकर अद्भुत मधुर कण्ठक आकर्षण, ताहि पर नेत्रहीन कैशौर्यक विवशता छात्रा सभकेँ द्रवित कय मुग्ध क’ दैत छलै।

कोनो-कोनो विद्यार्थी ओकरा व्यंग्यसँ आहत क’ दैत छलै, त’ ओ उदास भ’ जाय।"जानै छी, फल्लाँ विद्यार्थी की कहैत छल? कहै छल, हे यौ कृष्ण, अहाँक त पाँचो आँगुर घीमे अछि। एतय त’ आँखि रहितो केओ नहि पुछैत अछि आ एकटा अहाँ छी जकर लाठी पकड़ने एक-सँ-एक सुंदरी उर्वशी चलि अबैत अछि!"

छोड़ कालू, "किछु लोक बहुत नीच होइ छै!"हम कहियै..."अतुल प्रसादक नबका गीत सुना न, जे एहि बेर सिखने छें-"

नब गीतक चर्चा होइते ओ सभ कष्ट बिसरि जाय आ कोनो बच्चा जकाँ मस्त भए लाठीक ठक-ठक बजबैत गाबय लागय-

'यदि आमार दिवा-राती
केटे जाबे बिना साथी

सबे कैनो
बन्धूर लागी !
मिछे पथ पाने चावा
कत गान तो होलो गावा
आर मिछे कैनो गावा। '

(जौं हमर दिन-राति बिना संगिये के कटय वला अछि, तहन हम किएक ओहि संगीक रस्ता देखि रहल छी? कतेक गीत त गाबि चुकल छी। आब अनेरे कखन धरि गबैत रहू?)

देखैत-देखैत, ओकर अगल-बगल भोजनालयक कर्मचारीक भीड़ जमा भ' जाय। पुरान नौकर हरिहर, नगेन, प्रभाकर बेटाक शोक सँ टूटल सरोजिनी दीदी, हुनकर बच्चा, पुतौहु रानू-सब मंत्रमुग्ध नाग-जकाँ झूमय लागथि। ओहि आन्हर आँखिक केहन करुण निवेदन छलै!

अंतमे नोर भरल आँखिसँ हम ओहि दिनक स्मरण करै छी, जहिया नौ वर्षक आश्रमक शिक्षाक बाद हमरा घर अयबाक छल। कतेको स्नेही मित्र सभ, गुरुजन सभ विदा करय आयल छलाह। प्रेमसँ खुआबै वाली सरोजिनी दीदीक ममतासँ भरल आँखि, बूढ़ रसोइया हरिहर, आश्रमक दुब्बर'. पातर भुजंग दा जिनकर नाम-नाम आँगुर टाइपराइटर पर थिरकैत हमर सभक मोन मोहि लैत छल, कतेक संग पढ़निहार संगी सभ आ हुनका सभक बीच ठाढ़ कालू। सुन्दरसँ सजा क' लिखल गेल अक्षर सभक बीच, जेना अस्तित्वहीन सेमीकोलन!

ओएह कालू, जकरा भीड़क उदासीक बीचसँ घीचि, ओकर लाठी पकड़ि हम कतोक बेर, ओकर गन्तव्य स्थान तक पहुँचा देने छलियै। ओएह कालू, जे हमरा बिनु देखने जानि गेल कि हम गौर आ नाम छी आ हमर आँखि कुइर अछि।

"कालू, आइ हम जा रहल छी।" हम एतबे कहि सकलियै।

"हमरा बूझल अछि।" ओ गम्भीर स्वरमे बाजल।

आश्चर्य! कालू कोना जानि गेल?

कलकत्तामे जापानी जहाज बम खसा देने छलै आ घंटा भरिक भीतर यू पी केर सब विद्यार्थीकेँ घर चलि जयबाक आदेश भेटल छलै।

हम पुछलियै-"तोरा के कहलकौ, कालू?"

हँसैत अपन लाठी ठकठका क' ओ कहलक-"ई।"

"अच्छा कालू, भगवानक इच्छा होयतनि त' पौषक उत्सवमे फेर भेंट होयत।" ओकर दुनू हाथ अपना हाथमे पकड़ि हम ओकरासँ विदा लेलहुँ।

आश्रमक पौषक मेलामे सब साल पहिलुक छात्र-छात्राक मेला जुटैत छलै। ओही मेलामे भेँट होयबाक व्यर्थ आश्वासन हम ओकरा द' रहल छलियै।"नहि, ओतेक दूरसँ आब की अहाँ आबि सकब? कोनो बात नहि, पौषक मेलामे नहिओ, परलोकक मेलामे त' भेँट हयबे करतै न गौरा दीदी!"

ओ हँसल, मुदा हमरा लागल जेना ओकर हँसी एकटा सिसकी बनि हेरा गेलै।

समय भ' गेल छलै। हम बसमे बैसि गेलहुँ। कालू ओही नीमक गाछसँ सटल ठाढ़ हमर बसक दिस ताकि रहल छल, जतय हमरा पहिल बेर ओकरासँ भेँट भेल छल।

किछु वर्ष पहिने, आश्रमक एकटा पूर्वक छात्र कहलक जे कालू नहि रहल! की भेल छलै, हम नहि पूछि सकलियै। ओ ठीके कहने छल, कोनो पौषक मेलामे हम ओकरासँ नहिए भेँट क' सकलियै। मुदा परलोकक जाहि विराट मेलामे भेँट होयबाक गप ओ कहने छल, ओ ओकरा कहिओ नहि बिसरत, ई हमरा बूझल अछि। ओहि ठाम कतबो भीड़ किएक नहि होइ, ओ हमरा ताकिए लेत। ओहि आन्हर दुब्बर-पातर किशोर केँ ठकि क' हम भागइओ चाहबै, त' ओ हँसि क' कहत-"वाह, गौरा दीदी, ठकि क' भागि रहल छलहुँ न? हम सभकेँ देखि सकैत छी। अहाँ गौर छी, नाम छी, अहाँक आँखि कुइर अछि। अछि न गौरा दीदी?"

हम कतबो हृदयहीन किएक नहि होइ, फेर ओकर लाठी पकड़ने बिना कि हम रहि सकब?

गलती

कलकत्ताक चमक-दमक वाला सड़ककेँ चीरैत, गिरीशक कार "तिवारी मैंशन "क गेट पर रुकल आ ओहि मकानक भव्यता देखि ओ अचम्भित भ’ गेला। स्टेट्स के 'स्काई-स्क्रेपर्स’ देखबाक अभ्यस्त तरुण इंजीनियरक आँखि सेहो क्षण-भरिक लेल चोन्हिया गेलनि। संगमरमरक दू टा विशाल हाथी, अपन भव्य सूँढमे गृहस्वामीक नामक अंकित पाटी थमने छल, चौकोर टुकड़ा पर अंकित छलै-'-श्री कृष्णचन्द्र तिवारी'। अचानक गिरीशकेँ अपन अल्पज्ञताक ज्ञान भेलनि, किएक ओ अपन पिताक कहलासँ एतय अयबाक निश्चय कएलनि?कोनो होटलमे सेहो रहबाक व्यवस्था भ’ सकैत छलै। हुनकर कक्काक बेटा राजेन्द्र त’ सावधान सेहो क’ देने छलखिन, 'बचि क’ रहब, तिवारीजी बड्ड चतुर छथि। हमर सार विलायतसँ आपिस एलाह त’ हिन्दुस्तान मोटरमे नौकरी भेटलनि। तिवारीजी तेहन जाल पसारलनि जे तेसरे मास अपन नांगड़, कुदरूप बेटी हुनका पल्ला बान्हि देलखिन। मुदा गिरीशकेँ एहि बातक भय नहि छलनि, कारण ओ स्वयं पर नियन्त्रण क’ सकैत छलाह। कनाडा, मॉन्ट्रियल, फ्रांसमे त’ एक सँ एक सुन्दरीक कटाक्षकेँ सरलतापूर्वक काँट जकाँ निकालि क’ फेकि देने छलाह। फेर चित्तरंजनमे त’ हुनका तीने मासक ट्रेनिंग लेबाक छलनि। तिवारीजी हुनकर पिताक बाल्यकालक सखा छथिन। कइएक वर्ष पूर्व अपन जन्मभूमिक ममता त्यागि कलकत्तेमे बसि गेल छलाह। मात्र मैट्रिक पास रहलाक बादो, ओ कलकत्ताक नामी व्यवसायी छथि। हुनकर कुशाग्र व्यवसायी बुद्धि भाग्यलक्ष्मीकेँ मुग्ध क’ नेने छलनि। ओ आब बिसरि गेल छला कि हुनकर पिता फाटल धोतीक लँगोटा कसि, कान पर जनऊ चढ़ा, हाथमे पचकल लोटिया ल’ क’ दिशा-जंगल जाइत छलखिन। आब

हुनकर बाथरूमक ऐना सन चमकैत फर्श दूधसँ धोअल सन लगै। पैघ-पैघ संगमरमरक बाथटबमे गुलाबक पंखुड़ी मसलि क' देलाक बादे, हुनकर दस-दस टा महिमामयी राजकन्या सब नहाइत छलखिन। 'डॉज', फिएट आ 'ब्यूकक' अतिरिक्त हुनकर दुआरि पर चारि टा चमकैत विक्टोरिया सेहो ठाढ़ रहैत छल। ओहि पर नीला लेस लागल जालीदार पर्दा लटका क', तिवारी-पत्नी राजमहिषी सन श्रृंगार कय नित्य घूमय लेल जाइत छली, किएक त' हुनका पेट्रोलक धुआँ बर्दाश्त नहि छलनि। मुदा लखपति तिवारीजीक हृदयमे नियति एक टा काँट घोपिए देने छलनि। कुमाउँक बिड़ला नामसँ प्रसिद्ध, लक्ष्मीक दुलारू पुत्रक सुखक कोषक एकटा भाग एकदम्मे खाली छलनि। हुनका बेटा नहि छलनि। सब साल बेटीक एक जोड़ा, हुनकर मोतीपुरा चौकमे कबूतरी जकाँ गुटरगूँ करय लगैत छल। असंख्य कबुला-पातीक बादो पाँचम वर्ष फेर एक जोड़ा पुत्री भेलनि आ ओ दस पुत्रीक पिता बनि गेला। मुदा अपन वैभवक बलेँ, ओ एक सँ एक पैघ पद पर प्रतिष्ठित जमाय आनि नेने छला। आठ पुत्रीक घोर कृष्ण-वर्ण, पिचल नाक, एतेक धरि कि कृष्णा आ कावेरिक गहनपेरू भेलाक बावजूदो हुनकर आई ए एस आ इंजीनियर जमायकेँ कोनो आपत्ति नहि छलनि। दहेजक भारसँ ओ जमाय सभक गरदनि दाबि क' राखि दैत छलखिन। माथ उठा क' नव-पत्नीक गुण-दोष परखबाक हुनका सभ लग समय नहि रहि जाइत छलनि। मुदा गिरीशकेँ हुनकर दुनू पुत्रीक आँखि-नाक सँ किछु नहि लेबाक छलनि। ओ नब-नब इंजीनियर बनि विदेश-यात्रासँ घुरल छला। हुनका सन सरल आदति वाला संयमशील पाहुन केँ रखबामे विशेष कष्ट नहि हैतनि, यैह सोचि क' भरि बाट अपनाकेँ सांत्वना दैत आयल छला। विदेशसँ तुरत लौटल सभ भारतीय जकाँ खाली काँच सलाद आ उसनल खेनाइ खाइत छला। अपन नायलॉनक कमीज स्वयं पाँच मिनटमे धो क' सुखा लैत छला। ने सिग्रेटक आदति आ ने शराबे सँ लगाव। भोरे-भोर चाय लेल ककरो कष्ट नहि देमय पड़नि, ताहि लेल अपना संग बिजलीक केटली रखैत छला। हुनका जखन कलकत्ता जयबाक आदेश भेटलनि,

त’ पिता कहलखिन-"अरे! अपन किशनियाक अछैत तोरा रहबाक की चिन्ता! कतबो होइ, अछि त’ अपनहि गामक। फेर हमहीं ओकरा हिसाबमे नक़ल करबा क’ मेट्रिक पास करबा देने छलिऐ। एहि बातकेँ ओ कखनो नहि बिसरैत अछि। तोरा बहुत प्रेमसँ रखतौ।"

सत्ते, हुनकर अत्यन्त आग्रहपूर्ण पत्र आबि गेलनि आ गिरीश कलकत्ता आबि गेला। स्टेशन पर चमचमाइत वर्दी पहिरने हुनकर ड्राइवर कार ल’ क’ आयल छलनि। विदेशसँ आनल अपन ग्लास-फाइबरक नीला सूटकेसक चमकसँ, ओ छोट सन अल्मोड़ाक सरल आत्मीय स्वजनक भीड़क आंखि चोन्हरा देने छला, मुदा आइ ओएह सूटकेस ड्राइवरकेँ देबा काल बड़ संकोच भेलनि। ड्राइवरक कोट पर तिवारीजीक गोल्डेन 'मोनोग्राम' चमकि रहल छलै। सूटकेसक संगक पोटरीकेँ ओ घृणासँ उठौलक। बेचारा गिरीश कटि क’ रहि गेला। सूटकेस साढ़े तीन सै के छलै आ पैघ सँ पैघ कलापारखी सेहो ओहिमे कोनो दोष नहि निकालि सकैत छलै। मुदा ठीक विदा होइ कालमे हुनकर पिता पहाड़ी दालि आ तीव्र सुगन्धि वाला पहाड़ी मसाला 'जम्बू'अपन बाल्य-सखा लेल एकटा मोटरीमे बान्हि देलखिन। सुदामाक स्नेह भरल मोटरीकेँ बेचारा गिरीश फैकिओ नहि सकला, मुदा ओहिसँ सूटकेसक पूरा व्यक्तित्व माटिमे मिलि गेलनि। ई एहने भेल जेना बढ़िया ट्वीड केँ कोट पहिरा क’ ओकरा माथ पर केओ लाल गमछा बान्हि देने होइ। तिवारीजीक प्रवेश द्वारसँ ओ भीतर गेला, एकटा माली मेंहदीक झाड़मे पानि पटा रहल छल आ भीजल मेंहदीक सुगन्धिसँ पूरा कोठी गमगमा रहल छलै। लम्बा गैलरी सँ ल’ क’ ड्राइंगरूम धरि देवारक शोभा देखिते बनैत छलै। लागैत छल जेना आधुनिक कला-प्रदर्शनीक सजल-सजायल कक्ष हो। कतौ-कतौ नारीक आधुनिक मूर्ति, कतौ पिकासोक वृद्ध चित्र, त’ कतौ ग्वालियरक गमलामे नागफनी सजा क’ राखल छल। बहुत लम्बा दूरी पार कय हुनका एकटा गोल कमरामे बैसाक ड्राइवर बाजल, "अहाँ बैसू, हम रानीजीकेँ बजा क’ अनै छियनि।"

ओह, रानीजी! गिरीश बेचारा संकुचित भ’ गेला। पोटरीकेँ सूटकेसक

अढ़मे नुका ओ एम्हर-ओम्हर देखलनि। कालीनक सोफ़ियाना रंगसँ मेल खाइत भारी पर्दा छलै। वायलिनक आकारक सोफा छलै। रेशमी गद्दाक छब सेहो अनूप।

"आउ, बौआ! अरे, अरे पएर किएक छूबै छी! आब ई सब के मानय छै? अहाँक काका चेम्बर ऑफ़ कॉमर्सक मीटिंगमे गेल छथि। अबिते होयता।"

मधुक चाशनीमे डूमल स्वरक मिठास गिरीशकेँ बान्हि लेलकनि।"आउ बौआ! अहाँ लेल चाय हम अहींक कोठरीमे मँगा नेने छी, ओत्तहि चलू।"

कइएक टा कोठरी पार कय एक टा गोल कोठरीमे गिरीशकेँ ल' गेलखिन। साफ कोठरीमे एक टा पलँग छलै। छोट सन टेबुल पर ट्रे राखल छलै।"बैसू बेटा, हम चाय बनबै छी।" कहि ओ अपन गोल-गोल हाथसँ चाय बनबै लगली।

"आह! अपन देशक कोनो चिड़ियाँ सेहो देखा जाय त' कतेक ख़ुशी होइ छै! तीस साल सँ एहि कलकत्तामे एहन फँसलहुँ कि पहाड़ देखै लेल आँखि तरसि गेल। की बेटा, आब त' पहाड़ बदलि गेल हेतइ?"

"हँ, गिरीश बजला- थोड़-बहुत त' बदलले छै।"

"हँ, से त' छैहे। हम कतबो बदलब, कहायब त' पहाड़िए कि न! की कहू बेटा! हमरा त' तैंयो अपन भाषा अबै अछि, मुदा ऐ छौड़ी सभकेँ नहि अबै छै पहाड़ी रीति-रेवाज! सभ एकदम बंगालिन बनि गेल अछि। तही द्वारे जखन पहाड़मे विवाह होइ छै, चारिए मासमे एकदम दुबरा जाइत अछि। सब त' पार लागि गेल, आब तिप्पी-दिप्पीक अंतिम जोड़ा बचल अछि।"

तिवारीजीक पत्नी तेना बजली, जेना कोनो नामी जूताक दोकानक चतुर सेल्समैन अपन दामी जूताक अन्तिम जोड़ा देखा क कहि रहल होइ कि कीनि लिय नहि त' इहो बिका जायत।

"ई हमर चारिम जोड़ी बेटीक स्टडी छल, बेटा।"एक लम्बा साँस घीचि गिरीशक कोठरीकेँ देखि क' बजली-"ई कृष्णाक बनायल 'कश्मीरक

उर्वशी 'क पेंटिंग देखि रहल छी न? तरुण कलाकार संघक दल ल’ क’ रूस सेहो गेल छल हमर कृष्णा। आ ई अछि हमर कावेरीक तानपूरा! कतेक सौखसँ संगीत सिखेने छलियै, सभ माटि भ’ गेलै। एकटाक विवाह भेलै अल्मोड़ा, दोसरक रानीखेत! अभागल कुमाऊंक लोकक बीच अदौड़ी-मुंगौड़ी बनबैमे पक्का पहाड़िन बनि गेल। लिय’, अहाँक कक्का सेहो आबि गेला।"

कार रुकल आ गिरीश जा- जा तटस्थ होथि ताबत तिवारीजी स्वयं हुनका कोठरीमे आबि गेला-"आबि गेलहुँ बेटा, हम त’ अहाँकेँ लाखो केर भीड़मे सेहो चीन्हि लितहुँ, एकदम अपन पिता सनक चेहरा अछि।"-ई बजैत गिरीशकेँ अपन बाँहिमे भरि लेलखिन।"चलू, पहिने भोजन क’ लेल जाय, एक बाजि गेलै।"ई कहि गिरीशकेँ डायनिंग रूम नेने गेलखिन। टेबल पर पैघ-पैघ चानीक थारी मे फूलल-फूलल पूड़ी-कचौरीक बीच चमकैत बाटीसँ तरकारीक सुगन्धि पसरल छलै। संगहि तिवारीजीक पत्नीक रसगर गपक क्रम चलि रहल छलनि-"ई अचार लिय’ बेटा, हमर कृष्णा बनौने अछि। ओ पापड़ मारवाड़ी रिलीफ सोसायटीसँ बनबौने छी। अरे, रायता नहि लेब? वाह! केहन पहाड़ी छी! दुइए टा पूड़ीमे अघा गेलहुँ! बहादुर, साहबकेँ बर्फ मिलाओल पानि दिऔन। रामसिंह, एकटा गरम कचौड़ी आन। श्यामसिंह, गिलौरी फ्रिजमे राखि दही।"

तिवारी-दम्पतिक स्नेह आ स्वादिष्ट व्यञ्जनक बाढ़िमे गिरीश डुबकी लगबै लगला। तिवारीजीक आतिथ्य नहि, बाबरक कुशल तुगलकी रणनीति छलनि। ओ चारू दिस सँ निरीह इंजीनियरकेँ घेरि बारुदक अन्तिम गोला फेकलनि-"आउ तिप्पी-दिप्पी, ई दुनू हमर सभसँ छोट बेटी आर ई हमर सभसँ प्रिय मित्रक बेटा।" हाथक कौर छाड़ि गिरीश अभ्यर्थना लेल उठय लगला, त’ तिवारीजी हाथ घीचि बैसा देलखिन।

"डोंट बी फॉरमल। घरमे केहन शिष्टाचार! तिप्पी! दिप्पी! एत्तहि बैसि जाउ बेटी!" कहि गिरीशक सोझेमे दुनूकेँ बैसा देलखिन। गिरीश एक्कहि बेर देखलखिन एहन सुगढ़ आँखि-नाक पहाड़मे कम्मे देखाइ छै। गोर रंग

त’ कुमाऊँ वासीक जन्मसिद्ध अधिकार छनि, मुदा पैघ-पैघ कटगर आँखि, पातर सुगढ़ नाकक नीचा फड़कैत ठोर, प्रत्यञ्चा सन भौं मे कामदेवक धनुषे साकार भ’ उठल छल। सभसँ बेशी आश्चर्यक गप जे दुनूक हँसीक छटा सेहो एक्के छलै। एके रंगक गुलाबी साड़ीमे लगै जेना खिलैत गुलाबक एक्के रंग दू टा पंखुड़ी होइ। नाम छलनि तृप्ति आ दीप्ति। हुनकर मायक कहब ठीके छलनि, नामे टा नहि, हुनकर हाव-भाव, एलोकेशी खोपा आ तांत साड़ीक भाँजोमे बंगभूमिक स्पष्ट छाप छलनि। हिनकर माय-बाप सेहो कोना चिन्हैत होयथिन? धीरे-धीरे स्वयं हुनका बुझबामे आबि गेलनि। तिप्पी-दिप्पीक अभिन्न व्यक्तित्वमे सेहो विधाता एकटा चेन्ह बना देने छलखिन। दुनूक पल रेशमी आ नोकगर छलनि। दूनूक प्रशस्त ललाटक गढ़नि एक्के छलनि। गोल ठुड्ढिक बनावटमे सेहो आश्चर्यजनक साम्य छलनि, मुदा एक गोटेक ठुड्ढी पर हल्लुक-सन कारी तिल छलनि। ओ तिप्पी छली। एकटा चेन्ह आर छलै, दिप्पी एको क्षण स्थिर नहि बैसय छली। कखनो फूलदान लगबय बैसि जाथि, त’ कखनो सुपारिक सराइसँ झपट्टा मारि एक मुट्ठी सौंफे फाँकि लेथि। तिप्पी चुप रहय छली, ओ अपन नाम-नाम आँगुरसँ अपन केशक लटसँ खेलथि, कखनो दार्शनिक- सन रहस्यमय डूमल नजरिसँ खिड़की दिस देखथि, कखनो अलसाइल पोसुआ बिलारि जकाँ सोफा पर पड़ि किताब पढ़ैत छली।

गिरीशकेँ एतय अयना एक मास भ’ गेल छलनि, तैंयो ओहि जौंआ बहिनिकेँ चिन्हबामे गलती कइए बैसथि। कखनो तिप्पीकेँ दिप्पी कहि देथिन त’ ओ लाज स लाल भ’ जाथि। अही लालीसँ ओ चीन्हि लेथिन। मुखरा दिप्पी अकारण कखनो कॉफी देबाक बहन्ने त’ कखनो अख़बार लेबा लेल हुनका कोठरीमे आबि जाथि, मुदा तिप्पी आँचर बचा क’ हुनका सँ बचि छिटकि जाथि, जेना घरमे आयल ओ पाहुन विष भरल तीर हो। तिप्पीक ओएह लाज भरल सौन्दर्य नहि जानि कखन गिरीशकेँ बान्हि लेलकनि।

एक दिन नहि जानि कोना, गिरीशसँ हरदम बचि क’ निकलि जाइ वाली तिप्पी कॉफी नेने हुनका कोठरीमे आयल। फागुनक महीना छलै,

बसातक प्रत्येक झोंकमे रंग-अबीरक रंगीनी छलै। गिरीश देखलनि, तिप्पीक सलज्ज दृष्टिमे प्रेमक दिव्य प्रकाश छल, जेना कहि रहल होइ- 'हम सभ दिन अहींक छी। अहींक रहब।' कॉफीक गिलास पकड़ि गिरीश ओकर सुकोमल बाँहि घेरि लेलखिन। पात जकाँ कँपैत क्षण-भरिक लेल ओ हुनका बाँहिमे रहलि, मुदा फेर एक झटकासँ हाथ छोड़ा तीर जकाँ छिटकि गेल। राति क' डाइनिंग टेबुल पर गिरीश कैँ देखिते तिप्पीक चेहरा बीरबहूटी बनि गेलै आ सभक दृष्टि बचा क' गिरीशकेँ सलज्ज दृष्टिसँ देखि फेर माथ निहुरा लेलक।

एक दिन सूति क' उठिते काकी कहलखिन-"दुनू बहिनकेँ खसरा निकलि गेलै, एकर सभक बचपनेसँ यैह हाल छै। एक गोटेक मोन खराब होइ छै त' दोसरो खाट पकड़ि लैत अछि।"

पन्द्रह दिनक बाद, दुनू बहिनकेँ डाइनिंग टेबुल पर देखि गिरीश अवाक् रहि गेला। ककरो चेहरा पर तिल नै छलै!

"भगवानक माया देखियनु बेटा, ठुड्ढिक तिल सेहो खसरा साफ क' देलकै। आब एकर सभक विवाह सेहो देखि-सुनि क' करै पड़त। आब अहीं चिन्हियौ त' के तिप्पी छै आ के दिप्पी?"

गिरीश आँखि उठेलनि आ एकटा चेहरा लाल पड़ि क' रहि गेल।"ई त' छथि तिप्पी।" लाल चेहरा दिस देखि गिरीश बजला।

"वाह बेटा, खूब चिन्हलियै! ई त' दिप्पी छै.."ओ हँसि क' कहलखिन, मुदा गिरीश सोचमे पड़ि गेला। हुनका देखि क' त' तिप्पी लाल पड़ैत छल।

आर एक दिन ओ अहूसँ पैघ गलती क' बैसला। तिवारी-परिवारक रसमय आत्मीय वातावरणमे तीन मास तेजीसँ बीति गेलनि। ओ अनमनायल जकाँ सामान बान्हि रहल छला। सँझुका गाड़ी सँ हुनका नव-नियुक्ति लेल दुर्गापुर जयबाक छनि।

"अच्छा, सामान बन्हाइओ गेल।' बहुत आत्मीयतासँ तिवारीजी कान्ह पर हाथ राखि कहलखिन-"देखू बेटा, अहाँसँ किछु कहय लेल आयल छी। अहाँक पिताक एकटा पत्र हमरा लग आयल अछि। आब अहाँसँ की

नुकाउ, हमहीं हुनका लिखने छलियनि जे यदि हुनका आपत्ति नहि होन्हि त’ हुनकर एहि अनमोल हीराकेँ चोरा क’ हम अपन गिरहमे बान्हि लेमय चाहै छी।"

फेर अपन रसिकतासँ स्वयं हो-हो कय हँसय लगला-तरुण इंजीनियरक हृदय धक्-धक् करय लगलनि।

"हमरा दू टा बेटी छथि, तृप्ति आ दीप्ति। आइ अहाँ जा रहल छी, अहाँक काकी किछु गोटेकेँ चाय पर बजा नेने छथि। ओही घरेलू चाय-पानिक बीच शुभ उत्सवक श्रीगणेश क’ लेब। ई औंठी सेहो अहींक पिता पठा देने छथि, दुनूमे सँ जकरा मोन हुअय, अहाँ औँठी पहिरा देबनि। अच्छा, तैयार त’ भ’ गेल छी, चलू ड्राइंग रूमेमे बैसब।"

प्रायः तिवारीजी घीचिये क’ ल’ गेलखिन, फेर पल झपकैते सभ किछु भ’ गेलै। श्री आ श्रीमती फुरदेशजी टाटा, गोयनका आ नहि जानि कतोक पैघ लोक उत्सुकतासँ देखि रहल छला। दुनू बहिन माथ निहुरेने एक्के सोफा पर बैसल छली। बीचमे साँस रोकने काकी छली, जेना हुनका भय भ’ रहल होइन जे हुनको बजलासँ हुनकर बेटी सभक आधुनिक स्वयंवरक मौलिकता नष्ट ने भ’ जाय।

विवश दृष्टिसँ गिरीश एक बेर देखलनि, दमयन्तीक स्वयंवरमे ठाढ़ देवता सभक छलनासँ बेशी दुरूह ई केहन भयंकर छलना छलै! केहन बताह छला ओ! तिवारीजीसँ समय सेहो माँगि सकैत छला। काकी सँ त’ कहिए सकैत छला जे तिप्पीकेँ ओ स्वयं औँठी पहिरा देथुन, मुदा कहल छै ने जे मनुक्खक जन्मसँ पूर्वे ओकर जन्म-मरण आ विवाहक लेख लिखा जाइ छै। दुर्भाग्यसँ गिरीशक जीवनक लेखामे गलतीसँ दिप्पीक नाम लिखा गेल छलनि। नहि जानि कखन ओ औँठी पहिरा देलखिन!

"हम अहाँकेँ कहैत रही न!" एतेक कालसँ बान्हल काकीक वाणीक संयम टूटि गेलनि।" विवाह हमर दिप्पीए के हेतै, हमर तिप्पी त’ पढ़ै लेल विलायत जायत।"

गिरीश स्तब्ध भेल बैसल रहि गेला। हुनका देखिते गुलाबी पड़ि जाइ

बला चेहरा एकदम उज्जर भए गेल छल। लोक सभ हुनका बधाई द' रहल छलनि, कैमरा फटाफट फोटो घींचि रहल छल, मुदा गिरीशकेँ ओहि साँझक यादि आबि रहल छलनि, जखन यौवनक तरंगसँ हुनकर तरुण हृदय आन्दोलित भ' उठलनि आ कोठरीक धूमिल इजोतेमे ओ एकटा सुन्दर चेहराक तिलकेँ चीन्हि नेने छलखिन। आइ विधाता ओएह चेन्ह छीनि हुनका सँग केहन परिहास कएलखिन!

तेसरे मास बहुत धूम-धामसँ गिरीशक विवाह भेलनि। बंगालक शहनाइक करुण स्वर आ विदाइगीतक उदासीसँ 'तिवारी-मैंशन' सिसकि रहल छल। नव कनियाँ अपन आठों बहिन-बहिनोइसँ विदा ल' चुकल छली।

"हाय! हमर तिप्पी कतय गेल, चारि दिनसँ बिनु खयने-पीने पड़ल अछि।" "जन्म सँ आइ धरि दुनू बहिन कहिओ फराक नहि भेल अछि।"

"गिरीशक समस्त उल्लास कपूर जकाँ बिला गेलनि। हुनकर नजरि गेटे दिस छलनि। पएरक आहट सुनि ओ चौंकि क' देखलनि। फूलल आँखि आ ओझरायल केश छितरेने, नहि जानि कखन तिप्पी बहिन लग आबि क' ठाढ़ भए गेलीह।

"अरे, माथ पर ई घाव कोना भ' गेलनि?" गिरीश देखिते पुछलखिन। सत्ते, भव्य ललाटक निर्दोष गढ़निमे, एकटा घावक चेन्ह छलै।

"पिछला मास रिक्शासँ खसि पड़लै, तिल गेलै त' भगवान दोसर चेन्ह बना देलखिन। आब एहि चेन्हेकेँ की हेतै, एक टा त' जा रहल अछि।"

कहि तिवारीजीक पत्नी विदा होइत कन्याकेँ देखि फेर सिसकै लगली। खाली तिप्पी प्रस्तरमूर्ति जकाँ अचल ठाढ़ि छलीह। गिरीश सोचि रहल छला-आह! ई घाव पहिने बनल रहितै! अलौकिक तेज आ सौन्दर्यक कान्तिसँ दीप्त तिप्पी एक्को बेर दृष्टि नहि उठेलक। गिरीश नहि देखि सकला-ओहि पैघ-पैघ आँखिमे उलहन छल कि क्षमा!

मँझिला भैया

प्रतीक्षालयमे एक कातमे सामान सभ रखबा, कुसुम कुर्सी घीचि क’ बैसि गेली। बैसला उत्तर एक नजरि प्रतीक्षालय मे उपस्थित आन स्त्रिगणकेँ देखलनि। एकटा मोट सन ललाइन अपन नकली रेशमी साड़ी चमकबैत, टिफिन कैरियरसँ लड्डू आ निमकी निकालि जबरदस्ती अपन बच्चाकेँ खुआ रहल छली। दोसर दिस एकटा एंग्लो-इंडियन लड़की बेर-बेर अपन पर्ससँ टिकट निकालि ओकरा उनटि-पुनटि क’ देखि रहल छली आ बीच-बीचमे अपन सुखाएल ठोर पर लिपस्टिक लगा रहल छली। पंखा फुल-स्पीडमे चलि रहल छलै, तैंयो नहि जानि केहन उम्मस छलै। कुसुमक बेंतक टोकरी आ सुराहीकेँ सरिया क’ राखि प्रतीक्षालयक आया कुसुम लग घुसकि अयलनि। आया ओही तरहक छल जाहि तरहक महिला प्रतीक्षालयमे प्रायः होइ अछि। पान-जर्दासँ ओकर मुँह भरल छलै। कुसुमकेँ पूछि बैसलनि- ‘सरकार! देहरा सँ जेबै न? एखन त’ पूरा, पाँच घंटा अछि। कतौ घूमि-फिरि आउ न। हम सामान देखैत रहब। काल्हि एक टा मिस साहेब त’ सिनेमा देखि अयली। बहुत बढ़िया सिनेमा लागल छै- 'दिल तेरा दीवाना।'

कुसुम किछु नहि बजली, एहन लोक सभसँ मुँह लगायब हुनका सोहाइ नहि छलनि। मुदा बीसे मिनटमे ओ उबिया गेली। एक-दू टा पत्रिका सेहो अनने छली, मुदा सब बेकार छलनि। ललाइन अपन बेटाकेँ लड्डू आ निमकी खुआ-खुआ क’ अकच्छ क’ देने छलखिन। ओम्हर ऐंग्लो-इंडियन लड़कीक ट्रेन खुजबाक समय भ’ गेल छलै। ओ समान उठबाक' चलि गेल। आया ठीके त’ कहि रहल छल, किएक नहि ओ मिस मिश्रासँ भेंट क’ आबथि। दुनू गोटे एकहि संग एल. टी. केने छली। माधुरी मिश्रा बहुत

आनन्दी स्वभावक छली! हमरा देखि बहुत प्रसन्न होयती। मिस मिश्राक बात सोचिते कुसुमक करेजमे स्मृतिक तीर जकाँ बेधि देलकनि। केहन पागल छथि ओ! एहि शहर मे की मिस मिश्रे टा हुनकर परिचिता छथिन? आ मंझिला भैया! मनमुटाव भ' गेलाक बादो रक्त-मांसक सम्बन्ध थोड़े ख़तम भ' जाइ छै। अचानक हुनकर दृष्टि सामने टाँगल ऐना पर पड़लनि-की बनि गेल छली कुसुम जोशी? के कहि सकैत अछि, बहुत साल पहिने एक अपूर्व लावण्यमयी नीलोत्पल-लोचना किशोरी, अही चमड़ाक सोफा पर बैसि अही ऐनामे अपन गुलाबक फूल सन चेहरा देखि स्वयं मुग्धा बनि गेल छली। यैह चेहरा छलै, यैह ऐना सेहो, मुदा कोनो वंचक मित्र जकाँ आइ ओएह ऐना हुनकर परिहास क' रहल छलनि।

बाबूजी रिटायर भ' क' पहाड़ जा रहल छथि, माँ बेर-बेर समान गिनि रहल छथि। सामाने की छल-एकटा ईमानदार मध्य- वर्गीय अध्यापकक पूरा जीवनक लेखा। कारी, फीका, रंग उतरल पेटी-बक्सा। समयक मारि सँ जर्जर भेल खाट, कोनो साहेबक बँगलाक नीलामसँ कीनल गेल बेमेल बूढ़ कुरसी। मंझिला भैया एक कोनामे बैसल अपन कोनो किताबक अध्ययनमे तल्लीन छला आ आराम कुरसीक लकड़ीक बाँहि पर अपन पातर-पातर पएर पसारने, बड़का भैया नाकसँ नकटी निकालि-निकालि देवार पर साटि रहल छला कि बाबूजीक नजरि हुनका पर पड़ि गेलनि। ओ चिकरला-अरे ओ मूर्ख, ईडियट कहीं के! आ एकटा सहमल हँसी हँसि बड़का भैया कुसुम लग ससरि गेला। डाँट पड़लाक बाद ओ प्रायः छोट बहिन लग आबि जाथि, जेना डपटल कुकुर मालिकक पएर लग बैसि जाइत अछि। आइओ बड़का भैया रहित ओहि कुरसीकेँ देखि क' कुसुमक आँखि डबडबा गेलनि। बड़का भैया तीन बेर मैट्रिकमे फेल भ' क' घरमे बैसल छला। हुनका मिर्गीक भयानक दौरा पड़य लागल छलनि, तही द्वारे पढाइ छोड़बा देल गेल छलनि। बड़का भैया हुनका लग आबि क' बैसले छलखिन कि हुनकर दृष्टि, विजिट इंडियाक चित्र सभक बीच टाँगल ऐना पर पड़लनि आ पहिल बेर हुनका अपन चेहरा पर गर्व भेलनि। हुनकर पीसी प्रायः

माँकेँ कहैत छलखिन-'भौजी, अहाँक बेटीक आँखिमे साहबी नीलम कोना जड़ि गेल?' बेचारी पीसी की जनैत छली जे हुनकर अभगली भतीजीकेँ ओहि असली नीलमक जोड़ीक गुणी जौहरी कहिओ नहि भेटतनि! हुनकर माय नहानक छलखिन आर नहानक स्त्रिगण अपन सौन्दर्य लेल प्रसिद्ध छथि। मातृकक नोन-पानिसँ कुसुमक तारुण्यो लहलहा उठल छलनि। अपन सोलह वर्षक एकहरा देहक फुलझड़ी जकाँ छोड़ैत जखन ओ एहि वेटिंगरूममे आयल छली, त कतेक टिकट-चेकर निरर्थक सीटी बजबैत घुरिआय लागल छल। हुनकर रूपक सदैव यैह हाल छलनि। माय हुनका झँपैत-झुपैत बड़बड़ा उठथि-'मरि जाय ई छौंड़ी! कत्तहु ल' जाउ, मरलाही आँखिमे गड़' लगै छै!' आ तखन कुसुम ततेक उद्विग्न भ' जाथि जे मोनमे अबनि जे ओ कोयला सन कारी किएक नहि भेली! आ आइ? चेहरा ततेक खराप भ' चुकल छनि जे ओहि सौंदर्यक अवशेषो नहि देखाइत छनि। शिक्षा-विभागक दीर्घ सेवा हुनकर सौन्दर्यक खंडहरो नहि रहय देलकनि। आधा सँ बेशी केश पाकि गेल छलनि। राति-दिनक दौरा चेहराकेँ श्रीहीन क' देने छलनि। फ्रस्टेटेड अध्यपिका सभक निरन्तर सहवास हुनका चेहरा पर क्रूर अमिट रेखाक रूपमे अपन इतिहास लिखि देने छलनि जकरा इच्छा भेलो पर अपन भुवनमोहिनी हँसीक रबरसँ नहि मेटा सकैत छली। आब ओ हँसी सेहो कत्त' रहि गेलनि, आब ओ छलै एकटा कुशल रीजनल अफसरक व्यंग्यात्मक हँसी, जाहिसँ हुनकर सुखाएल ठोर पर दफ्तरक सील मोहर जकाँ लागि जाइत छलै। आइओ ओ कुसुमजोशी जीवित रहि सकैत छली जँ मँझिला भैया बीचमे नहि पड़ितथि। आइ फेर की ओ ओही मँझिला भैयासँ सन्धि क' लेथु?

मँझिला भैया हुनका घरक मुकुटमणि छलखिन। अध्यापकक संतान कहिओ ख़राब नहि निकलै छै। बाबूजीक अध्यापन-कालक सन्तुलनक प्रतीक छला मंझिला भैया। जखन स्कूलमे छला, त' गणितक साध्य हुनका लेल भात-दालिक कौर छलनि। जखन यूनिवर्सिटीमे गेला त' टॉपर रहला, मुदा जखन सुखक समय आयल त' बाबूजी चलि गेला। बाबूजीक खेतक

लहलहाइत फसिल छला मॅझिला भैया, जकरा ओ हाड़-मांससँ सींचि-सींचि क' पोसने छला। घुँघराइल केश बला मदन जोशी मॅझिला भैयाक अंतरंग मित्र छलनि। ओकर चेहरा लम्बा छलै आ ओहि चेहरा पर तानि क' मढ़ल सन गोर चमड़ी, जाहि पर एकहु टा रेखा नहि छलै। ठाढ़ नाक आ बरद सन पुष्ट कन्हा झुमबैत, प्रत्येक गर्मीछुट्टी ओ कुसुमे एतय बितबै छल। मदनक माय-बाप नहि छलखिन। काका-काकी सभ गाममे रहैत छलखिन, ताहि द्वारे जखन यूनिवर्सिटीसँ आबय, त'अल्मोड़ाक सीमान्त पर बसल कुसुमक मकाने ओकर अड्डा बनैत छलै। बाबूजीक मृत्युक बाद कठोर संघर्षक सामना करैत हुनकर परिवार आगाँ बढ़ि रहल छल, तखने हुनकर परिचय मदन सँ भेलनि। संघर्षक बीच मामूलिओ परिचित लोक घनिष्ठ भ' जाइ छै, तथापि ओ कुसुमसँ संकोचेसँ बजैत छल। अही बीच एक दिन पोखरिमे माछ मारैत बड़का भैयाकेँ मिरगीक दौरा हुनका अभिशप्त जीवनसँ मुक्त क' देलकनि। जाहि व्यक्तिसँ कुसुमकेँ छाड़ि आन केओ सहृदयताक व्यवहार नहि करैत छल, अचानक सभ हुनका लेल शोक-विह्वल भ' गेल। हुनका प्रति कएल अवहेलना आ अनादरक बोध माँ आ मंझिला भैया लेल गुरुतर भ' गेलनि आ कुसुम त' बेर-बेर बड़का भैयाक अरथीसँ लिपटि क' बताहि जकाँ भ' गेली। तखने एकटा पुष्ट बाँहिक बन्धन हुनका छोड़ा क' भीतर सुता देलकनि। ओ स्पर्श हुनकर हृदयक भीतर नुकायल आगिकेँ भड़का देलकनि। कुसुमक सौंदर्य चाहला पर कोनो पाषाणहृदय व्यक्तिकेँ पघिला सकैत छल। धीरे-धीरे दुनू गोटे एक-दोसराकेँ चीन्हि लेलनि। पहिने चोरा-नुका क' कनी-मनी गप्प भेलनि, फेर चिट्ठी चलय लगलनि। एक दिन नहि जानि कोना मदनक एक टा चिट्ठी मॅझिला भैयाक हाथमे पड़ि गेलनि आ ओ कुसुम केँ मारैत-मारैत बेदम कय पछुआड़क कोठरीमे बंद क' देलखिन। कुसुमकेँ कहलखिन-नालायक छौंड़ी, हमर सभक नाक कटेबें! जनै छें, हम सभ कतेक ऊँच जोशी छी! आ तों ओहि श्राद्ध-तर्पण करबै वला जोशीक बेटाकेँ वरबें? आइ दिनसँ तोरा सभके एक सँगे देखबउ त' नीक नहि हेतौ! फेर त' देखबाक नौबते

नहि एलै। मदन विदेश चलि गेल आ विदेशी मुद्राक बन्हनमे एहन फँसल कि ओत्तहि एकटा फ्रेंच लड़कीसँ विवाह क’ लेलक। मॅझिला भैया, जे गायत्रीक जपसँ अपन टूटल मकानक छत गुञ्जबैत छला, कुलक मर्यादा आ निष्ठाक पैघ-पैघ गप अचानक बिसरि गेला। कुसुम एम. ए. कए एल. टी. क’ चुकल छली, आ ओम्हर आई. सी. एस. मे प्रवेश पबिते मॅझिला भैया एकटा प्रख्यात वणिक् उद्योगपतिक बेटीक़ें बियाहि अनलनि। माँ छाती पीटि-पीटि क’ केश नोचि लेलनि आ आँगनमे ओंघड़ा-ओंघड़ाक’ मृत बाबूजीसँ कुपुत्रक कुख्यातिक नालिश सेहो कयलनि। .फेर कतोक वर्ष अहिना नीरस बीति गेल। पुत्र केर जन्मोत्सव पर मॅझिला भैया बहुत उत्साहसँ माँकेँ बजौलखिन, त’ माँ पसीजि गेली। कुसुम मोने-मोन मायक उदारता पर क्षुब्ध छली, तथापि चपरासीकेँ संग कय मायकेँ पठा देलखिन। तहिया कुसुम प्रिंसिपल छली। फूलदार पेटी, तुलसीक गमला आ ठाकुरजीक विस्तृत परिवार समेटि माँ बहुत उत्साहसँ विदा भेली। एक टा मोटरी मे बहुत रास मेवा सेहो कुटवा क’ ल’ गेल छली, मुदा बेचारी माँ! तेसरे दिन आपिस आबि गेली। रहितथि कोना! भौजीक असंख्य कैक्टसक गमलाक बीच माँक तुलसीक गाछ कोना पनपैत? भनसीया मुसलमान छलै आ आया चमारिन। आपिस आबि क’ आठ दिन धरि माँ गायक गोंतसँ नहाइत रहली। एकर बाद माय-बेटाक सम्बन्धक डोरीकेँ नियति क्रूरतासँ काटि देलकनि। एक-दू बेर सै टकाक मनीऑर्डर सेहो मॅझिला भैया पठौने छलखिन, मुदा कुसुम ओकरा आपिस क’ देलखिन...छूटल गामसँ कोन सम्बन्ध!

केहन आश्चर्यक गप जे आइ एतेक वर्षक बाद एहि परिचित ऐनामे अपन मुँह देखिते पिछला जीवनक परदा जेना एकाएक स्वयं उठि गेल होइ। एक बेर मंझिला भैयाकेँ बहुत-किछु सुनेबाक इच्छा भेलनि। माँ मृत्युशय्या पर छली। हुनका मुँहक कैंसर भ’ गेल छलनि। मृत्यु कखनहुँ आबि सकैत छलनि। माँ अपना मुँहे कहिओ किछु नहि कहलनि, मुदा के एहन माय होयती जे मृत्यु-शय्या पर रहैत एक बेर पुत्रक मुँह देखबाक कामना नहि

करती! मंझिला भैयाक नव वैभव आ समृद्धिक समाचार प्रायः केओ-न-केओ सुनबनि, त ओ खिसिया क' कहथि-'चूल्हि मे जाय ओकर अफसरी! हमरा ओहि सँ की? लंकामे सोन छै, त ओहिमे हमर बापक की अछि? हमर त' कुसुमे कमिश्नर अछि। ई नहि रहैत, त जीवन नर्क भ' जाइत।' मुदा कुसुम मायक व्यथा जनैत छली। बेटी कतबो करती तैंयो बेटिए रहती ..आर अकर्मण्य पुत्र सेहो मायक गौरव बनल रहता। मायक लेल कुसुम तापसी जीवन ध' नेने छली। ने ओ कत्तहु घूमय जाथि, ने सिनेमा। कतेक शौक़ीन छली ओ! केहन-केहन सौख छलनि। जहिया दूए टा साड़ी छलनि तहिओ ओ कलफ अबरख पिया-पिया क' बदलि-बदलि क' पहिरैत छली। आइ तसर आ सिल्कक बहुतो साड़ी अछैत कत्त' पहिरैत छथि! आब त' तृष्णे बूढ़ भ' गेल छनि। मॅंझिला भैयाक प्रति हुनकर तामस दिन-दिन बढ़ले जाइत छलनि। की मायक प्रति हुनकर कोनो कर्तव्य नहि छलनि?

आइ ओ अवश्य जयती। एकाएक ठाढ़ भ' गेली आ आयाकेँ कहलखिन, "अहाँ समान देखब, हम कनी शहर घुमने अबै छी।"

आर अपन बिना कोर वाला बदामी साड़ीक भाँज ठीक करैत ओ ऐना लग चलि गेली। चेहरा ठीक ओहने रुक्ष आ क्रूर देखाइ छलनि जेहन एकटा अनुभवी रीजनल इंस्पेक्ट्रेसक लगै छै। मनक घाव जँ शरीरक घाव जकाँ देखायल जा सकितै, त' आइ ओ मॅंझिला भैयाकेँ देखा दितथिन जे हुनकर दशा राणा साँगासँ सेहो हीन छनि आ हुनकर प्रत्येक घातक घावक लेल ओएह उत्तरदायी छथि! ओ त' मात्र अपन अफसरी टेबुलक मर्द बनि क' रहि गेल छथि।

रिक्शा पर बैसि क' कुसुम विदा भेली। ठंढा हवाक झोंकासँ अशान्त चित्त कने शान्त भेलनि। कइएक टा सड़क पार केलाक बाद हुनकर रिक्शा एकटा आलीशान लाल कोठीक बाहर रुकलनि। पर्स खोलि क' आरामसँ रिक्शा बलाकेँ पाइ देलखिन आ अपन पुरुषाही जूता खटखटबैत बढ़ि गेली। ओहि दुर्दान्त महिलाक दुःसाहस देखि अर्दली बढ़िक' पुछलकनि, "ककरासँ भेंट करबाक अछि, मिस साहब?"

"साहब छथि?" कुसुम कड़ा आवाजमे पुछलखिन।" हँ छथिन त, मुदा–" "ठीक छै, हमरा हुनके स भेंट करबाक अछि। ई कार्ड हुनका द दहुन।" कहैत-कहैत हुनकर मोन भरि अयलनि। मॅझिला भैयासँ भेंट करबा लेल ओ कार्ड पठा रहल छथि!

"अरे कुसुम! वाह! आ, आ!" मॅझिला भैया मुस्काइत असोरा पर ठाढ़ छला। एक टा पन्द्रह-सोलह वर्षक लड़का ब्लेजर झाड़ि रहल छल। अच्छा, त' यैह हुनकर भातिज छनि! कुसुम पएर छूबि क' मॅझिला भैयाकेँ प्रणाम कएलनि। भातिज अपरिचित पीसीकेँ देखैत ब्लेजर झाड़ैत रहल।

"बैस-बैस, तोहर भाउज अबिते हेथुन, तैयार भ' रहल छथि। बात ई छै जे आइ हमर किछु विदेशी अतिथि आबि रहल छथि।"

ओह, त' मंझिला भैया सत्ते साहेब बनि गेल छथि। कुसुमकेँ अपना आँखि पर विश्वास नहि भेलनि, धोतीक ढेका खोंसने, हाथमे जनेउ लपेटने, नाकक एक दिस हाथसँ दबने संध्या करैत ब्राह्मण-पुत्रक चित्र धूमिल होइत ओही क्षण मेटा गेलैन।

"जानै छें कुसुम! हम आइ-काल्हि ई सभ लेबय लगलहुँ अछि। दिन-राति विदेशी अतिथि अबैत रहैत छथि, आब हिनका सभक बीचमे गरदनिमे रुद्राक्षक माला पहिरि, तुलसीक चाय पीबि त' अफसरी नहि चलैत। ई सब करैए पड़ै छै।" एकदम सूटेड-बूटेड बेयरा ट्रे नेने आयल।"आब देखही, ई ब्रैंडी गोवा सँ मंगबौने छी। चलतै?"

कुसुम घृणासँ मुँह फेरि लेलनि त' मॅझिला भैया जोर सँ हँसै लगला- "बताहि नहितन, जहर थोड़े द' रहल छिऔ। ले, तोहर भाउज आबि गेलखुन। तों हिनका पहिने देखने रहिथुन, त' हमर पसिन्नक लोहा मनितें। आब त' ई उजड़ल दिल्ली छथि। की, छै न, डार्लिंग?" भौजी कनि तमसायल सन मुसुकैली। कुसुम उठि नहि सकली, हुनकर चोटाहल मोन कोनो प्रकारक अभ्यर्थना लेल तैयार नहि भेलनि। नाम चेहरा पर, रंगल लाल-लाल ठोर टा देखाइत छलनि, ओकरा अपन लेस लागल रूमालसँ पोछैत भौजी फुसफुसा क' बजली, जेना विदेशी हीरोइन सभ फुसफुसाइ

छै-अहाँ के देखि आश्चर्य आ खुशी दुन्नू भेल! आइ विदेशी दूतावाससँ हमर किछु मित्र आबि रहल छथि। ताहि द्वारे हम ई लहँगा रानीखेतसँ मंगबेलहुँ। कहियौ त', लागि रहल छी ने कुमाँऊनी?"

कुसुम तिलमिला क' उठि गेली-गोवाक स्मगल कयल ब्रैंडी, विदेशी शाहंशाह आ मलिका, भारतीय संस्कृति आ दमकैत अफ़सरीक बीच बिछाओन पर पड़लि रुग्णा मायकेँ की मॅझिला भैया एकदम्मे बिसरि गेला? की आधुनिका पत्नीक लेल कुमाँऊनी लहँगाक व्यवस्थाक बीच कुमाऊँक कंचन शृंग, देवदार, चीड़ आर बाज, अयारक घंटी जकाँ बजबैत हवाक सुधि की एक्कहु बेर नहि अयलनि?

"हम चलै छी, मॅझिला भैया। हमर गाड़ी आठ बजे खुजैत अछि।" आर एहिसँ पहिने कि भाय हुनका रोकितथिन ओ फेर अपन पुरुषाही जूता खटखटबैत तेजीसँ बाहर निकलि गेली।

मॅझिला भैयाक निष्क्रिय भारतीय संस्कृति बीसे मिनटमे हुनकर जेना दम घोंटि देलकनि। कुरसी पर बैसल, मॅझिला भैयाक लौंग ब्रैंडीक बीच भरिसक क्षण भरिक लेल हुनकर विवेक जागृत भ' गेल छलनि, ताहिसँ ओ हुनका नहि रोकलखिन। रोकितथिन कोना?

कुसुमकेँ लगलनि जेना उन्नैस वर्ष पहिने अरथीमे बन्हल निर्जीव बड़का भैया आ कुरसी पर बैसल मॅझिला भैयामे कोनो अन्तर नहि। बड़का भैया भरि जिनगी सभक अवहेलना सहलनि, किनको हुनकासँ कोनो आशा नहि छलनि, अही सँ भरिसक ओहो ककरोसँ बिनु किछु मँगने, अपन सरल, स्निग्ध, स्नेहक धार सँ सभकेँ ओत-प्रोत क' एक दिन आँखि मूनि क' चलि गेल छला।

एम्हर मॅझिला भैयाक आँखि खुजल छलनि, साँस चलि रहल छलनि, मुदा ओहो त' हुनका बीचसँ चलि गेल छलखिन, सभ दिनक लेल। बड़का भैयाक मृत्यु पर ओ कतेक कानल छली आर मॅझिला भैया! हुनकर त' ई अकाल मृत्यु छलनि, जकर धक्का मनुष्यकेँ स्तब्ध क' दैत छै, कनबाक अवकाश कहाँ दै छै?

मामाजी

के कहि सकैत अछि जे ई ओएह मरघिन्नी रोहिणी छथि जे अपन पितियौत बहिनक मँगनीक साड़ी पहिरि विवाह-मुंडनक अवसर पर विवाहगीत आ सोहर गबैत नटिनी जकाँ नचैत छलीह! आइ ओएह कोनो पैघ अफसरक पत्नीकेँ सभ क्षेत्रमे पछाड़ि सकैत छलीह। गरमीक छुट्टीमे जखन ओ पहाड़ आबथि, त' काठगोदाम स्टेशन पर हुनकर सामान, डेढ़ आँखि वाली मद्रासी आया, आ बेंतसँ मढ़ल बच्चाक कमोड-पूरा स्टेशन पर हुनकर व्यक्तित्वक मोहर लगा दैत छलै। कखनो ओ बुक स्टाल पर विदेशी पत्रिकाक पन्ना उनटबथि, कखनो अपन धुपचश्मा खोलि दुनू बच्चाकेँ अंग्रेजीमे डाँटथि आ कखनो बेर-बेर घड़ीमे समय देखथि। पतिक अफ़सरीक संग-संग हुनकर व्यक्तित्वमे सेहो निखार आबि गेल छलनि। रोहिणी ई बूझि गेल छली, जे पैघ अफसरक पत्नी होयब काँट पर चलब छै, मुदा कुशल पत्नी जकाँ बिनु मीन-मेख निकालने, जानि-बूझि क' माछी निगलि जाइत छली। सेरमे दू छटाँक अर्दलीक जन्मसिद्ध अधिकार छलै। आयाक दरमाहा, दूनू बच्चाक अंग्रेजी-स्कूलक महग फीस, ई सभ खर्च त' छलैहे, ओहि परसँ हुनकर खून जरबै लेल हुनकर पति हिसारक एक टा भैंस कीनि नेने छलखिन। घास-भूसा, चोकर-चुन्नीसँ घर बैसल रोहिणीक चपरासीक खर्च निकलै लगलै। भैंसक संग-संग अर्दलीएक चमड़ा चिक्कन हुअ' लगलै, घरक साहेब आ मेम साहेब सुखाइ लगला।

ओ भनभनाक' पतिकेँ कहथि-"एहि सँ नीक त' अहाँ हाथी पोसि लितहुँ, त' ओहो सस्त पड़ैत, ई त' सभ मास अस्सी टका खा जाइत अछि!" मुदा राजेंद्र सुनलकेँ बिन सुनल क' देथिन। रोहिणीकेँ कहिओ सन्तोष नहि भेलनि। एक जिलासँ दोसर जिला बदली होनि त' पतिकेँ

अकर्मण्य होयबाक उलहन देथिन। तरक्की भ’ क’ बदली होनि, त’ पतिक पछिला पदक विशेषता सुनाबथि-"एहिसँ त’ अहाँक डिप्टी-कलक्टरिए नीक छल! कलक्टर नै भेलहुँ, तहसीलदार भ’ गेलहुँ! जखन देखू तखन एक ने एक मिनिस्टर, डिपुटी-मिनिस्टर कन्हा पर सवार छथि! कने कोशिश कयलासँ सेक्रेटेरियटमे पहुँचि जायब। रुक्की दीदीकेँ देखियनु ने, जहियासँ बहिनोइ डिप्टी-सेक्रेटरी भेला, रानी बनि गेल छथि।"

राजेन्द्रो एक दिन हुनका रानी बना देलखिन, मुदा हुनकर बड़बड़ायब बन्न नहि भेलनि। आब ओ भैंस, चपरासी आ सेकेंड-हैण्ड कीनल फिएट पर बेतरीका तमसाय लगली। दोसर पत्नी जकाँ पुरान मोटर सेहो दिन-राति नख़रा देखबै छै, एहिमे कोनो सन्देह नहि। ओहि पर राजेंद्र गाड़ी चलयबामे बहुत हड़बड़ा जाइत छला। ताहि द्वारे ड्राइवर जे मोन से करबा लैत छलनि। कखनो इंजनमे खराबी कहि दैनि, कखनो नहि जानि कोन अदृश्य छिद्रसँ गाड़ीक पूरा पेट्रोल सोखि लैनि। मुदा साहेब सेहो नहला पर दहला छला। भैंस पोसिते गुआरक जन्मजात गुण-दोष ओ स्वयं ग्रहण क’ लेलनि। गुआर जाहि निर्लज्जतासँ दूधमे पानि मिलबैत अछि, ओही निर्लज्जतासँ ओ अपन अफसरीमे पानि मिलबै लगला। कखनो दौरा पर जाथि, त’ खर्चसँ बहुत बेशीक बिल बना क’ अपन विभागक गरदनि काटि लैत छलखिन। जखन मोन होनि, तखन ऑफिस जाथि। लंचक लेल जाथि, त’ घण्टो सूति रहथि। फाइल केर अनाथ अम्बार टेबल पर पड़ल रहै। बाहर घंटी पर बैसल चपरासी औंघाय, भीतर साहेब।

रोहिणी अपन नव फ्लैटमे आबिओ क’ प्रसन्न नहि भेली। एक त’ लखनऊ उत्तर प्रदेशक राजधानी, ताहि पर राजेंद्र एकटा ऊंच पद पर अवस्थित ऑफिसर। दिन-राति पाहुन सभ हुनका अकच्छ क’ देने छलनि। कखनो कोनो आत्मीय बेडिंग लटकेने, टोकरी नेने इंटरव्यू लेल आबि रहल छथि, त’ केओ बदली रुकबाबय लेल। टोकरीमे अनता की? सस्त पहाड़ी भेंट-पाव-पाव भरिक एक-एक टा पहाड़ी मिरचाइ वा दस सेरक पैघ सन कद्दू! कखनो काल रोहिणीक मोनमे आबनि जे ओएह कदद् पाहुन-देवताक

माथ पर द’ मारथि! मुदा, भारतीय स्त्रिगण की कहिओ एहन दुस्साहस कय सकैत छथि? ओ खूब हँसि-हँसि क’ पाहुनक स्वागत करथि। जाड़मे दीदी, काकी आदिकेँ संग अनबाक अनुरोध करथि आ पाहुनक जाइते पति पर तामस निकालथि। ओहि दिन सेहो ओहिना भेलै। पछिला रातुक पहाड़क गाड़ीसँ ओकर पतिक देहाती, उजड्ड मामाजी विदा भेलखिन, त पतिकेँ खूब अंट-शंट सुना देलखिन। रोहिणीक ममिया ससुर अपन पेट देखबै लेल कालीकुमाऊंसँ चलि आयल छलखिन। हुनकर कहब छलनि जे हुनका पेटमे भयानक फोड़ा छनि। मेडिकल कॉलेजक डॉक्टर हुनका मतसँ सहमत नहि छलखिन। हुनका खाली शंकाक बीमारी छलनि। एहन स्वस्थ पेट ओ सब नहि देखने छला। रोहिणीक कथनानुसार बुढ़बाक पेटमे कोनो भयानक ड्रैगन सन जोंक छलै। एक बेरमे बीस टा रोटी खा क’ बुढ़बा ओकर हालत पस्त क’ देने छलै। रोहिणी इहो कहैत छलीह जे मामाजीकेँ खिड़कीसँ लग्घी करैत ओ स्वयं देखने छलखिन आ राजेन्द्रक कहब छलनि जे एहन जघन्य काज हमर मामा नहि क’ सकैत छथि। अही पर दुनूमे भोर मे खूब झगड़ा भेलनि आ राजेंद्र आधे-पेट खा क’ उठि गेला। ताहि लेल दुपहर मे जहन राजेंद्रक फोन अयलनि त’ रोहिणीक माथा ठनकल। बिगड़ि क’ गेल छला फेर फोन कोना आबि गेल!

"की बात?"ओ कनी खौझाइएक पुछलखिन।

"सुनू, अहाँक देबूदा आबि रहल छथि। एखने तार आयल अछि। बहुत काजक आदमी छथि। रोहिणी’ खूब बढ़िया भानस करब।"

रोहिणीक चेहरा क्रोधसँ तमतमा उठलनि। काजक आदमी छथि कि खाक-पाथर!

"देखू, पकवान-टाइप खेनाइ बनबायब। आखिर पुरहित-कुलक छथि, संस्कार थोड़े खतम होइ छै! हमर मामा त’ छथि नहि जे खिड़की सँ..."

खिसियाक’ रोहिणी रिसीवर पटकि देलनि। नैहरक कुलकेँ लक्ष्य कय पतिक फेकल व्यंग्यक तेज भाला रोहिणीक छातीमे घोंपा गेलनि। हुनकर पिता पुरहित छलखिन, एकर स्मरण बेर-बेर करेबाक की प्रयोजन?

चाहितथि त’ ओहो पतिकेँ व्यंग्यसँ बेधि सकैत छली। श्वसुर-कुलक कीर्ति की हुनकासँ नुकायल छलनि! हुनकर सुन्दरी पितिया सासुक हुनकर श्वसुरक सँग जे रसगर-मधुर संबंध छलनि, ओ के नहि जनैत अछि? आब गंगामे कतबो डुबकी लगा, गोर ललाट पर चाननक लेप लगा क’ की राजेंद्रक काकी, अपन ललाटक कलुष मेटा सकती? आइ देबूदाक अयबाक समाचार सुनि हुनका नन्दनक चेहरा मोन पड़ि गेलनि। भ्रातृद्वितीया दिन अभागल भायक स्मृतिमे हुनकर आँखिमे नोर भरि गेलनि। गरीब पुरहितक अभागल पुत्र नन्दन अपन बहिनक सासुर मे आश्रयक भीखे माँगि क’ आयल छल। रोहिणीक पुरहित पिताक मृत्यु भ’ गेल छलनि। रोहिणीक रूपे पर मुग्ध भए हुनकर श्वसुर दरिद्र अनाथा सुंदरी बालिका केँ अपन पुतौहु बना नेने छलाह। रोहिणीक विधवा माय साधारण पुरहित-वृत्ति करय वाला परमानन्द पाण्डेक पत्नी छली। पतिकेँ विवाह-उपनयनमे भेटल एक-दू टा दुशाला आ रेशमी पीताम्बर दय ओ कन्यादानसँ मुक्त भ’ गेली। बहुत कष्टसँ ओ बेटीकेँ इंटर धरि पढ़ौने छली। समधि स्वयं आग्रह कय नन्दनकेँ सेहो नेने गेलखिन। एक टा गप आर छल, नन्दन रोहिणीक जौंआ भाइ छल। नाक, आँखि, ठोर, सभ एक्के रंग-ओहने पैघ-पैघ निष्पाप आँखि, घनगर पलक एक्के काट, एतेक तक कि दुनूक हँसी सेहो एक्कहि रंग। ई देखि समधिकेँ लगलनि जे भाय-बहिनक ओहि अनुपम जोड़ीमे सँ एक टाकेँ ल’ गेने ई जोड़ा नष्ट भ’ जेतै। किएक नहि भाय-बहिन संगहि रहय? विधाता हुनका सभ किछु देने छलखिन। नन्दन आरामसँ पढता-लिखता। माय की खुआ क’ पढ़ा सकथिन। बेचारी स्वयं अनकर बीछि-फटकि क’ निर्वाह करै छथि! बेटा-बेटीकेँ सदय समधिकेँ सौंपि ओ बदरीनाथक यात्रा पर गेली आ घूरि क’ नहि अयली। तीर्थयात्रीसँ भरल बस उनटि गेल छलै, ओही बसमे रोहिणीक माय सेहो छलखिन। शुरूमे नन्दनक खूब मान-दान भेलनि, मुदा धीरे-धीरे बासी पड़य लगला। रोहिणीक पैघ दियादिनी कालिन्दी दरिद्र कुलसँ आनल रोहिणीक पाछू हाथ धो क’ पड़ल रहैत छलखिन।

कालिन्दीक पति बर्मामे इंजीनियर छलखिन, जाहिसँ ओ धनक-मदमे चूर रहथि। एक दिन नन्दनसँ पुछलखिन–"कहू यौ छोटका पण्डित, पितासँ किछु पूजा-पाठ सिखने छी कि कोनो काजक नहि छी? संकल्प करबय अबितय, त' अहाँकेँ बर्मा नेने चलितहुँ। ओहि ठाम त' पितृ-पक्षमे खुआबै लेल ब्राह्मणो नहि भेटै छै! पहाड़ी घर सभमे बिना पण्डा-पुरहित कहाँ काज चलै छै? पछिला रक्षा-बन्धनमे त' रक्षा बान्हय बला सेहो केओ नहि भेटल...!"

"रक्षा बान्हय त' हमरा आबय अछि न दीदी?" समर्थन लेल ओ अपन बहिन दिस देखलक आ जोर-जोरसँ सभकेँ सुना क' हिल-डोल करैत पढ़ै लागल–"येन बद्धो बली राजा..."

"जो, भाग बाहर!" चिकरि क' रोहिणी ओकरा भगा देलखिन। कालिन्दी आ हुनकर ननदि जोर स हँसि देलखिन। रोहिणीक आँखिमे नोर भरि एलनि। अपन ओहि मूर्ख सहोदर द्वारे रोज हुनका व्यंग्य सुनय पड़नि। स्कूलसँ भागि भरि दिन सड़कक आवारा छौंड़ा सभ संगे गुल्ली-डंडा खेलाइ। कखनो भरि घरक मौगीक साया-ब्लाउज सुखबय छत पर चढ़ि जाय, कखनो एक-एक आनाक पान लेल तीन मील दूर बाजार पठाओल जाय। नन्दनमे आत्मसम्मान नहि छलै, रोहिणीकेँ सभसँ बेशी दुःख तकरे छलनि।

श्वसुरक मृत्यु भेलनि, त' साझी परिवार फराक भ' गेलै। रोहिणी अपन दुनू बच्चा आ भायकेँ संग लय पतिक संग रहय लगली। आब ओ स्वतंत्र छली। आब ने पितिया सासुक शासन छलनि, ने ससुरक बिगड़ाइ। कालिन्दी बर्मा चलि गेल छली। दुनू ननदिक विवाह भ' गेलनि। रोहिणी भायक प्रति उदासीन छली, से नहि छलै। ओ नन्दनक लेल दू-दू टा मास्टर सेहो राखि देलखिन, मुदा हाइस्कूलमे लगातार पाँच बेर फेल भ' पंचवर्षीय योजना पूरा क' चुकल छल ओ। छोटकी भगिनी संग खेलबामे ओकरा बड़ मोन लगै। कखनो रोहिणीक नजरि बचाक' भगिनी नीलूक हाथसँ बिस्कुट छीनि क' खा लय, कखनो ओकरा मुँहसँ दूधक बोतल घीचि दूध

पीबि जाय। नीलू जोरसँ कानय लागय, मुदा मायक चेहराक साम्य देखि ओ स्वयं चुप भ' जाय। मामक चेहरा सेहो ओहि अबोधक लेल मायेक छलै... नंदन कखनो भगिनीकेँ गोदीमे नेने नौकर सभक बैसकीमे चलि जाय आ खूब बीड़ी पीबय। राजेन्द्रक बदली गाजीपुर भेलनि, त' नन्दन बहुत प्रसन्न भेल। बहनोइ जिलाक राजा छला। हुनका राजमे सारक खूब मौज। हुनका हातामे आम, बैर आ इमली गाछक जंगल जकाँ छलै। एक दिस कुसियार छलै, दोसर दिस राहरि। नंदनकेँ जखन मोन होइ, ओहि जंगलमे चलि जाय। बहिनक अर्दली सभकेँ सेहो घरक भेदी विभीषणक अयलासँ बहुत सुविधा भ' गेलै। ओ साहेबक अकर्मण्य सार छल, ओकरा ओ सभ लट्टू जकाँ घुमबै लागल। साइकिल टूटय, त' मूर्ख नंदनकेँ फँसायल जाय। कोनो अपराधक जयमाला पहिरै लेल नन्दन सदैव तत्पर रहैत छल। बहनोइक अर्दली अली मर्दान सँ ओकरा खूब दोस्ती छलै। ओएह ओकरा अफीमक अभ्यास लगा देलकै। शुरूमे अली अपन किशोर मित्रक सौख स्वयं पूरा करैत छल, फेर घरक छोट-मोट चीज चोरयबाक कला सिखा नन्दनकेँ आत्मनिर्भर बना देलकै। जाहि बहिनक थारीमे नन्दन खाइत छल, आब ओहीमे भूर करै लागल। एक दिन राजेंद्रक घड़ी हेरा गेलनि। रातिमे टेबुल पर रखने छला। भोरमे उठला, त' नै छलनि। थोड़बे काल मे पूरा बंगलामे हल्ला मचि गेल। कड़ा मोंछ वाला खुर्राट दरोगा घरक नौकर सभकेँ मारैत-मारैत चाम छीलि देलकै।

अली मर्दानक एक-एक शब्द रोहिणीकेँ एखनो याद छलनि-"घड़ी मेम साहेबक भाय चोरेने छथिन गरीब-परवर!" ओ दरोगाक पएर पकड़ि लेलकै।

"की कहै छें शैतान!"दरोगा ओकरा ठोकर मारि क' दूर पटकि देलकै। मुदा घाघ दरोगा घाट-घाटक पानि पीने छल, ओकर आँखि चोर पकड़ि लेलकै। नन्दन जमीन पर नजरि गड़ौने चुपचाप ठाढ़ छल।

"कुरानक शपथ सरकार! काल्हि भैयाजी केँ कबाड़ीसँ मोल-भाव करैत हम अपने देखने छलियनि। पच्चीस रुपैया मँगैत छलखिन...!"

राजेंद्रक खून खौलि उठलनि। माथ निहुरेने नन्दन काँपि रहल छल। हमर साढ़े तीन सौक घड़ी पच्चीसमे।"मूर्ख–बेहया!"कहि क' तामसे आन्हर बनल राजेन्द्र ओकरा जूताक ठोकर मारैत असोराक एक कोनसँ दोसर कोन धरि फुटबॉल जकाँ उछलबै लगला। तामसमे राजेन्द्र अपन वशमे नहि रहैत छला। कलक्टर बनलाक बाद एम्हर हुनका हाइ ब्लड-प्रेशर भ' गेल छलनि। मारैत-मारैत भरिसक ओ नन्दनक जाने ल' लितथिन, मुदा रोहिणी हुनका घीचि क' भीतर ल' गेलखिन-"अपन पदक त' ध्यान राखू! सब नौकर-चाकर देखि रहल अछि, की कहत! ई अभागा जनमिते किएक नहि मरि गेल? आइ एहन अपमान त' नहि होइत!" ई कहि कानय लागल छलीह। जाहि भायक रोहिणी मृत्यु-कामना करैत छली, साँझ होइते ओहि भायक लेल मोन कोना दन करै लगलनि। पछुआड़मे गेली, त' आयाकेँ ठाढ़ देखलनि। ओ बाजल "-मेम साहब, भैयाजी त' नंगड़ाइत-नंगड़ाइत तखने बँगलासँ बाहर चलि गेल छला!"

मरय दही अभागलकेँ!"-कहि रोहिणी गेट बंद क' देलखिन।

तहियासँ ओ गेट भायक लेल बन्दे रहि गेलै।

"हेरायल भायकेँ तकबाक प्रयत्न ने ओ कयलनि आ ने राजेन्द्र। धीरे-धीरे नन्दनक स्मृतिक छाया स्वयं खतम भ' गेलै। आइ देबूदाक अयबाक समाचार सुनि जखन बच्चा सभ 'मामाजी-मामाजी कहि उत्साहसँ कोठरी ठीक करै लागल आ ओ पकवान बनबै मे जुटि गेली, त' हुनकर अन्तरात्मा हुनका धिक्कारय लगलनि। अपन मूर्ख मामक अस्तित्वसँ सेहो बच्चा सभ अनजान छल आ देबूदा सन ओछ व्यक्तिक लेल ओ केहन तैयारी मे जुटि गेल छथि! वैह देबूदा, जिनकर पिता हुनकर अपन पित्ती होइतो कहिओ ओहि दरिद्र परिवारक हितैषी नहि रहला। गर्मीक छुट्टीमे गाँव आबथि, त' देबूदा आ हुनकर बहिन लक्ष्मी गन्धर्व-किन्नरी जकाँ सजि-धजि क' ऐठैत फिरथि। ओ डेराइत-डेराइत लक्ष्मी दी लग जा क' कहथिन- "लक्ष्मी दी, एक टा साड़ी देब आइ? पंतजीक नातिक जन्मदिन छनि, हमरा नचबाक अछि!"

"बाप रे बाप, तोहर नाच नहि भेल तूफ़ान भ' गेल! जहिया देखू, तहिया सुनै छी, साड़ी चाही, हमर नाच अछि! दै छिऔ, मुदा साड़ीमे खोंच नहि लगौ! माय हमरा मारि देत। हमर एको टा साड़ी तीस टका सँ कमक नहि अछि, ले"- ई कहि एक टा रँग उड़ल सस्ता रेशमी साड़ी हुनका कोरमे पटकि दैथिन आ ई सभ सुनिओ क' मँगनीक साड़ी उठेने ओ तेना भागय जेना दुनियाक सभ टा संपत्ति ओकरा भेटि गेल होइ। आइ ओ देबूदासँ सभ बातक बदला लेती। पहिने बैसेबनि ड्राइंग रूममे, फेर बेडरूम, किचन रेंज देखा क' स्वादिष्ट घृत-पकवान खुआ क' आश्चर्य चकित क' देबनि। ओ देबूदाक ओछ स्वभावकेँ जनैत छलीह। सुनबामे आयल छलनि बहुत पैघ आदमी भ' गेल छथि एक-दू वर्षमे मुख्यमंत्री बनबाक संभावना छनि। लाखो टका बना लेलनि। लक्ष्मी दी कोनो मुसलमानसँ अंतर्जातीय विवाह कय पाकितान चलि गेली। जँ देबूदा नन्दनक कुशल पुछता त' ओहो लक्ष्मी दी क कुशल पूछि देथिन।

देबूदा अयला त' ओ देखि क' चकित रहि गेली। हुनकर लम्बाइ कम छलनि, आब त' गोल-मटोल लगै छथि। खद्धरक धोती-कुर्ता आ टोपी पहिरि देबूदा एकदम रोबदार लागि रहल छला। दू-तीन टा मौलायल फूलक हार रोहिणीक पुत्रीकेँ थमा देबूदा हँसैत-हँसैत स्टीलक बिना हाथक सोफा पर बैसि गेला-"बाप रे बाप! केहन भाग्यवती छें तों रोहिणी! अपन पतिकेँ रोज देखि त' लैत छें न! हम त' चारि महीनासँ आकाश-विहारी बनल घूमि रहल छी। ई जिनगी एहने छै!" बड़ा स्टाइलसँ ओ सिगारक छाउर झाड़लनि!" किनकर पत्नी आ किनकर पति!"ओ रोहिणीक निमंत्रित अतिथि लोकनिकेँ देखि क' कहि रहल छला, "अखने एक टा एम.पी. दलक नेतृत्व कय आयल छी। आइये राति फेर दिल्ली पहुँचि क' पंडितजीसँ भेंट करबाक अछि।"ओ एहन स्वरमे बजला जेना हुनकर संगतिक बिना पंडितजीकेँ कौर नहि धँसै छनि।" सोचलहुँ, भ्रातृ-द्वितीया छै, तोरो सँ भेंट कयने चली।"

"बहुत बढ़िया कयलहुँ, देबूदा, अहाँकेँ हमर यादि त' आयल!"

"की करू बहिन, यादि किएक नहि आयत, मुदा आइ जेनेवा कॉन्फ्रेन्स अछि, त' काल्हि सऊदी अरब जयबाक अछि। आब तोहीं कह, एहन ज़िनगीमे दम्मो मारबाक समय ककरा रहै छै!" ओ अपन नाव-सन खद्धरक टोपी गोदीमे राखि लेलनि आ आरामसँ पएर पसारि क' सिगार फूकय लगला।

ओहि दिन रोहिणी पहाड़ी पकवानसँ टेबुल भरि देने छलीह। मोयन देल फूलल पूड़ी छलै। पहाड़ी ककड़ीक पीयर रायता छलै। भूजल भाँगक बीया दय बनाओल दाड़िमक चटनी छलै आ घीमे तरल कुरकुर लाल सिंगल छलै, जकर सुगन्धि सँ देबूदाक नथुना फड़कै लगलनि। कनी काल लेल ओ सऊदी अरब, जेनेवा कॉन्फ्रेंस आ पंडितजीकेँ सेहो बिसरि क' भोजन पर टूटि पड़ला। रोहिणीक दुनू बच्चा अपन हिस्साक पूड़ी-पकवान टोकरीमे ल' क' लॉनमे पिकनिक मनबय चलि गेल छल। हरियर घास पर पटिया बिछा, जल्दीसँ भाटिया साहेबक बच्चा सभकेँ महिम निमंत्रित कय आयल छल। दुनू बच्चा कैक्टसक बड़का गमला लग ठाढ़ भेल संगी सभक प्रतीक्षा क' रहल छल। भीतरक पार्टीक अतिथिक हँसीक स्वर अंग्रेजी रेकॉर्डक संगीतक सँग आबि रहल छल। 'हाउस ऑफ़ बम्बू 'आ ओही लोकप्रिय धुनक संग सीटी बजा क' महिम एक पएरसँ ताल दय रहल छल कि ओकर सीटीक स्वर गलेमे सूखि गेलै।"दीदी, देख "ओ आर किछु नहि बाजि सकल। आठ वर्षक महिमक भयसँ घिग्घी बन्हि गेलै। लॉनक लता-द्वार पर नंग-धडंग छ-फुटा बताह ठाढ़ छलै। ओकर दुनू आँखि आगि-सन लाल छलै। दाढ़ीक गन्दा, छितरायल केश पर नेर चूबैत छलै.. बच्चा दिस बिना देखने पकवानक टोकरी ललचायल दृष्टिसँ देखैत ओ धीरे-धीरे आगाँ बढ़ि रहल छल। ओकर एक हाथमे सुखायल ठाढ़ि छलै आ दोसर हाथ कटल छलै। केहुनीक नीचा किछु नहि छलै। नीलू भायक हाथ घीचि भीतर भागि गेल। रोहिणी फ्रिजसँ मिठाइ निकालय लेल आबि रहल छली, अन्हारमे दुनू बच्चासँ टकरा गेली।

"ऐ ठाम की क रहल छें? तोहर सभक पिकनिक भ' गेलौ।"

मायकेँ देखि नीलूक साहस लौटि ऐलै-"देखही न माँ, ओ नाँगट बतहा हमरा टोकरीसँ पूरी निकालि क' खा रहल अछि!"

खिड़कीक शीशासँ सड़कक लैम्पपोस्टक मद्धिम इजोतमे बतहा भयानक लगै छल। दुनू ठेहुन रोपि ओ टोकरीसँ पूरी निकालि, भूखल कुकुर जकाँ, नोचि-नोचि क' खा रहल छल।

"ई हरामखोर दरबान मँगनीमे दरमाहा लैत अछि! लॉनक भीतर बतहा कोना आबि गेलै?"बड़बड़ाइत रोहिणी बाहरक बत्ती बारलनि आ डाँटि क' कहलनि–"भागि जो! तों के छें?"

बतहा ओकरा देखि परमहंस योगी जकाँ हँसि पड़ल। पूरीक कौरसँ ओकर दुनू गाल फूलल छलै। ओ फेर हँसल, मुदा रोहिणी नहि हँसि सकली। घबड़ा क' ओ बत्ती बन्न क' देलनि। ओकर डाँटब सुनि दरबान लाठी ठकठकबैत बढ़ि आयल। ओकर आहट पबिते बतहा एक हाथ कटल रहलाक बादो नटक फुर्तीसँ चील जकाँ झपट्टा मारि टोकरी उठा लेलक आ देवार फानि क' पड़ा गेल। अभागल अयबो कैल भ्रातृ-द्वितीया दिन! मुदा हाथ कोना कटि गेलै? रोहिणीक मोनमे एलनि जे दरबानसँ कहथि, दौड़ि क' बतहाकेँ पकडि लाबै, ओ बताह ओकर सहोदर जौंआ भाय छै! मुदा हुनका मोनक बात मोनेमे घुटि क' रहि गेलनि। बतहा हुनका जरूर चीन्हि गेल छलनि। कोना ओकर आँखि क्षणे-भरिक लेल चमकि उठलै! चिन्हिए क' त' ओ अपन चिरपरिचित हँसी हँसय लागल छल। चिन्हिओ क' ओ किएक भागि गेल? नहि, चिन्हने नै होयत। व्यर्थ तर्कसँ रोहिणी अपन मोन केँ स्वयं शान्त करै लगली।

"अरे, कतय छी?"भीतरसँ राजेंद्र हाक पाड़लनि-"बढ़िया मिठाइ आनय गेलहुँ! रोली-अक्षत सेहो नेने आयब। अहाँक देबूदाक एक-एक क्षण अमूल्य छनि।"

रोहिणी हड़बड़ा क' पूजा घर दिस चलि गेली। एसगर खाली पूजा घरमे थारीमे रोली-अक्षत सजबैत ओ अपनाकेँ नहि रोकि सकली, माथ निहुरा क' कानि उठली।

"जल्दी कर, माँ! पापा कहै छथिन, मामाजीकेँ एखने जयबाक छनि।"नीलू जल्दी-जल्दी आएल।

मुँह फेरि क' रोहिणी नोर पोछि लेलनि। हुनका धनसँ आन्हर, विवेकशून्य मोन बुझबय लगलनि-की ओ पतिक उच्च-वर्गक अतिथिक सोझाँ अपन नंग-धडंग बताह भायकेँ आनि क' ठाढ़ क' सकैत छली? विभिन्न विभागक सचिव, अनुसचिव आ हुनकर सभक ओछ घमण्डी पत्नी, जनिकामे किनकहु भाय ब्रिगेडियर छनि त किनकहु मेजर-आर ओहि सभक बीच सोफा पर पड़ल बर्मी सिगारक विलासी धुआँ छोड़ैत देबूदा! कोन दुस्साहससँ ओ छितरल दाढ़ी पर नेर चुआबैत अपन बताह भायक परिचय द' सकितथि?

'माँ, मामाजीकेँ हमहूँ टीका लगैबनि!"उछलैत-कूदैत नीलू रोलीक थारी छीनि भीतर भागि गेल।

लाटी

लगैत छल जेना लम्बा देवदारक झोंझरि झुकि-झुकि क' गेठिया सेनिटोरियमक आलिंगन करैत होइ। शीशाक खिड़की पर पड़ैत सूर्यक सोझ-टेढ़ किरण रोगीक क्लान्त चेहरा पर पड़ि हुनका उठा दैत छल। मृत्युक नगरक यात्रीक रोगसँ जर्जर पीयर चेहरा भोरक मीठ रौदमे क्षण-भरिक लेल खिलि उठैत छल। आजुक समयमे टी. बी. माथ-दर्द, सर्दी-खोंखी जकाँ आसानीसँ जीतै वाला बीमारी अछि, मुदा आइसँ बीस साल पहिने टी. बी. मृत्युक जीवन्त आह्वान छल। ताहि समय भुवालीओसँ बेशी गेठिया सेनिटोरियमक माँग छल। काठगोदामसँ किछुए मील दूर एकटा ऊँच पहाड़ पर गेठिया सेनिटोरियमक लाल-लाल छतबला बँगला सभ छोट-छोट गुलदस्तासँ सजल छल।

तीन नम्बरक बँगलाक दुगुना किराया दय कप्तान जोशी अपन रोगिणी पत्नीक संग रहै छला। बँगलाक असोरा पर अपन पत्नीक पलँग लग आरामकुर्सी राखि ओ दिन-भरि बैसल रहैत छला, कखनो अपने हाथे टेम्परेचर-चार्ट भरथि आ कखनो समय देखि दवाइ देथिन। लगक बंगलाक रोगी बहुत तृष्णा आ चावसँ ओहि कबूतरक जोड़ीकेँ देखथि। एहन घातक बीमारीमे कतेक यत्न आ स्नेहसँ सेवा करैत छला कप्तान जोशी! हुनकर प्रसन्न चेहरा पर तामस वा खौंझैबाक अस्पष्टो रेखा नहि अभरैत छलनि। कखनो ओ अपन घुँघरल केश पर ब्रश फेरथि, कखनो मधुर स्वरमे पहाड़ी गीत गाबथि, जकर मिठासमे तिब्बती बकरीक गरदनिमे बान्हल, बजैत घंटी सन खनक रहैत छलै। रोगी सभ बिछौने परसँ कहनि, "वाह कप्तान साहब! एक टा आर!" कप्तान अपन पलँग पर पड़ल सुंदरी 'बानो'दिस देखि प्रेमसँ मुस्की मारि दैथि। बानोक गोर रंग बीमारीसँ पीयर पड़ि गेल छलनि

आ हुनकर पैघ-पैघ आँखि आर पैघ लगैत छलनि। शान्त, तरल दृष्टिसँ ओ दिन-राति कप्तानकेँ टुकुर-टुकुर तकैत रहैत छली। विवाहक दू वर्षक बाद यैह हुनकर सभक वास्तविक हनीमून छलनि, जतय ने माय, काकी, बड़की काकीक शासनक लगाम छलनि, ने नव कनियाँक घोघक अनिवार्यता। पिंजड़ाक चिड़ियाँ आजाद भ' गेल छल मुदा ओकर कमजोर पाँखि मे उड़बाक ताकते नहि बांचल छलै। कप्तान बानोक दुर्बल गरम हाथ अपन कसरती मुट्ठीमे बहुत प्रेमसँ दाबि क' सोहराबय लागथिन त' हुनकर पातर गट्टा परहक सोनक चूड़ी ससरि क' केहुनी धरि चलि अबै।

ओहि समयमे गेठियाक डॉक्टर एकटा अधेड़ स्विस छला। एक दिन ओ कप्तान केँ एसगरमे बजा क' कहलखिन, "कप्तान, अहाँ एखन जवान छी, ई बीमारी जवानीक भूखल होइत अछि। हम देखि रहल छी, अहाँ कनिओ परहेज नहि करै छी। रोगीक भूखकेँ दवाइसँ जीतय पड़त, प्रेमसँ नहि।"

क्षण-भरिमे सभ बूझि क' कप्तान लाल पड़ि गेला। हुनकर बूढ़ पिताक सेहो कइएक टा पत्र आबि चुकल छलनि आ माय कानि-कानि क लिखने छलखिन–"हम दस-बीस बेटाक माय नहि छी। बेटा, ई बीमारी सत्यानासी होइत अछि ", मुदा कप्तान पहिनहि जकाँ अलमस्त रहैत छला। कखनो बानोक रेशमी केशकेँ चूमि लेथिन, कखनो हुनकर रेशमी पलकेँ, कखनो लगक प्राइवेट वार्डक गुमानसिंह मालदारक गोल-मटोल पत्नीसँ मजाक करथि।

सेनिटोरियमक मनहूस जिनगीक कारी आकाशमे एकमात्र रूअबगर ठकुराइन चमकैत तरेगन छली। भरल-भरल हाथ-पएर वाली सादा, चिक्कन चेहरा आ सदा प्रसन्न रहय वाली ओ पूरा सेनिटोरियमक भाउजि छली। हुनकर स्वास्थ्यक दुर्गम दुर्ग मे नहि जानि कोन अरक्षित छिद्रसँ बीमारीक घुन घुसि गेल छल। टी. बी. भेलाक पीड़ासँ कहरैत ओ अपन असभ्य गारिक भण्डार खोलि लेथि। कखनो लखपति ससुरकेँ लक्ष्य बनाबथि, "छथि हमर बूढ़ा, आधा कुमाऊँक छत्रपति, मुदा पुतौहु श्मशान जा रहल

छथिन त’ ताहि सँ हुनका की?"एक हमर पति अछि साला। पी क’ धुत्त होयत कोनो गोरकी मेमकेँ ल’ क’। दू माससँ हरामी एम्हर हुलकीओ नै मारने अछि। दढ़िजरबाकेँ ठठरीओ उठतै त’ हम किन्नहुँ सोहाग नहि उतारब।" कप्तान हँसि क’ कहथिन "भौजी किएक सरापि रहल छियनि।" प्रौढ़ा नेपालीक सदाबहार हँसीसँ खिलखिलाइत आँखि छलकि उठनि- शाबास! कप्तान बेटा, अहाँकेँ देखि क’ हमरा छातीमे दूध उतरि अबैत अछि। केहन सेवा क’ रहल छी अहाँ, आ एक टा हमर छथि कुतियाक जनमल! भेटिते मोछ उखाड़ि क’ हरामीक मुँहमे ठूँसि देबनि।"

कप्तान हँसैत-हँसैत बेहाल भ’ जाथि, मोछ उखाड़ि क’ मुँहमे ठूसय वाली बात हुनका तेहन नीक लगलनि जे दौड़ि क’ बानोकेँ सुना एलखिन। नेपाली भौजीक पतिक असंख्य मोटर अल्मोड़ा- नैनीतालकेँ घेरने रहैत छल, चाहक बगानक अन्त नहि छलनि; मुदा हुनकर वैभवे पत्नीक प्रति प्रेम आ मोहक बेड़ी काटि देने छलनि। एक वर्षमे ओ एक्कहु बेर हुनका देखय नहि एलखिन।

एक दिन कप्तान देखलनि जे नेपाली भौजीक खोंखी बहुत बढ़ि गेल छनि, फेर खोंखीक दौरा जकाँ पड़लनि, कप्तान दौड़ि क’ देखय गेलखिन त’ देखलनि, रक्तक कुंडमे नेपाली भौजीक विराट गेहुँआ देह निष्प्राण पड़ल छनि। पतिक मोछकेँ हुनकर मुँहमे ठुसबाक सपना सपने रहलनि आ भौजी चलि गेली।

किछु दिन कप्तान उदास रहला। बानोक पैघ-पैघ आँखिमे सेहो उदासी आबि गेलनि। जहन एहन हँसैत-खेलाइत लाल-लाल भौजीकेँ मृत्यु घीचि क’ ल’ गेलनि त’ हड्डीक ढाँचा मात्र बानो त’ हवामे उड़ैत रुइक फाहा छली। भौजीक मृत्यु जेना हुनका दुनूक कानमे कहि गेलनि जे जिनगी थोड़बे दिनक अछि। ओहि अमूल्य क्षणक अमृतरूपी रसक अंतिम बुन्नो छोड़ब हुनका दुनूकेँ स्वीकार नहि छलनि। नित्य लग अबैत मृत्यु बानोकेँ चिड़चिड़ाह बना देने छलनि, मुदा जेना स्नेहमयी माय अपन एसकरुआ जिद्दी पुत्रक सब जिद हँसि क’ पूरा क’ दैत छै, ओहिना कप्तानो बानोक

सभ जिद पूरा क’ देथिन। कखनो ओ छिटकल इजोरिआ रातिमे बाहर जयबाक जिद करथि त’ ओ अपन खाकी ओवरकोटमे लपेटि अपना देहसँ सटने लम्बा सागवानक छाहरिमे बैसल रहथि।

विवाहक ठीक तेसरे दिन बानोकेँ छोड़ि क’ हुनका बसरा जाय पड़ल छलनि। ओहि तीन दिनमे, खाकी वर्दीमे कसल छह-फुटक देह आ भुल्ल मोछकेँ देखि क’, बानो जतेक हुनकासँ छीह कटने फिरथि, कप्तान हुनका लग जयबा लेल ततबे उन्मत्त भ’ उठथि। हुनका देखिते बानो अपन मेंहदी लागल कोमल तरहथ्थीसँ लाजसँ गुलाबी भेल चेहरा झाँपि लेथि। दोसर दिन बहुत मुश्किलसँ कप्तान हुनका मुँहसँ फुसफुसाहटमे अपन नाम कहबा सकल छला। बहुत मद्धिम स्वरमे प्रणय-निवेदनक भूमिका सेहो बान्हय पड़लनि ;किएक त’ बगलेक कोठरीमे काकाजी सुतैत छलाह।

"अहाँक की नाम अछि?" हुनकर ठुड्ढी उठा क’ कप्तान पुछने छलखिन।"बानो" हुनकर गुलाबी ठोर हिलि क’ रहि गेल छलनि।

"राम-राम, मुसलमानी नाम।" कप्तान हँसि क’ कहने छलखिन।"सब यैह कहै छथि, हम की करू?" बानोक आँखि छलकि उठलनि।

"हम त’ अहाँसँ हँसी करैत छलहुँ, कतेक सुन्दर नाम अछि! कहू त’, पहाड़िओ नाम कोनो नाम होइ छै, सरुली, परुली, रमा, खष्टी।" कप्तान पुछलखिन-"कतेक वर्षक अहाँ छी, बानो?"

"एहि आषाढ़मे हमर सोलहम शुरू होयत।" बानो एहन उत्साहसँ बाजल छली जेना ओ आधा जिनगी पार क’ नेने होथि। कप्तानक मोन भरि अयलनि, अपन खेलौना सन कनियाँकेँ घीचि क’ हृदयसँ लगा नेने छलथि। पहिने ओ अपन पिता आ पित्ती पर बहुत तमसा गेल छला जे हुनका सन कड़ियल जवानकेँ मैट्रिक पास लड़कीसँ बान्हि क’ राखि देने छलखिन! मुदा किशोरी बानोक सरल आँखिक जादू हुनका पर चलि गेलनि। तेसरे दिन कप्तानकेँ बसरा जयबाक छलनि। कप्तान बानोसँ विदा लेबा लेल अयला त’ ओ एक कोनमे बैसल छलिया कतरैत छली, हुनकर पल भीजल छलनि आ पतिक आहट सुनिते ओ ठेहुनमे मूड़ी गोति लेलनि।

झटसँ झुकि क’ कप्तान हुनकर माथ चूमि लेलखिन। ओ भावुक भ’ गेला।

विवाहक तीने दिन बाद सुंदरी नववधूकेँ छोड़ि क’ जायब कप्तानकेँ दुश्मनक गोलीबारीसँ बेशी भयंकर लागल छलनि। एकर बाद दू वर्ष धरि कप्तान युद्धक विभीषिकामे भटकि गेला। बर्मा आ बसराक जंगलमे भटकि-भटकि क’ हुनकर संगी सभ विचित्र बनि गेल छलनि। ओ सभ गन्दा, अश्लील मजाक करथि। फौजी अफसर सभमे कप्ताने सभसँ कम अवस्थाक छला। बर्माक युद्धसँ स्तब्ध सड़क पर चपल स्त्रीगणक कुटिल कटाक्षक अभाव नहि छलै, तइयों कप्तान अपन जवानीकेँ दाँतक बीचमे जीह जकाँ बचा क’ रखने छला।

दू साल बाद घर पहुँचला त’ दुनियाँ बदलि चुकल छलनि। ओहि दू वर्षमे बानो सात-सात ननदिक कठोर बोल सुनलनि, भातिजक कपड़ा खिचलनि, ससुरक स्वेटर बनौलनि, पहाड़क नोकगर छत पर पाँच-पाँच सेर उड़ीद पीसि क’ बड़ी- अदौड़ी पाड़लनि। कहिओ सुनैत छली कि हुनकर पतिकेँ जापानी पकड़ि नेने छनि आ आब ओ कहिओ आपिस नहि औथिन। सासु आ पितिया सासु व्यंग्य-बाणसँ हुनका छलनी क’ दैत छलखिन। ओ सोचैत-सोचैत घुलय लगली आ एक दिन क्षयक तक्षक कुंडली मारि क’ हुनकर नान्हि टा छाती पर बैसि गेलनि। घरक लोक हुनका सेनिटोरियम पठा देलकनि। अयलाक दोसरे दिन कप्तान बानोकेँ देखबा लेल विदा भेला त’ घरक लोकक मुँह लटकि गेलनि।

कप्तान गेठिया पहुँचला आ एक प्राइवेट-वार्डक असोरा पर पड़ल बानोकेँ देखि क’ हुनकर करेज उछलि क’ मुँहमे आबि गेलनि। दू वर्षमे बानो खिया क’ आर बच्चा लगैत छली। कप्तानकेँ देखि क’ पहिने त’ हुनकर तरल आँखि खुजले रहि गेलनि, फेर नोर बहय लगलनि। किछु कहबाक आ सफाइ देबाक कोनो गुंजाइशे नहि रहलै। बानोक बहैत नोर दू वर्षक सब उलहन सुना देलकनि। दूनू गोटे बूझि गेला जे मिलनक ओ क्षण मुट्ठीए-भरि शेष रहि गेल अछि।

ओहि समयमे सेनिटोरियममे एक टा अत्यन्त क्रूर नियम छलै। रोगी

सभक अन्तिम अवस्था जानि हुनका सभकेँ घर पठा देल जाइत छलनि। सैनिटोरियममे मृत्युक प्रवेश सर्वथा निषिद्ध छल। नेपाली भौजीक मृत्युक बाद कप्तान आ बानो शोकमे डूमि गेल छलथि, मुदा चारिमे दिन सँ ओ फेरसँ हनीमून मनबय लगला। अपन साड़ीक बक्सा निकलबा क' कइएक टा साड़ी पर बानो इस्त्री करबौलनि। बहुत काल धरि दुनू गोटे ताश खेलाइत रहलथि, मुदा साँझ होइते बानो मुरझाय लगली। दिन-भरि हुनका दस्त आबि रहल छलनि आ टी. बी. क रोगी लेल दस्त एनाइ खतरनाक होइत छै। डॉक्टर दलाल एला, ओ कप्तानकेँ बाहर ल' जा क' कोठरी खाली करबाक नोटिस द' देलखिन।" काल्हिए ल' जाय पड़त, हम हिनका दू सँ तीन दिन दै छियनि। एहिसँ बेशी नहि बचती।"

कप्तानक चेहरा उज्जर भ' गेलनि। घर जयबाक प्रश्ने नहि उठैत छल, तीन मासक रस-भरल मधुर थाती केँ ओ घरक अशान्तिसँ दूरे राखय चाहैत छला। भुवालिए लग चाहक दोकानक नीचाँमे एक टा साफ-सुथरा कोठरी, मृत्युक पासपोर्ट भेटल बानो सन अभागल रोगीक लेल उपलब्ध रहैत छलै।

"सैनेटोरियम छोड़ि क' हम सब काल्हि दोसर ठाम चलब, बानो! एहि ठामसँ मोन उबिया गेल अछि।" बहुत आनन्द आ उत्साहसँ कप्तान भूमिका बन्हलनि, मुदा बानोक चेहरा फक पड़ि गेलनि। ओ बूझि गेली जे आइ हुनको नोटिस द' देल गेलनि।

बहुत राति धरि कप्तान बानोक गाल लग चेहरा ल' जा क' गुनगुनाइत रहला, "बानो, हमर बन्नी, बन्नू!"आ जखन बानोकेँ निन्न आबि गेलनि त' ओहो अपन पलँग पर सूति रहला।

भोरमे सूति क' उठला त' देखलनि बानो अपन पलँग पर नहि छथि। सोचलनि जे कहुना बाथरूम चलि गेल होयती। जोश एला पर ओ थोड़ेक दूर धरि चलि लैत छली। बहुत काल धरि नहि आयलि त' कप्तान चिन्तित भ' उठला। बानो कत्तहु नहि छली। भागि क' ओ रोगी सभ लग गेला, डॉक्टर अयला, नर्स अयली, चौकीदार आयल, मुदा बानो किम्हरो नहि

छली। सैनिटोरियममे आइ पहिल बेर एहन अनहोनी घटना घटल छल।

दोसर दिन बड़ी दूर रथी घाट पर बानोक साड़ी भेटल छलनि। मृत्यु अयबासँ पूर्वे ओ अभागिन स्वयं भागि क' मृत्युक वरण क' लेलनि।

एहिमे कोनो सन्देह नहि रहलै जे बानो डूमि क' आत्महत्या कय लेलनि। शोकसँ पागल भेल कप्तान बानोक साड़ीकेँ छाती सँ सटेने फिरथि, मुदा मर्दक जवानी जाड़क भयंकर पैघ राति सन होइ छै, जे कटने नहि कटै छै। एके वर्षमे फेर हुनकर विवाह भेलनि। एहि बेर पिता आ पित्ती चुनि-बीछि क पुतौहु छँटलनि। गोर, लम्बा आ एम. ए. पास। कप्तानक नव-पत्नीक पिता छलखिन मेजर जनरल। चालीस टा तमगा लगा क' जखन ओ कन्यादान कयलनि त' कप्तान बेचारा सहमि क' रहि गेला। प्रभा एसकरुआ बेटी छली, दोसर पत्नी सेहो छली, जे बादशाहक घोड़ीसँ कम नै होइ छै। प्रभाक सौ-सौ नखरा उठबैत कप्तान हँसब, खिलखिलायब आ मौज-मस्ती सभ बिसरि क' रहि गेला।

चारि वर्षमे कप्तानकेँ दू बेटा आ एक बेटी दय प्रभा धन-संचय दिस ध्यान देलनि। सोलह वर्षमे कप्तानक बैंक-बैलेंसमे नोटक मोट तह जमा क' दूनू गोटे नैनीताल घूमय अयला। कप्तानक कनि तोंद निकलि गेल छलनि, मुदा चेहरा एखनो अलमस्त छलनि। ओना मोछमे आब ओ ऐंठन नहि रहि गेल छलनि, कनपट्टी लगहक केश सेहो उज्जर भ' गेल छलनि। दुनू जवान बेटाकेँ कमीशन भेटि गेल छलनि, आ बेटी मिरांडा हाउस मे पढ़ै छलनि।

नैनीताल आबि क' कप्तानक हृदयमे टीस-जकाँ उठलनि। काठगोदामसँ चलला पर गेठिया देखेलनि आ ओ गुमसुम भ' गेला।

नैनीतालक ग्रांड होटलमे दुनू रुकला। प्रभा कहलखिन, "चलू डार्लिंग, पहाड़क इंटीरियर घूमल जाय। भुवाली चली।"चिकन, सैंडविच, रोस्ट मुर्ग पैक करबा क' ओ अपन फिएट गाड़ी भुवाली दिस मोड़लनि। बगलमे दामी चन्देरी साड़ी आ अधकट्टी ब्लाउजसँ अपन मांसल शरीरक गोर रंगक चमक देखबैत प्रभा बैसली। भुवालिक एक टा छोट-सन दोकान देखि क' प्रभा गाड़ी रोकबा लेलनि, "आइ अही दोकानमे एकदम पहाड़ी स्टाइलमे

कलैक गिलासमे चाय पीबै हनी!"

कप्तान आब मेजर छला, बजला–"मेजरक डिग्निटी कतय जैतनि?" "भाड़मे!" कहि प्रभा अपन पेंसिल हीलक सैंडिल खटखटबैत दोकानमे घुसि गेली।

काठक एक टा बेंच जे धुआँसँ कारी भ' गेल छलै, ओकरे झाड़ि क' दुनू गोटे बैसि गेला। कनी कालक लेल पहाड़ी दोकानदार भौंचक रहि गेल। लकड़ीक धुआँसँ एकदम कारी केटलीमे चाय खौलि रहल छल।

"खूब गरम दू गिलास चाय आनू, प्रधान।" मेजर पहाड़ी बोलीमे बजला त' दोकानदारक मुँह खुजले रहि गेलै। ओ सोचय लागल जे एहन अंग्रेजी बाजय बला जोड़ा पहाड़ी कोना भ' गेलै।

ओ चाय बनबिते छल कि अलख-अलख करैत वैष्णवीक एक दल भीतर घुसि क' दोकानकेँ छेकि लेलकै, "ओ हो गुरु, सभक कल्याण हो।" कहि हेड वैष्णवी अधिकारपूर्ण स्वरमे सोलह गिलास चायक आर्डर देलखिन। हेड वैष्णवी बहुत मुखर आ पुरुषाह छली, ताही लेल भरिसक पुरुषाहे स्वरमे बाजिओ रहल छली, "सोचलहुँ, ब्राह्मणेक दोकानक चाय छौड़ी सभकेँ पिएबै, आइ एकादशी छियै ने!"

"किएक नहि, किएक नहि!" दोकानदार बाजल, "अरे लाटी सेहो आयल अछि?"

"नहि त' कतय जायत अभगली!"बूढ़ी वैष्णवी बजली। प्रभा आ मेजरक दृष्टि सँगहि लाटी पर पड़लनि।

कुत्सित बूढ़, अधेड़ वैष्णवी सबहक बीच देवांगना-सन सुन्दर लाटी अपन दाड़िम-सन दाँत देखा क' हँसय लागल। मेजरक शरीर सुन्न भ' गेलनि, लगलनि जेना स्वस्थ भ' क' बानो बैसल छथि। गाल पर स्वास्थ्यक लालिमा छलनि, कान तक पसरल आँखिमे वैह तरल स्निग्धता। गोंगपन जेना चेहराकेँ आर स्निग्ध बना रहल छलनि।

"हाय, ई की गोंग अछि? माई गॉड, व्हाट ब्यूटी।" प्रभा बजली। हँ सरकार, ई लाटी अछि। दोकानदारक बात सुनि मेजरक हृदय पर खसि

पड़ल पाथरक चट्टान हँटि गेलनि।

"एकर की नाम छै?"प्रभा मुग्ध भेल लाटीकेँ देखि रहल छली।

"नाम जे छल हेतै से त' बहि गेलै मेमसाहब, आब त' एकर नाम लाटी छै।"हेड वैष्णवी बजली, "हमर गुरु महाराजकेँ एकर देह नदीमे बहैत भेटलनि। एकर जीह कतौ कटि क' खसि पड़ल छलै। राम जानथि ओ के छल! विवाह भ' गेल छलै, गरदनिमे मंगलसूत्र छलै। फेर हमर गुरु महाराज एकरा गुरु-मंत्र देलखिन। भयंकर क्षय-रोग छलै। एक-एक सेर खून रद्द होइत छलै, मुदा गुरुक शरणमे अयलाक बाद सभ बीमारी ठीक भ' गेलै।" लाटी जीह देखा।

लाटी अपन भुवनमोहिनी हँसी हँसि देलक, मुदा जीह नहि देखेलक। किछु नहि बूझैत अछि, सभ बिसरि गेल अछि, खाली अढ़ाई सेर खाइत अछि, हमर ऑर्डर सेहो नै मानै अछि। असंतुष्ट स्वरमे पुरुषाह वैष्णवी बजली।

"ओह, माय गॉड! अपन पतिओकेँ बिसरि गेली की?" प्रभा पुछलखिन।

"जे छलै से छलै, एकरा किछुओ यादि नै छै। खाली 'फिक-फिक' क' हँसै अछि हरामी। आब प्रभु छथिन एकर मालिक आ ओएह एकर सहारा सेहो छथिन। हँ, गुरु कतेक पैसा भेल।?"

हेड वैष्णवी चाहक पैसा देलखिन आ हुनकर दल अलख-अलख करैत उठि गेल। लाटी बैसले रहल, मेजर एकटक ओकरे देखि रहल छला। ई ओएह बानो छथि, जिनका डॉक्टर दलाल आ कक्कड़ सन प्रसिद्ध विशेषज्ञक मृत्युञ्जयी औषधिओ स्वस्थ नहि क' सकल छलनि।

"उठ गै लाटी!"हेड वैष्णवी कनेक ठोकर लगा क' लाटीकेँ उठेलनि। एक बेर फेर अपन मधुर हँसीसँ मेजरक हृदयकेँ बेधि लाटी उठल आ अपन दलक पाछाँ-पाछाँ चलि देलक। आह! जँ ओकर सरल चेहरासँ गाल सटा क' मेजर कहि सकितथि, 'हमर बानो, बन्नी, बन्नू!' भरिसक ओकर गोंग जीहक नीचाँ दबल ओकर पिछला जिनगी बाजि उठितै।

मुदा, जिनगीक दौड़मे मेजर बहुत आगाँ निकलि गेल छला, पाछाँ घुरि

क’ ताकब सभसँ पैघ मूर्खता होइतनि। दू टा जवान बेटा आ एक टा बेटी, राष्ट्रपतिक सहभोज मे चमकैत हुनकर रुअबगर दोसर पत्नी गरीब, गोंग लाटीक उपस्थिति कोना सहि सकितथि?

"उठू डार्लिंग, लंच दोसर ठाम करबै।"प्रभा कहलखिन आ मेजर उठि क’ ठाढ़ भ’ गेला। थोड़बे कालमे जेना ओ बूढ़ आ भीतरसँ खाली भ’ गेल छला।

बानो मरि गेल छली। आब त ओ लाटी छल। प्रभुए ओकर मालिक आ प्रभुए सहारा छलखिन।

रतिविलाप

अनसूयाक विवाह आ वैधव्यक समाचार हमरा सँगहि भेटल। कहिओ ओ हमर अंतरंग सहपाठिनी छली। हँसमुख, चञ्चल, अनसूया पटेल जहन गुरुदेवक नृत्य-नाट्यमे कामदेव बनि गाबथि 'कटाक्षे रबे मम पञ्चम शर, ताई आमी दीनू बर '(अहाँक कटाक्षमे सदैव हमर पञ्चम शर रहत, हम ई वर दै छी)त' लगै जेना सत्ये गुरुदेवक कविता साकार भ' गेलनि। ओहि भ्रूविलासमे ने अनावश्यक खोंच खाँच करऽ पड़ै, ने ओहि अधरक स्वाभाविक लालिमाकेँ रंगबाक प्रश्न उठय, ताहिसँ अन्य पात्रकेँ सँवारि, गौरी दीदी जखन हुनका लग आबथि, त' ठिठकि क' हँसय लागथि...'तोके आबार साजाबो की रे, सबई तो भगवान सेरे दिएछेन। '(अहाँकेँ हम की सजाउ, सब सजावट पूरा कइए क भगवान अहाँकेँ पठेने छथि।)

लड़कीमे सत्ते कोनो शापभ्रष्ट गन्धर्व-कन्याक देवदत्त प्रतिभा छलै। ओएह अनसूया एक दिन अचानक पिताक अस्वस्थताक तार पाबि जे अहमदाबाद गेली से घुरि क' नहि एली। बहुत दिनक बाद हुनकर एक टा लम्बा पत्र आयल। पिताक मृत्युक उपरान्त हुनकर आश्रम आयब असंभव छलनि। मातृहीन छोट भायक भार हुनका कन्हा पर जाहि आकस्मिक वेगसँ आबि गेलनि, ओहि लेल ओ प्रस्तुत नहि छली। संगहि पिताक विस्तृत व्यापारो त' आब हुनके सम्हारबाक छलनि। 'आब गुरुदेवकेँ अपन नृत्य-नाटिका लेल दोसर कामदेव ताकै पड़तनि, आब त' भरिसक हम अहाँ सभकेँ देखिओ नहि सकब।' ई सभ पढ़ि हमर मित्र-मंडली कतोक दिन धरि अपन ओहि रसप्रिया सखीक शोक मनौलक। फेर कतेको साल हमरा हुनकर कोनो समाचार नहि भेटल। ओ भरिसक अपन

पिताक व्यापारमे व्यस्त भ’ गेल होयती आ हम अपन गृहस्थीमे।

अचानक पच्चीस वर्षक बाद हमर ओ हेरायल सखी कैसरबागमे दशहरी आ मालदह आमक ढेरीक बीच ठाढ़ भेटली। कनी काल हम हुनका अविश्वाससँ देखैत रहि गेलहुँ। एक हाथमे बेदाग, पुष्ट मालदह आम नेने ओतबे पुष्ट आ कुरूप कुँजड़ासँ आमक मोल-भाव क’ रहल छली। ने कीनय वला दबि रहल छल आ ने बेचय वला। साँप-बिज्जी जकाँ आमने-सामने तनल भरिसक दुनू गोटे बूझि गेल छलथि जे सौदा कीनय-बेचय मे क्यो नहि ठकायत। आइ कि हम पहिले बेर कैसरबाग आयल छी? ठीक दाम बाज। परिचित होइतो अपरिचित लागि रहल ओ कण्ठस्वर हमर विस्मृतिक घाव खोंचाड़ि देलक। रवीन्द्र-संगीतमे अपन कण्ठक मधु घोरय वाली कोकिलाकेँ की क्रूर काल गरदनि मरोड़ि क’ एहन निर्ममतासँ मारि देने छल? ओम्हर आमक मालिक लपकि क हुनका हाथसँ आम छीनि, दुलारसँ पोछि, फेर डालीमे एना सजा लेलक, जेना कोनो अबोध शिशुकेँ बताहक हाथसँ छीनि मायक कोरामे राखि रहल होइ। भनभनाइत अनसूया पटेल दोसर फल वाला दिस घुमली, त’ हमरा दोसर धक्का लागल। कतय गेल ओ नागिन जकाँ जमीन पर लेटाइत जुट्टी! कोनो टूटल-फूटल कब्रिस्तान पर उगल छितरल दूभि जकाँ पातर केश एकटा रबरबैंडमे बान्हल छल। एहिसँ पहिने कि दोसर आम बलासँ ओझरा अपन बदलि गेल कण्ठ-स्वरक भाला हमरा मारितथि, हम हुनका कन्हा पर हाथ राखि देलियनि आ हुनका हाथक बैग सहित एक कात घीचि लेलियनि।

"कतेक बदलि गेलहुँ अहाँ अनसूया पटेल!" हम हुनकर हाथ सोहरबैत विस्मृतिक घोर अन्हारमे ओहि नाम नाम आँगुरकेँ टोहय लगलहुँ, जाहिसँ हमरा परिचय छल।

"अनसूया पटेल नहि, आब हम अनसूया कापड़िया छी।" ओ हँसि क’ कहलनि, त’ हम चौंकलहुँ। फेर हमर अवाक दृष्टि देखि ओ अपन स्थिति स्पष्ट कयलनि, "ओना आब अहू नामक कोनो महत्व नहि रहल,

जँ चाही त’ अपन पहिल नामक ठाढ़ि पर फेर फुदकि सकै छी, मुदा आब एहि टूटल पाँखिमे दम नहि अछि, बहिन!" "मतलब?" "अहाँक विवाह कहिया भेल? खबरिओ नहि देलहुँ?"

"अहूँ कहाँ कोनो खबरि देलहुँ!" एहि बेर हमर उपालम्भ हमरे धराशायी क’ देलक। बात त’ ओ ठीके कहि रहल छथि। दुनू गोटा लग एक-दोसरक पता-ठेकान छल। एहि संसारक केहन विचित्र नियम अछि जे जाहि मित्र वा पड़ोसीक नजदीकी हुनका स्वजनोसँ बेशी आत्मीय बना दैत अछि, बिछुड़ि गेला पर लोक ओही तेजीसँ बिसरिओ जाइत अछि। नव परिवेश, नव मित्रता पाबि मनुष्यक स्वार्थी स्वभाव ओकर अतीतक सुखदसँ सुखद स्मृतिओकेँ निर्मम हृदयहीनतासँ धो-पोछि क’ बहा दैत छै। कहिओ अही अनसूया पटेलक गरमी छुट्टीक विछोहो हमरा असह्य लगैत छल आ आब पच्चीस वर्षक लम्बा अन्तरालक बीच हम कहिओ ग़लतीओसँ हुनका यादि नहि केलियनि। हुनकर उपलम्भक कोनो उत्तर देने बिना माथ निहुरा क’ ठाढ़ रहि गेलहुँ। फेर ओएह हँसि क’ हमर प्रश्नक उत्तर देमय लगली, "नव नामक कोनो महत्व नहि रहल, ई एहि द्वारे कहलहुँ कि जे ई नव नाम देने छला, ओ नहि रहला। आब ने नैहरे बचल अछि आ ने सासुरे। आब स्वतंत्र छी।"

हम पुछलियनि-"किएक, अहाँक भाय मगन?" "ओह, मगन! ओ त’ बहुत पहिनहिए जर्मनी चलि गेल छल। जर्मन लड़कीसँ विवाह कय, ओत्तहि बसि गेल। ओ हँसैत बजली, हमर जर्मन भाउज दहेजमे हमरा लेल तीन टा रेडीमेड भतीजीओ अनने छथि।" "अहाँ एहि ठाम कहिआसँ छी?"हम अपन उत्सुकता रोकि नहि पाबि रहल छलहुँ।

"अरे, हम एहि ठाम नहि, बम्बईमे छी। ओहि ठाम साड़ीक व्यापार करैत छी। लखनऊसँ चिकन, बनारससँ बनारसी, दक्षिणसँ टेम्पल साड़ी किनबा लेल प्रायः देश-भ्रमण करैत रहै छी। बम्बई पहुँचि क’ उद्योगपति सभक बिदेह सेठानी सभ केँ यैह साड़ी सभ चारि गुना दाममे बेचि साल भरि चैनक बंशी बजबै छी, बुझलौं? ओ त’ आइ सोचलहुँ, जाइत-जाइत

किएक नहि एक ढाकी मालदह आम नेने चली। चलू, नीके भेल, आइ एहि ठाम नहि अबितहुँ, त' अहाँ कोना भेटितहुँ हमरा! सामान स्टेशने पर छोड़ि आयल छी।" "तहन चलू, अहाँक सामान ल' आनै छी। आब आइ नहि जाय देब अहाँकेँ।" हम हुनकर हाथ पकड़ि लेलियनि।

"धुर बताहि, केहन गप करै छी!" हमरा आइ जाइए पड़त। परसू किछु साड़ी अमेरिकन एम्बेसी पठयबाक अछि। ओम्हर रूसमे रामलीला भ' रहल छै, सीता-स्वयंवरक लेल एक टा भारी साड़ीक ऑर्डर भेटल अछि। ओहो परसू पठयबाक अछि। चलू, कतहु एकान्तमे बैसि क' चाह पियल जाय। अचानक हुनकर थाकल स्वरमे पच्चीस वर्ष पूर्वक कैशौर्य-सुलभ ओएह उत्साह गूँजि उठलनि, जखन हमरा आश्रमक कालूक प्रसिद्ध दोकान पर चाह पीबा लेल आमंत्रित करैत छली।

हम हुनका जतय ल' गेलियनि, ओहि ठाम चाह त' खूब बढ़िया भेटल, मुदा एकान्त नहि भेटल। तखन दुनू गोटा अमीनाबादक शिवमन्दिरक शीतल असोरा पर बैसि गेलहुँ। बारह बजे मन्दिरक पट बन्द भ' जाइ छै, तैं तखन दर्शनार्थीक भीड़ नहि छल। मन्दिरक अगल-बगलमे बैसनिहार लुल्ह-नांगड़, आन्हर भिखमंगा सभ सेहो असह्य रौदक कारण केम्हरो चलि गेल छल। ओत्तहि अनसूया पटेल हमरा अपन विचित्र कहानी सुनौलनि।

पिताक मृत्युक पश्चात्, मामक सहायतासँ ओ अपन व्यापार संभारि लेलनि, मुदा व्यवहारकुशल संसारी मामा भगिनीक समृद्धिसँ नहर काटि अपन बगिया पटबै मे कम तत्परता नहि देखेलनि। अनसूया किछु-किछु बूझै लागल छली कि मामा हुनकर विवाह अपन समृद्ध मित्रक अकर्मण्य पुत्रसँ क' देलखिन। कुटिल मामा विवाहक पूर्वे हुनकर भावी पतिकेँ एक नजरि देखा क' मुग्ध क' देने छलखिन। तखन ओ की जनै छली कि देखैमे कोनो ग्रीक देवता सन ओ सुदर्शन तरुण विवाहक पहिले राति अपन उन्मत्त अट्टहास आ ओहूसँ बेशी अपन उन्मत्त व्यवहारसँ हुनका भयाक्रांत क' जीवन-भरिक लेल पुरुष मात्र लेल पाथर बना क' छोड़ि देतनि। दोसर

दिन श्वसुरे हुनका एकान्तमे बजा क’ स्थिति स्पष्ट क’ देने छलखिन,- "बेटी, एकरा अहाँ जेहन काल्हि देखलिऐ, एहन ई नहि छल। मिर्गीक दौरा एकरा बचपनेसँ पड़ै छलै, मुदा एम्हर दू वर्षसँ ओहो बंद छलै। हम सोचने छलहुँ जे सुंदरी सुशील वधू पाबि ई मानसिक रूपसँ स्वस्थ भ’ जायत। हम अहाँक मामाकेँ सभ किछु कहि देने छलियनि आ इहो कहि देने छलियनि जे अहूँकेँ सभ बात कहि देथि। जँ अहाँकेँ कनिओ आपत्ति हुअय, त’ ई सम्बन्ध हमरा मान्य नहि होयत! ओ निश्चय अहाँकेँ कहने होयता! की बेटी?"

उत्तरमे अनसूया पटेलक पैघ-पैघ आँखि सँ टपटप नोर बहय लागल छलनि। बेर-बेर पूछला उत्तर ओ नकारात्मक मुद्रामे माथ डोला देलखिन।

"ओह, ई त’ हरसुखक भयानक अन्याय छनि। ओ त’ कहलनि-हमरा भगिनीकेँ कोनो आपत्ति नहि छनि, ओ कहै छथि जे हमरो कुलमे त’ दोष अछि, के करत हमरासँ विवाह? बहुत बुझनुक छथि हमर अनसूया।" "दोष?"अनसूया चोटाहल साँपिन जकाँ फुफकारि उठली।

"हँ बेटी, दोष त’ हम स्वयं अपना आँखि सँ देखने छलहुँ।" करनदास भोगीदास कापड़ियाक स्वर अनसूयाक कानमे गरम छड़ जकाँ सन्हिया गेलनि।"अहाँक दादी केँ अहाँक दादा सीधा मुजरासँ घीचि अपना घरमे प्रतिष्ठित कएने छलखिन। लोक कहै अछि जे हमरा अन्नप्राशनोमे हुनका पाँच हजार बयाना द’ क’ नचबा लेल बजायल गेल छलनि।" अनसूयाक लेल ई एहन चोट छलनि जे जीवन-भरिक लेल हुनका पंगु बना देलकनि।

"अहाँ चिन्ता नहि करू, बेटी " करनदासक स्वर आरो मद्धिम भ’ गेल छलनि।" अपराधी हम छी, अहाँक सासुक मृत्यु हमरा विक्षिप्त बना देने छल। सोचैत छलहुँ, गृह-त्यागी बनि निकलि जायब, मुदा अही पुत्रक माया हमरा जकड़ि लेने छल। गृहस्थे रहि हम अपन साधनामय जीवन बितेलहुँ। कर्म, ज्ञान आ भक्तियोगक गूढ़-तत्वकेँ हम अही गृहस्थाश्रममे आयत्त कयलहुँ। आब सोचै छी, हमरासँ घोर पाप भ’ गेल। अहाँक मामा जानिए-बूझि क अहाँके अन्हार इनारमे ठेलि देलनि आ एक धक्का

हमहूँ द’ देलहुँ। चाहला उत्तर त’ हम अहाँकेँ खसबासँ बचाइए सकैत छलहुँ। मुदा जे भ’ चुकल छै, ओहि लेल कनबा-पिटबासँ कोन लाभ? हम अहाँकेँ विश्वास दिआबै छी बेटी, जा धरि हम छी, अहाँक क्यो किछु नहि बिगाड़ि सकत। हमर एहि अटूट सम्पत्तिक एकमात्र उत्तराधिकारिणी आइसँ अहाँ छी। जतय घुमबाक मन हो, जेना रहबाक हो, हम कहिओ किछु नहि कहब।"

"हमर पतिकेँ निचला मंजिलक एक टा कोठरीमे राति-दिन बान्हि क’ राखल जाय छलन्हि। हम अपना खिड़कीसँ देखियै, ओ अपन गोर-गोर हाथ जंगलासँ निकालि लोहक छड़सँ जूझि रहल छथि। मोनकेँ विकल करै बला हुनकर चिकरब कौखन हमरा बताहि बना दैत छल। 'खोलि दे हमरा, जाय दे हमरा...कतय गेली ओ? हमर सुंदरी कनियाँकेँ ई कसाई सभ कतय नुका देलक? पापा, हम त’ ओकर औंठा पकड़ने छियै, की हम ओकरा भगा क’ अनने छियै?' फेर ओ थाकि घण्टों चुप्पी सधने मुर्दा बनि जाथि। ई सभ देखि हम भयसँ त्रस्त भ’ जाइ! ओहि अभागलकेँ किछु भ’ त’ नहि गेलनि! कहिओ ठीक आधा रातिमे हुनकर गीतक टीस हमरा फेर अपना खिड़की लग ठाढ़ करा दैत छल। हम कहि नहि सकैत छी बहिन, ओहि कण्ठमे हुनकर उन्माद नहि जानि कोन मोहिनी घोरि गेल छल

ऐ ऐने हैया ना कोर माँ राख जो
ऐने हाथ नी हथेली माँ राख जो
जोबनियूँ चाल्यूं जशे

(अरे एकरा हिरदयक कोरमे नुका क’ राखब, एकरा हाथक तरहथ्थी पर राखब, ई यौवन चलि जायत।)

"हमर आँखिसँ नोर बहय लागय। मोनमे आबय, भागि क’ जाइ आ हुनकर सुन्दर देहसँ बन्हल लोहाक जिंजिरकेँ तोड़ि हुनकर गरदनिमे बाँहि ध’ दी। तुरत देखल दुःस्वप्न जकाँ विवाहक प्रथम रात्रिक ओ स्मृति सेहो हम बिसरि जाइ आ घण्टों अपन खिड़कीक छड़ पकड़ने मधुर कण्ठक टीस सुनैत रही। घरक दू टा पुरान नौकर हुनका पकड़ि क’ जबरदस्ती नहबनि,

त’ हम नुका क’ खिड़कीक फाँकसँ हुनका देखैत छलियनि। कखनो पानि छपछपबैत ओ कोनो दुधमुँहा बच्चा जकाँ किलकारी मारथि आ कखनो मुँह मे पानि भरि दुनू नौकरकेँ भिजा, बचपना सँ हमरो हँसा देथि। हमर यत्नसँ नुकायल मुस्की सेहो हुनकर तीव्र दृष्टिक पकड़मे आबि जानि आ ओ एक बेर फेर सौराष्ट्रक ओहि मधुर लोकगीतसँ हमरा व्याकुल क’ देथि-'जोबनियूँ चाल्यूं जशे।' हमरा लगैत छल, जेना बेर-बेर झकझोरि क’ ओ हमरा चेतावनी द’ रहल छथि–'देरी नहि करू अनु, नहि त’ अहाँक ई यौवन चलि जायत।'

"एक दिन बाबूजीक बहुत आग्रह पर हुनका सँग हुनकर बूढ़ बहिनसँ भेंट करय हुनका गाम गेलहुँ। पिसिया सासु उपहार मे देल लाल पाणेतरक गोटा-किनारी लागल साडला (गुजराती वस्त्र) अपना हाथें पहिरेलनि। विवाहक बाद हम अपन शृंगारक प्रति एकदम उदासीन भ’ गेल छलहुँ। ककरा लेल सजितहुँ? के छल, जे हमर शृंगारक प्रशंसा करैत? ओहि दिन हम ठोप सेहो नहि कयने छलहुँ। पिसिया सासु हमरा बहुत डँटलनि। फेर कंकुक पैघ-सन ठेठ गुजराती ठोप कय, बड़ी काल धरि हमर ठुड्ढी पकड़ि, हमरा देखैत रहली। एकटा लम्बा साँस घीचि ओ बाबूजीकेँ कहलखिन, 'करसनिया, हवे तू प्रायश्चित कर मारा पाटया!' (करसनिया, आब तों प्रायश्चित कर अभागा!) नहि जानि केहन उदासीमे डूमल हम दुनू लौटलहुँ, त’ दुर्भाग्य मुँह बौने हमर प्रतीक्षा क’ रहल छल। असोरा पर पहुँचिते हमर खून जेना जमि गेल। पानिक पैघ बाल्टीसँ पानि निकालि, नोकर सभकेँ भिजबैत हमर उन्मत्त पति नहा रहल छला। आब सौचै छी, केहन मूर्ख छलहुँ हम! ताबत ओ हमरा नहि देखने छलाह, ओहि क्षण जँ हम भागि जयतहुँ, त’ की हमर ओतेक पैघ सर्वनाश भ’ सकैत छल? मुदा विधनाक लिखल त’ हमरा कठपुतरी जकाँ नचा रहल छल। हम हुनका एकटक देखि रहल छलियनि। दूरसँ जाहि गौरांगक देह-छटा हमरा आकृष्ट कयने छल, लगसँ हमरा देह-मोनक सुधि-बुधि बिसरा देलक। जेना हमर दुनू पएरकेँ केओ कील ठोकि क’ धरतीमे गाड़ि देने छल। कतेक गोर

छला ओ, आर केहन ठाढ़ नाक छलनि! भीजल केशक लट हुनकर शुभ्र ललाट पर सटल छलनि! अचानक हुनकर दृष्टि हमरा पर पड़लनि आ पल-भरिक लेल ओहि रस भरल शरबती आँखिक उन्माद दूर भ' गेलनि। मातल हाथिए जकाँ चिंघारि क' ओ उठला, दुनू बलिष्ठ नौकरकेँ धक्का मारि क' खसा देलखिन आ भागि क' हमरा दिस आबय लगला। एहिसँ पहिने कि हमर अकचकायल श्वसुर हमरा बचबितथि, फूल जकाँ हमरा कोरामे उठा क' छत दिस पड़ेला। ओहि स्पर्शमे कतौ कोनो कठोरता नहि छलै बहिन, कनिओ नहि। कतेक सोहाग, कतेक लाड़-दुलार छलै ओहि स्पर्शमे! ठोरमे किछु बड़बड़ाइत, सीढ़ी फनैत चल जाइत छला। छतक एकान्तमे भयसँ थरथराइत हमर ठोर पर ठोर राखिनहि छला कि बाबूजी गरजला, 'हुनका छोड़ि दहुन, नीचाँ रखहुन।' तामस आ भयसँ हुनकर देह थरथरा रहल छलनि, किएक त' आब हुनकर पुत्र हमरा कोरामे नेनहिए, छतक ऊँचका मुँड़ेर पर चढ़ि गेल छलनि। 'सुनि नहि रहल छें तू, विक्रम!' पहिल बेर हम श्वसुरक उग्र तेज स्वभाव देखलियनि।

"आ जँ हम हिनका नेनहि नीचाँ कूदि जाय तहन?" एक क्षणक लेल हम ओहि विवेकहीन विक्षिप्त मनुष्यकेँ कनखिए देखि भयसँ आँखि मूनि लेलहुँ। कोनो शाखामृगे (बानरे)जकाँ अपन छातीसँ सटने आब ओ छतक सभसँ खतरनाक मुँडेर पर ठाढ़, अपन पिताकेँ चिढ़ा रहल छला। हुनका पाछाँ ठाढ़ छल विवश नौकरक लम्बा लाइन। एक क्षणक लेल फेर हमर आँखि खुजल। मुँड़ेरसँ नीचाँक घातक गहिराइ देखिते हम अपन निकट प्राय मृत्यु निश्चित मानि स्वीकार करबाक लेल विवश भेलहुँ। हमर आँखि बन्न छल। बीच-बीच मे हँफैत, उत्तेजित पतिक नग्न लोमश छातीक स्पर्श हमर कपोलकेँ सोहरबैत हमरा डरसँ मूर्च्छित प्राय केने जा रहल छल। 'अच्छा पापा, आब हम कुदलहुँ!' हुनका हम क्षण-भरिक लेल जकड़ि लेलियन्हि। फेर सब स्वप्ने जकाँ घटित भ' गेल। बाबूजी लपकि क' हमरा छिनलनि मुदा नौकर सभक चिकरब हमरा कटैत चलि गेल, बहिन। बाबूजी पुतौहुकेँ त' बचा लेलनि, मुदा बेटाकेँ नहि बचा सकला। हमरा

छिनबा काल अनचोकेमे हुनकासँ लागि गेल धक्का पुत्रक हाड़क चूर बना देलकनि। तत्काले मृत्यु भ' गेल छलनि, मुदा शहर-भरिक डॉक्टर निर्जीव देह कैँ जँचबामे कोनो कसरि नहि छोड़लनि। पुत्रक बलि दय जे हमरा बचेलनि, हुनका आब हम की कहि सकैत छलियनि? कतेक दिन तक आत्मीय स्वजनक आयब-जायब लागल रहल, फेर ओहि विशाल हवेलीमे ओहने मनहूस चुप्पी पसरि गेल, जेहन भयानक तूफानक बाद समुद्र-तट पर पसरि जाइत छै। खबर भेटिते मामा-मामी, हमर घायल मोनक मरहमपट्टी करबा लेल हवाइ जहाजसँ आबि गेला। बाबूजीक उपस्थितिएमे, मामा बेर-बेर अपना संग सूरत ल' चलबाक जिद करै लगला त' हम तामसे बताहि भ' गेलहुँ। नहि जानि हुनका की सब कहि देलियनि, फेर बाबूजिए हमरा शान्त कएलनि।

"अहाँ निश्चय अनुकैँ अपना संग ल' जा सकैत छियनि हरसुख, आब हिनका पर हमर कोनो अधिकार नहि रहल। हुनकर संयत स्वर क्षण-भरिक लेल गह्वरित भ' गेल छलनि, अनु बेटी! अहाँ अपन मामक संग जाइ चाही, त' आइए जा सकैत छी। अहाँक हथखरचा नियमित रूपसँ अहाँ लग पहुँचि जायत।"

"उत्तरमे हम मामाकैँ जाहि आग्नेय दृष्टि सँ तकलियनि, तकरा बाद किछु कहबा नहि कहबाक प्रश्ने नहि उठैत छल। बेचारे सकपका क' ओही दिन निकलि गेला। किछु दिन फेर ओही नीरस दिनचर्यामे बीति गेल।

एक दिन बाबूजी हमरा अपन कोठरीमे बजा पठौलनि। 'अनु बेटी, हम अहाँकैँ एकटा विशेष प्रयोजनसँ बजेने छी। बैसू अनु! 'हम हुनका पएर लग राखल मोढ़ा पर बैसि गेलहुँ।

'जेना-जेना समय बीति रहल छै अनु, हमर शोक हमर करेज पर भारी पाथर बनि हमर दम घोंटि रहल अछि। एहि कोठरीकैँ देखि रहल छी न? जतय अहाँ बैसल छी, ओत्तहि ई मोढ़ा राखि कहिओ अहाँक सासु बैसैत छली। अही वायव्य कोनमे अहाँक पति जन्म नेने छला। ओहि सामने वाला कोठरीमे हुनकर मूड़न भेल छलनि। उपनयनक लेल विंध्यवासिनी ल'

गेल छलियनि। ओहि शो-केसमे आइओ हुनकर बाल्य-कालक निर्जीव खेलौना सभ सजा क' राखल छै। ओहि शीशीमे राखल विक्रमक पहिल बेर कटल रेशमी केश, जे अहाँक सासु रखने छली, लाख चेष्टा कयलो उत्तर हम हुनकर फूलक संग गंगामे प्रवाहित नहि क' सकलहुँ। ऊपर राखल अटैचीमे एखनहुँ हुनकर स्कूलक ब्लेजर, कलम, दर्जनो कमीज, ओहिना सरिया क' राखल छै, जेना हुनकर माँ राखि गेल छलखिन। कतहु पढ़ने छलहुँ कि मनुष्य कहिओ कोनो बीमारीसँ नहि मरैत अछि, मरैत अछि अतीतक स्मृतिक बोझसँ। राति क' विक्रमक स्मृतिक यैह निर्जीव अवशेष अतृप्त प्रेतात्माक निष्ठुरतासँ हमर करेज मचोरै लगैत अछि। आब जँ हम एहि ठाम रहब, त' पुत्रे जकाँ भरिसक हुनकर लोहक जिंजिर एक दिन हमरहु जकड़ि लेत। अही द्वारे हम निश्चय कयलहुँ बेटी, स्मृतिक एहि मुर्दा अजायबघरकेँ बेचि-बाचि कतौ दूर चलि देब। '

'अहाँ केहन गप करै छी बाबूजी!' हम हुनकर अप्रत्याशित प्रस्ताव सुनि काँपि उठलहुँ। किछुए मासक परिचित ओहि मनहूस हवेलीक प्रति हमर मोह आइओ ओहने छल। ओकर एक-एक जँगला, एक-एक सीढ़ी, गेट, केबाड़ सभक एक-एक चिटखिनीक आवाज सुनिते हमरा बुझा जाइत छल जे कोन केबाड़-खिड़की फूजल अछि, कोन बन्द। आधा रातिक हवाक मदिर झोंकक संग कोनो दुःसाहसी डाकू जकाँ कखनो कोठरीमे घुसि आयल मैग्नोलियाक सुगन्धि हमरा जगा दैत छल आ क्षण-भरिक लेल लगैत छल बहिन, जेना पानि छपछपबैत ओ फेर गाबि रहल छथि :

ऐ ऐने हैया ना कोर माँ राख जो

जोबनियूँ चाल्यूं जशे

पसीना-पसीना भेल हम ओहि अन्हार कोठरीमे थरथराइत, कँपैत आँखि बन्न क' लैत छलहुँ, ओहि नग्न लोमश छातीक विस्तृत स्पर्श एक बेर फेर हमर नोरसँ भीजल गाल सोहराबय लागय। घरक बुढ़िया नौकरनी रनियत बाई हमरे कोठरी मे सूतैत छल, तैंयो हम भरि राति सूति नहि सकैत छलहुँ। अनियमित निन्न आ आहार हमर देह आ मोनकेँ बेतरीका तोड़ि

रहल छल। ई भरिसक बाबूजी बूझि गेल छला।

'बाबूजी, की अहाँ हमरा ध्यानमे राखि क' ई प्रस्ताव क' रहल छी? हमरा एहि ठाम कोनो कष्ट नहि अछि।' हम दृढ़ स्वरमे कहलियनि।

'नहि बेटी, 'बाबूजीक स्वर हमरोसँ बेशी दृढ़ छलनि, हम झूठ नहि बाजि सकैत छी। एहिमे हमरे स्वार्थ बेशी अछि। अहाँक़ें एखन कुटिल समाजक घृणित मनोवृत्तिक अनुभव नहि अछि। हमर वैभव, अहाँक कम अवस्थाक वैधव्य, अहाँक सौंदर्य कखनो अपना दुनू गोटा पर घातक हथगोला फेकि सकैत अछि। एहन गोला एकहि बेरमे जरा क' मनुष्यक प्राणे टा नहि लैत छै, जीवन भरिक लेल ओकरा तड़पबा लेल छोड़ि जाइ छै, अनु बेटी! समाज त' सहोदर भाय-बहिनक एकान्तवासकेँ सेहो नीक दृष्टि सँ नहि देखि सकैत अछि। दुर्भाग्यसँ हम विधुर छी आ अहाँ विधवा, एक दिन...

'हम तामस सँ कँपैत बिच्चेमे टोकि उठलियनि, 'बाबूजी क्यो एहन नीचता नहि क' सकैत अछि। ई अहाँक मोनक शंका अछि। '

'जँ, एहने होइतै, अनु बेटी! 'हुनकर करुण हँसीमे वर्षासँ नहायल हवाक झोंक सन आर्द्रता छलनि। काल्हि बहुत राति धरि लॉनमे टहलैत रहलहुँ। लौटय कालमे सोचलहुँ, नौकर सभक क़्वार्टर दिस चक्कर लगेने चली। हम अपना कानसँ सुनलहुँ, हमरे नमकहराम नौकर हमरे गरदनि पर छूरी फेरि रहल अछि। कहि रहल छल-जानिए-बूझि क' त' रँडुआ बुढ़बा पागल बेटाकेँ छत पर सँ धकेलि देलकै, जाहिसँ ता जिनगी सुन्दरी जवान पुतहुक संग रंग-रभस क' सकय। सभ सम्पत्तियो त' लिखि देलकै पाटनक पटरानीक नाम!..."हम ठेहुनमे मूड़ी गोति कानय लगलहुँ। ओह! केहन नीचता पर उतरि जाइत अछि समाज! मरल साँपक आँखि कोंचइमे सेहो मनुष्यक़ें कखनो केहन अनिर्वचनीय आनन्द भेटैत छै। हमर सिसकीसँ कँपैत पीठकेँ बाबूजी एक बेर सोहरा क' कहलनि, 'नहि कानू अनु, अहाँक नोर हमरा नहि देखल जाइत अछि। हमरा आर अपराधी नहि बनाउ बेटी! जतेक जल्दी भ' सकत, एहि दूषित वातावरणसँ बाहर ल' चलब। हमरा

विश्वास अछि जे नव आकाशक नीचाँ मनुष्य सदैव एकटा नव जीवनक आरम्भ क’ सकैत अछि। '

"फेर बाबूजी आठ दिनक भीतर कहिओ प्राण सँ प्रिय ओहि हवेलीकेँ ओकर एक-एक स्मृति-चिह्नक संग बेचि-बाचि, बिना ककरो किछु कहने, हमरा ल’ क’ बम्बई आबि गेला। ओत्तहि हमरा लेल एकटा बुटीक खोलि देलनि 'इंद्रधनुष।' अपन नामकेँ सार्थक करैत हमर ओ दोकान बीस-बीस सेरक भारी टेम्पल साड़ी, औरंगाबादी, बनारसी, चन्देरी साड़ीक मौलिक आभासँ मासे भरिमे पूरा शहरमे प्रसिद्ध भ’ गेल। बड़ौदा आ सूरतक असली जड़ी। लखनउक कारचोबी-बादलाक सुनहरा बूटी, एक सँ एक समृद्ध ग्राहककेँ ओहि ठाम घीचि आननि, आ कहिओ-काल फिल्मी लगन खुजै, त’ हमर तिजोरीकेँ कनियाँ बनल चित्र-तारिका नोटसँ भरि देथि। अपन सद्यः वैधव्य-दग्ध चित्तक दाह हम नव व्यवसायक ख्यातिक बीच प्रायः बिसरै लागल छलहुँ।

"दोकानक सभ काज हमहीं सम्हारैत छलहुँ। ओम्हर घरक मोर्चा बाबूजी सम्हारने छला। जे व्यक्ति आइ धरि एकान्तसेवा आ योग-साधनामे लागल छला, हुनका लेल ई नव अनुभव छलनि। हमरा कखनो-काल बहुत दुःख होइत छल आ हम कहियनि...'बाबूजी, अपना रहैत हम अहाँकेँ ई सभ करैत देखै छी त’ बड़ ग्लानि होइत अछि। "बताहि नहितन, 'ओ हमरे डाँटि दैथि, 'हमर गुरुदेवक कहब छलनि, बेटा, निःस्वार्थ जनसेवा अपन जीवनक लक्ष्य बनेने राखब। इहो त’ जनसेवे अछि।’

"हम दोकान जाइ लागी, त’ ओ जलखैक डिब्बामे अचारक फाँक सँ ल’ क’ हरियर मेरचाइ, नोन सेहो रखनाइ नहि बिसरथि। साँझ क’ थाकल-ठेहिआयल आबी त’ देखियै जे हमर बूढ़ श्वसुर गैस जरा क’ हमरा लेल चाय बना रहल छथि। ओह! केहन कठोर प्रायश्चित क’ रहल छथि बाबूजी! ने कतौ गेनाइ, न एनाइ। ने कोनो मित्र, ने कोनो आत्मीय। हम कइएक बेर नोकर राखय लेल कहलियनि, मुदा डपटि क’ कहथि, 'नहि, नोकर रखबाक की काज छै! पढ़ै त’ छी अख़बारमे, कहिओ कोनो

नोकर मालिकक गरदनि मोंकि क’ भगैत अछि, क्यो मालकिनक! काज त’ चलिए रहल अछि। सत्ते कहै छी अनु बेटी, नोकरक भीड़-भाड़क बाद, हमरा अपन स्वावलम्बी जीवन बहुत नीक लागि रहल अछि। '

"मुदा एक दिन हम दोकानसँ घुरलहुँ, त’ हमरा संग ओहि श्याम-सलोनी किशोरी क्रेँ देखि बाबूजी चौंकि गेल छला।

"बाबूजीकेँ प्रणाम करहुन, हीरा, हम एहन स्नेहपूर्ण अधिकारसँ कहलियै, जेना ओ हमर सहोदर छोट बहिन होइ। 'आइसँ ओ हमरे नहि, तोरो बाबूजी छथुन, बुझलही? खूब मोनसँ हिनकर सेवा करिहुन। हीरा लजा क’ प्रणाम करय झुकल, त’ बाबूजी झिझकि क’ पएर समेटि लेलखिन।

"एम्हर आ, तोरा अपन कोठरी देखा दियउ। आइसँ तों ओत्तहि सुतबें। 'ओकरा अपन कोठरीक सफाइक जालमे ओझरा हम बाबूजी लग अयलहुँ आ हँसि-हँसि क’ अपन दुःसाहसी डेगक भूमिका बान्हय लगलहुँ। जेलक डॉक्टरनी नीला नागर हमर पुरान कस्टमर छली, हुनकेसँ हम हीराकेँ माँगि अनलियनि।"दोकानक काज बहुत बढ़ि गेल अछि, बाबूजी! भारी-भारी साड़ी देखबैत-देखबैत हमर बाँहि दुखाइ लगैत अछि। ई बेचारी बहुत दुखियारी लड़की अछि, काल्हिए त’ छूटल अछि। " कतय स छूटल अछि?'बाबूजी जेना बिजलीक नाँगट तार छूबि नेने होथि। 'जेल स, आर कतयसँ छुटतै बाबूजी! हम बहुत यत्नसँ स्नेहपूर्ण मुस्कीक जाल पसारलहुँ, मुदा बाबूजीक तमसायल मुद्रा देखि हम स्वयं सहमि गेलहुँ। हमर ज्ञानी श्वसुर कि योगबलेसँ ओहि अभागीक अतीत जानि गेल छलाह?

"हम आँखि झुकेनहिए ओकर कलुषित अतीत एना दोहराबय लगलहुँ, जेना कोनो बच्चा कठोर शिक्षकक बेंतक डर सँ सहमि क’ कंठस्थ कएल पाठ सुना सुना रहल होइ–'चौदह वर्षक अबोध बालिका छल। विवाह भेल छलै एकटा बूढ़ पागलसँ, ओ दिन-राति ओकरा मारय, नोचै, खसोटै छलै। 'हमर वाणी आब दुःसाहसी बनि, बूढ़ बाबूजीकेँ पल-पल आतंकित कयने जा रहल छलनि। जेना हम हीराक नहि, स्वयं अपन

अभिशप्त अतीत दोहरबैत, हुनकासँ दयाक भीख माँगि रहल होइयन्हि। 'बेचारी कइएक रातिसँ सूति नहि सकल छल। एक दिन भूखल-पियासल असोरे पर सूति रहल। अचानक पतिक उन्मत्त अट्टहास सुनि चौंकि क' उठि बैसल। दूनू हाथकेँ सधैत ओ बताह, एकर गरदनि मोंकय लेल बढ़ल आबि रहल छल। एहि अभागिनकेँ बचबै लेल ने ओहि ठाम ओकर सासु छलखिन, ने श्वसुर, ने देओर आ ने भैंसुर। सब मेला देखय गेल छलाह। बतहा आस्ते-आस्ते, दाँत कटकटबैत, अपन पुष्ट हाथक फंदा एकरा गरदनिमे देबय आगाँ बढ़ल, आ ई ओत्तहि राखल नव पघड़िया घीचि क' मारि बैसलि। पघड़िया गरदनि पर लगलै आ नस कटि गेलइ। तीने घंटा मे एकरा अपन ओहि उन्मत्त सहचरसँ सभ दिनक लेल मुक्ति भेटि गेलइ, मुदा आजन्म कारावासक दण्ड स्वीकार कय मूल्य चुकबै पड़लै। पहिने नासिक जेल पठायल गेल, फेर नागपुर। अपन सौम्य आचरणसँ, स्वयं दण्डक घेरा काटैत, ओ गाँधी शताब्दीमे, एक बेर फेर बन्हनक घेरा सँ निकलि आयल। एकर नैहर, सासुर चिट्ठी पठाओल गेलै, मुदा केओ लेबय नहि एलै। अन्तमे, काल्हि हमहीं रुक्का लिखि क' एकरा एहि ठाम नेने एलिऐ। केहन आश्चर्य छै कि ठीक हमरे सन जीवनक पुनरावृत्ति विधाता एहि अभागिनक जीवनमे भरि देलखिन। '

"ई अहाँ की कयलहुँ अनु, एक पतिहन्ता केँ अपना घरमे रखबाक अनुमति हम कहिओ नहि दय सकैत छी। 'बाबूजीक ललाटक झुर्री पसीनाक बुन्नसँ आर टेढ़-मेढ़ लागि रहल छलनि। 'ईमानदारीसँ देखल जाइ, त' हमहूँ पतिहन्ता छी बाबूजी! की हमरे कारण अहाँक पुत्रक मृत्यु नहि भेल?'कोनो चतुर वकील जकाँ अपन दुर्बल पक्षोकेँ अपन मुखर तर्कसँ पुष्ट बनबैत हम डेग-डेग पर अपन दुर्बल श्वसुरकेँ पराजित कएने जा रहल छलियनि।

"अहाँक इच्छा, बेटी, 'बाबूजी एकदम्मे हारि मानि लेलनि, 'मुदा जानि-बूझि क' माछी निगलब की अहाँ सन बुद्धिमतीकेँ शोभा दैत अछि? हम अहाँकेँ बहुत पहिनहिए कहने छलहुँ अनु, अहाँक कोनो निर्णय पर

हमरा कहिओ आपत्ति नहि होयत। अहाँ आइओ ओतबे स्वतंत्र छी, मुदा हमरा अहाँक एकटा अनजान अपराधिनीकेँ एना घर ल' आनब नीक नहि लागल, बेटी! '

"तैंयो ओकरा हम जीवन भरिक लेल अपन आश्रय देबाक निर्णय ल' चुकल छलहुँ। किछु दिन तक बाबूजी आ हमरा बीच एकटा अजीब तनावक देवार ठाढ़ भ' गेल छल। हीराक अनधिकार प्रवेशक संग बाबूजीक अध्ययन गहनसँ गहनतर होइत चलि गेलनि। दोकानसँ आबी त देखियन्हि बाबूजी जानि-बूझि क' शालसँ चेहरा झाँपि पड़ल छथि। सहमल-सहमल बेचारी हीरा काजमे लागल रहैत छल। ओकर फुर्ती, सुगढ़ता देखि कखनो-कखनो हमहूँ दंग रहि जाय। हम ओकरा जेहलमे सेहो देखने छलियै। ऊंच क' पहिरल एक आँगुर कोर वाला मोट साड़ी, आकारहीन ब्लाउज़मे ओकर यौवन, जेना कोनो मदारिक पुरान पेटारीमे नुकायल नव पकड़ल गेल नाग जकाँ, एखन धरि घातक कुंडलीमे मूड़ी नुकेने बैसल छल। मुक्त होइते आब ओ फन उठेने कोनो दुःसाहसी दर्शककेँ डेरा सकैत छल।

" बादमे बीत-भरिक ओ छौंड़ी नव परिवेशक नव लटका ग्रहण करबामे जेहन तत्परता देखेलक तेहन कोनो सीखल-पढ़ल मॉडल सेहो नहि देखा सकैत छल। हमर बुटीक, आधुनिका फैशनेबल स्त्रिगणक प्रिय क्रीड़ास्थली छल। बेशी काल ओहि ठाम बम्बइक उर्वशी लोकनिक भीड़ रहैत छल। हुनकर नव सँ नव वेश-भूषा, चालि-ढालि, हँसी, कटाक्ष, हीरा देखिते-देखिते अपन विलक्षण स्मृतिक कीलसँ गाड़ि क' राखि दै आ ओकर सुरुचिक आश्चर्यजनक प्रगति हमरा स्तब्ध क' दैत छल। कखनो-कखनो ओ हमरा संग दोकान चलै लेल तैयार भ' क' अबै, त' सत्ते कहै छी बहिन, एकटा विचित्र हीनभावना हमरा पल-भरिक लेल दुखी क' दैत छल। ने मुँह, ने कान, तैंयो लापरवाहीसँ आँचर फेकबाक छटा, परिपाटीसँ बान्हल गेल खोपा, खोपामे लागल बेलीक दक्षिणी गजरा, सुडौल गरदनिमे कारी तागमे गूहल सोनक ताबीज, चलबाक छवि आ

टेढ़ मुस्की देखि केओ नहि कहि सकैत छल जे चारि मास पूर्व ओ समाज-परित्यक्ता कोनो भयानक बिरादरीक सदस्या रहल होयत। हमर ग्राहिका सभमे केओ ओकर सुडौल ठुड्ढी परहक गोदना पर मुग्ध छली, त' केओ ओकर उज्जर दाँतक चमक पर। बातसँ मोहैमे ओ चतुरा कोनो प्रसिद्ध डिपार्टमेंटल स्टोरक सीखल-पढ़ल सेल्समेनकेँ बेकूफ बना सकैत छल। हमर ग्राहिकामे सब सोलह वर्षक सुन्दरिये अबैत छली से बात नहि छलै। कखनो-कखनो धनकुबेर सेठक एहन- एहन कुरूप आ अतिशय मोट सेठानी सभ आबि जाथि कि हमर बुटिकक सर्वश्रेष्ठ साड़ी सेहो हुनकर अंग लागि म्लान भ' जाय। बेर-बेर, दर्पण देखा हुनका रिझयबाक हमर चेष्टा व्यर्थ भ' जाय आ दुःशासनक घीचल चीर जकाँ साड़ीक अम्बार लगा हम हांफै लगैत छलहुँ, त' हीरा लपकि क' विषम स्थिति संभारि लैत छल। ओ हँसि-हँसि क' कहय- 'देखियौ मैडम, "केहन गजब कंट्रास्ट छै आ केहन बढ़िया आँचर। 'फेर ओ चञ्चल श्यामा एक टा चटख साड़ीक आँचर अपन सुराहीदार गरदनिमे लपेटि अपन उज्जर दाँतक चमकसँ कीनैबलाक मोन मोहि लै। हमरा दिमागमे त' एहन युक्ति नहि आयल छल। ओहि कोठीक आकार वाली सेठानीक बयालिस इंचक डाँड़मे साड़ी लपेटियै, त' लागै जेना कोनो मर्सिडीज ट्रककेँ साड़ी लपेटि रहल छी।

"हम त' श्याम छी, 'फेर ओ दुष्टा, अपन तुरुपक अंतिम पत्ता फेकि, सौदा पटा लै, अहाँ त' एतेक गोर छी मेम साहेब, अहाँ पर त' ई रंग आर खिलत। '

"संतुष्ट ग्राहिका जहन दामी पैकेटक संग विदा होथि, त' ओ हमरा दिस देखि गर्व आ उल्लाससँ मुसुकाइत बाजय, 'अहाँकेँ एखन सौदा करय नहि अबैत अछि, अनु बहिन, एहन-एहन महिष साड़ी कीनय आबथि त' हुनके साड़ी लपेटि क' दर्पण नहि देखबियनु। अही द्वारे त' लाल रंगसँ महिष बिदकल जा रहल छल। अरे, अहाँ स्वयं साड़ी लपेटि क' हुनका सोँझा ठाढ़ भ' जइतौं, त एखन धरि चुटकीमे साड़ी बिका गेल रहैत। 'ओ

हँसि क’ चुटकी बजेलक आ फेर मशीनी गतिसँ ओझरायल साड़ी सभकेँ धैर्यसँ सरिया-सरिया क’ राखय लागल।

"धीरे-धीरे हीरा हमर नीरस जीवनक सरस अंग बनल जा रहल छल पहिने हमर जलखैक डिब्बामे एक नीरस औपचारिकतेक अस्तित्व रहैत छल, कहिओ सैंडविच, कहिओ पराठा-तरकारी आ एकादशीक दिन त’ खाली फल, मुदा जहियासँ हमर ई नव सेविका आयल, आब ओही डिब्बामे एहन-एहन स्वादिष्ट व्यञ्जन भरि क’ आनय लागल कि कतेको वर्षसँ अवश पड़ल सात्विकी उदासीन जीह सेहो चटखार लेमय लागल।

"ईरानी होटलक पाछाँ एक टा भैया चाटक ठेला लगबै छै, अनु बहिन! की बढियाँ पानिक बताशा बनबै छै! कहू त’ दौड़ि क’ ल’ आनू?'प्रस्तावक सँगहि ओकर शरबती आँखि पानिक बताशे जकाँ जेना चहटगर रससँ छलकै लगलै।

"हम ओकरा संदेहक दृष्टिसँ देखलियै, 'की हीरा, तू एहि चाटवालाकेँ कोना चिन्हय लगलही? जहियासँ हमरा संग आयल छें, हम तोरा अपना सोझेँमे रखलियौ, फेर ई भैया तोरा कतय भेटि गेलौ?'"ओह, अनु बहिन! ओ गरदनिकेँ पाछाँ घुमा खिलखिला क’ हँसि पड़ल। हँसबाक एकर ई सर्वथा मौलिक, मोहक छटा छलै। 'एकर बहिन जे हमरा संग छलै। '

"कतय?'हम आरो कठोर स्वर मे पुछलियै। 'अरे जेलमे, आर कतय! ओकरो हमरे सन दण्ड भेटल छलै, अनु बहिन! ओहो अपन पतिक हत्या केने छल, मुदा गड़ाससँ नहि, अचारक तेलमे अफीम चटा देने छलै। '

"फेर हीरा तेहन दुधिया हँसी हँसय लागल कि चाहिओ क’ हम ओकरा डाँटि नहि सकलहुँ। पतिकेँ गड़ाससँ मारै आ जहर खुआ क’ मारबामे हीराक दृष्टिमे ततबे अन्तर छलै, जतबा बकराकेँ झटकासँ मारबामे वा हलाल क’ क’ मारबामे होइ छै।

"तामससँ कँपैत स्वरमे हम हीराकेँ कहलियै, तोरा हम लाख बेर बुझेलियौ कि तू आब अपन पिछला जिनगीक कोनो घटना याद नहि करिहें, आ ने हमरा करबिहें। ओहि छूटल बदनाम बस्तीसँ तोहर की

सम्बन्ध? ख़बरदार, जे तों ओकर दोकान पर कहिओ गेलें। '

"गे दाय! "हम कहिया गेलियै ओकरा दोकान पर, जे आब जेबै। ओ त' स्वयं छुट्टीबला दिन अपन बहिनसँ भेंट करय खोमचा ल' क' अबै आ हमरा सभकेँ एक-एक दोना द' जाइत छल।' अनायासे हीरा अपन तर्जनी ठुड्ढिक गोदना पर टिका लेलक, जेना कोनो फ़िल्मी शूटिंगक अभ्यास क' रहल होइ।

हम आब कनि नरम पड़ि गेल छलहुँ। बजलहुँ-तोरा चाट खेबाक एहने मोन भ' गेल छौ, त' चल, काल्हिए चौपाटी ल' जा क' आकंठ ठुसा दै छियौ। "लजा क' ओ मूँड़ी निहुरा लेलक आ अपन ढबढब करैत आँखिक नोर पीबाक व्यर्थ चेष्टा करय लागल।

"हमरा ओकरा पर दया आबय लागल। अभागिनक अवस्थे की छलै! जिनगीक अठारहे वर्षमे त' स्वर्ग-नर्क सब भोगि चुकल छल। ओहि दिन त' ओ उदासे रहल, ने सभ दिन जकाँ चहकल, ने हँसल, मुदा दोसर दिनसँ अपन स्वाभाविक चपलतामे आबि गेल। ओकरा मनबै लेल दोकान परसँ हम सीधा चौपाटी ल' गेलियै। पानि सहित, पानिक बताशासँ अपन गाल फुलबैत, बेर-बेर एहन निरीह कृतज्ञतासँ हमरा दिस देखै लागल कि हमर आँखि छलछला उठल।

"जानै छियै, अनु बहिन, जखन हम पहिल बेर फ़ैजाबाद गेलहुँ, '-फेर हमर पिछला दिनक देल गेल चेतौनी स्मरण कए चुप भ' गेल। फ़ैजाबाद ओकर सासुर छलै, आ ओत्तहि ओ जघन्य हत्या सेहो कएने छल।

"हँ, हँ, कह ने' हम हँसि क' बहुत दुलारसँ ओकरा उकसेलियै, एहि बेर किछु नहि कहबौ। की भेल छलै फ़ैजाबादमे?' हाथक छठम दोना फेकि, महातृप्तिसँ ओ अपन मुँह पोछलक।

"ओहि बेर नव-नव द्विरागमन भ' क' आयल छलहुँ, त छोटकी ननदि हमरा गुड़ियाक मेला देखबय ल' गेली। ओतय हमरा दुनूमे पानिक बताशा खयबाक बाजी लागल छल। हम हँसि क' कहलियै 'आ तू ननदि के हरा देलहुँन, की?

"गे दाय, अहाँकेँ के कहलक?'ओकरा ठुड्ढी पर अंकित तिनकोनमा गोदनामे अटकल बताशाक एक कण कमलक पात पर ढलमलाइत पानिक बुन्ने जकाँ हमरा मुग्ध क' देलक। आरम्भसँ अंतधरि ओ अभिनय-कुशला नटिनी अपन बहुरूपी व्यक्तित्वसँ की हमरा छलिते रहल? की ओकर हृदयक मलिनताक एकहु टा रेखा ओकर चिक्कन-चुनमुन चेहरा पर नहि अभरलै? जयबाक दिन धरि ओकर शरबती आँखिमे मायक कोरा मे किलकैत शिशु-सन निर्दोष दृष्टि हमरा सदिखन मूर्ख बनबैत रहल, बहिन!

फेर एक दिन हमरा सोझाँ एक टा विकट समस्या आबि गेल। हमर एक टा पुरान समृद्ध ग्राहिका अचानक एकटा व्यवसायीक प्रेममे पड़ि क' परिपक्व अवस्थामे विवाह क' रहल छल। ओ स्वयं एक टा ख्यातिप्राप्त फिल्म-तारिका छली। ओम्हर वर सेहो हुनके टक्करक नामी व्यवसायी छलखिन। ताहि द्वारे जेहन भारी साड़ीक हमरा ऑर्डर भेटल छल, ओकरा जुटबै लेल हमर दक्षिण-यात्रा अनिवार्य भ' उठल छल। अहुना सब साल दक्षिण-यात्रा पर निकलि, हम सीधे लूमसँ उठा क' साड़ी आनि, अपन बुटीक सजबैत छलहुँ। ताहिसँ हमर साड़ी सभमे सीधे तंदूरसँ निकलल तंदूरी रोटिए-सन सोन्हगर मिठास रहैत छलै। मुदा एहि बेर फरजाना बेग एक्कहि संगे पाँच टा टेम्पल साड़ी मँगने छली। एकहि चिंता छल, बाबूजीकेँ ककरा लग छोड़ियनु। आइ धरि, जहिया कतहु जाइ, हमर पड़ोसिन रबिया बेन बाबूजीक एतेक नीकसँ देख-रेख करैत छली कि हम निश्चिन्त भए घूमि-घामि, जतनसँ साड़ीक मोल-भाव करैत छलहुँ। हमर ओहि मुसलमानिन सखी पर बाबूजीकेँ सेहो अनन्य स्नेह छलनि। दिन-राति इबादतमे डूमल, सुमिरिनी फेरैत, ओहि संस्कारी जवान विधवाक वैधव्य हुनकर गंभीर चेहराकेँ पवित्र आभासँ मण्डित क' देने छलनि। हमर दुर्भाग्यसँ एक वर्ष पूर्व ओहो अपन राजदूत भाय लग विदेश चलि गेल छली। हमर अगल-बगलक पड़ोसी रहिओ क' हमरा लेल नहिए जकाँ छला। ताहि परसँ बाबूजीकेँ एक बेर हृदयक भयानक दौरा सेहो पड़ि चुकल छलनि। एकान्तमे बजा क' डॉक्टर हमरा बेर-बेर चेतेने छला जे हम

हुनका कहिओ एसकर नहि छोड़ियनि। कम्मे दिन बाहर रहबाक बात रहैत त’ भरिसक हम एतेक चिंतित नहि होइतहुँ, मुदा जेहन आँचर, रंग आ कारचोबीक माँग हमर ग्राहिका कएने छली, ओहि लेल हमरा दक्षिणक परिभ्रमण करय पड़त, इहो हमरा बुझा गेल छल। एक दिन हम बहुत साहस कय बाबूजीक कोठरीमे गेलहुँ। अपन अनिवार्य यात्रासँ अवगत करा, कोनोना हीराक सेवा स्वीकार करबाक वचन ल’ क’ रहबनि। हमरा लाख कहलो उत्तर ओकर स्पर्श कएल भोजन बाबूजी ग्रहण नहि कयने छला। ओतय पहुँचि हम ठिठकि क’ देहरिए पर ठाढ़ रहि गेलहुँ।

कम्बल स झाँपल, हुनकर अचल देह देखि, हमर हाथ-पएर ठंढा भ’ गेल छल। डेंचर उतारि क’ सिरमाक टेबल पर राखल गिलासमे राखि देने छलखिन। चश्मा उतरलाक बाद हुनकर झुर्रीसँ भरल पिचकल चेहरा, धँसल आँखि आ चिड़िया-सन खुजल बिन दाँतक मुँह, देखि हमरा भय भ’ गेल। हे भगवान! हिनका किछु भ’ त’ नै गेलनि! पहिल बेर हुनका पर अपन निरीह निर्भरताक बोध भेल। एतेक वर्षसँ कोनो उदार वरक विराट ठाढ़िसँ लेपटल लता जकाँ, स्वयं अपन अस्तित्व बिसरि गेल छलहुँ। ठीके त’ छलै, हमरा लेल त’ माय-बाप, सासु-ससुर, सन्तान, आत्मीयक सभ सम्बन्ध बाबूजीए धरि सीमित रहि गेल छल।' बाबूजी '! कहि हम चिचिया उठलहुँ। 'की भेल, अनु बेटी?'ओ हड़बड़ा क’ उठि बैसला आ हम दौड़ि क हुनका पएर पर माथ राखि कानय लागल छलहुँ।

"की भेल अनु, एना किएक कानि रहल छी?'ओ जहिना हमरा पीठ पर हाथ फेरथि, ओहिना हुनकर विगलित कंठस्वर हमरा आरो विवश बना, सिसकीसँ हमर देह तोड़ि क’ राखि देने छल। बड़ी कालक बाद हम तटस्थ भेलहुँ। रुमालसँ नोर पोछलहुँ आ हँसबाक चेष्टा कयलहुँ ';बाबूजी, अहाँ नींदमे एहन लगैत छलहुँ, जेना-जेना 'कहैत हम सहमि क’ रुकि गेलहुँ। जे कहय चाहैत छलहुँ से बजितहुँ कोना! मुदा बाबूजी, सभ बूझि गेला, 'जेना हम मरि गेल होइ, की?' आब ओ ठहाका मारि क’ हँसय लगला आ बजला, 'ओह, अहाँकेँ हम डेरा देलहुँ, अनु–'

"आब हम दृढ़ स्वरमे बजलहुँ, बाबूजी, एहि बेर साड़ी अनबा लेल हमरा कनी पहिने जाय पड़त। फरजाना बेगक विवाह छनि न, बहुत पैघ ऑर्डर भेटल अछि। सोचै छी, काल्हि निकलि जाय। '

"त चलि जाउ न, अनु, आइ धरि कहिओ कि हम अहाँकेँ कत्तहु जयबासँ रोकने छी!' बाबूजी आश्चर्यसँ हमरा दिस देखैत बजला ', की, अहाँक मोन ठीक नहि अछि?'

"केहन गप करै छी, बाबूजी?'हम कनी खौंझाइये क' कहलियनि, 'हमरा अपन मोनक नहि, अहाँक स्वास्थ्यक चिंता भ' रहल अछि। अहाँके एसकर कोना छोड़ब! पिछला साल त' रबिया बेन छली। '

"किएक? हम कि कोनो बच्चा छी? चिन्ता त हमरा अहाँक होयबाक चाही। एतेक दूर, सब साल एम्हर-ओम्हर बौआइ छी। ओह, बुझलहुँ हमरा हृदयक दौरासँ घबरा रहल छी की? मुदा निश्चिन्त भ' क' जाउ, अनु बेटी! एक बात हमर गिरह बान्हि लिय, जे मनुष्य एक बेर हृदयक जबरदस्त दौरा झेलि लैत अछि, ओकरा फेर कोनो चिंता नहि करबाक चाही। एहन दौरा हृदयकेँ आर मजबूत बना दैत छै। हम जहिया मरब, हृदयक दौरा हमर प्राण नहि लेत, अनु! '

"केहन अद्भुत भविष्यवाणी कयने छलाह बाबूजी! फेर हुनका हम हीराक सेवा स्वीकार करबा लेल मनाइए लेलियनि। बाबूजी, हमरा प्रति अहाँक दृष्टिकोण हरदम एहन उदार रहल, 'हम हुनका आगाँ तनि क' ठाढ़ बुढ़ारिक एकमात्र सन्तान जकाँ पटापट मुँह लागल बहस करय लगलियनि। एक बेरक अपराधी जीवन-भरि अपराधिए बनल रहत, ई हम नहि मानैत छी। हीरा जे कयलक, ओ हृदयक कुटिलतासँ प्रेरित भ' क' नहि, परिस्थितिए ओकरा अपराधिनी बना देलकै। अहाँ कहै छी न कि अनु, अहाँ हमर पूर्वजन्मक बेटी छी? त' मानि लिय, अहाँक पूर्वजन्मक एक नहि दू बेटी छथि–अनु आ हीरा। '

"हमर एहि अन्तिम दुलार भरल बहस हुनका जीति लेलकनि आ एहि प्रकारक अनेक तर्क-वितर्कसँ हुनका पराजित कय अपन सन्त ससुरक

जिम्मेदारी हीरा कैँ दय हम यात्रा पर निकलि गेलहुँ।

"एम्हर-ओम्हर भटकैत मास बीति गेल। लौटबा काल हीरा लेल सेहो गाढ़ लाल रंगक एकटा भड़कदार साड़ी कीनि लेलहुँ। हमरा बूझल छल जे गाढ़ रंग ओकरा बड़ पसिन्न छै। ओहि बेर बाबूजी लेल सेहो एक टा बहुमूल्य उपहार किनलहुँ। ओहि चौखुट नीलमक औँठी लेल बहुत दाम देबय पड़ल छल, मुदा कोनो ज्योतिषी बाबूजीकेँ कहने छलखिन जे हुनका कुंडलीक मारक दशाकेँ भगेबा लेल नीलम पहिरनाइ अनिवार्य छनि। हम अपन पहुँचबाक तार पहिनहिए द' देने छलियनि। सभ बेर जकाँ बाबूजी अहू बेर हमरा लेबय स्टेशन आयल छला आर हुनका संग हीरा सेहो आयल अछि, ई देखि हम प्रसन्न भ' गेलहुँ।

"अच्छा, त' बाबूजी, अहाँ अपन पूर्वजन्मक दोसर कुलच्छनी बेटीकेँ सेहो अपनाइए लेलिऐ! 'हम हँसैत हुनका प्रणाम केलियनि, फेर हीराकेँ आलिङ्गित क' लेलियै।

"बहुत बढ़िया हीरा! लगैत अछि, बाबूजी क सेवामे, तों हमरो हरा देलें। अहाँक एतेक बढ़िया स्वास्थ्य त' हम कहिओ नहि देखलहुँ, बाबूजी! 'लगैत छल जेना बाबूजीक अवस्था दस साल कम भ' गेल होइन्हि। ओ बंद गलाक उज्जर लम्बा कोट, उज्जर धोती, कारी टोपी पहिरने छलाह आर हाथमे छलनि चाँदीक मूंठक छड़ी। लगलै जेना चेहराक एक-एक झुर्री पर पानि छीटि, क्यो भारी लोहा फेरि देने होइ। बाबूजीक एकहरा देहकेँ जे छड़ी आइ धरि संग-संग सहारा दैत चलैत छलनि, ओ आइ स्वयं ओहि एकहरा देहक सहारा नेने चलल जा रहल छल। कोनो अवलम्ब लेल ओहि छड़ीक अस्तित्व आइ नहि छलै। ओ संग चलि रहल छल मात्र आभरण बनि क'। घर पहुँचिते हम बाबूजी आ हीरा लेल कीनल उपहार निकालि दुनूकेँ थमा देलियनि। हीरा ख़ुशीसँ उछलैत-कूदैत, तखने साड़ी पहिरबा लेल पड़ायल। हाथमे मखमली डिब्बा रखने, नहि जानि बाबूजी कोन चिन्तामे डूमि गेला।

"की देखि रहल छियै, बाबूजी! खोलि क' पहिरू न! अहाँक ग्रह-

दशा अही क्षणसँ करौट फेरि लेत। 'हम लपकि क डिब्बाक ढक्कन खोलि देलियै। हमर मोने रखबा लेल भरिसक बाबूजी औँठी निकालि क' पहीरि लेलनि।

बहुत बढ़िया नीलम छै, अनु! 'ओ अपन अनुभवी पारखी नजरिक कसौटीमे कसि बजलाह।

"बाबूजी, जानै छियै जौहरी की कहैत छल? हम उत्साहसँ नीलमक प्रशंसा करै लगलहुँ...'कहि रहल छल, सन्तान, वैभव, सुख–सब देबय बला नीलम अछि, एकदम कामधेनु–'

"बाबूजी अचानक गंभीर भ' गेला, 'अहाँ केहन सुधंग छी, अनु! हमर अवस्था की आब सन्तान, वैभव आ सुखक अछि? नीलम बड़ उग्र पाथर होइ छै, बेटी, देबय लागत त' सभ किछु देत आ लेबा पर उतरि जायत त' रस्ताक भिखारि बना क' छोड़ि देत। '

""ओम्हर लाल साड़ीक आँचर पसारि, ऐना लग ठाढ़ हीरा स्वयं अपने प्रतिबिम्बक लाख-लाख बलैया ल' रहल छल। लैत किएक नहि? ओकर जिनगीक त' ई पहिले रेशमी साड़ी छलै।

"हम जहन ओकरा फरजाना बेगक दामी साड़ी सभ देखेलियै त' ओ आँखि फाड़ि क' देखैत रहि गेल–'-गे दाय, कतेक के छै, अनु बहिन? पंद्रह सौक एक टा साड़ी! एतबामे त' आइओ-काल्हि चारि भरी सोना भेटि जयतै! '

"दोसर दिन जखन हम साड़ी सभ ल' क' दोकान पर जाय लगलहुँ त' ओ टोकि देलक, हम अहाँकेँ कहब बिसरि गेलहुँ अनु बहिन, अहाँ जखन नहा रहल छलहुँ, तहन फरजाना बीबीक फोन आयल छलनि। ओ शूटिंग पर बाहर जा रहल छथि, साँझमे औती त' घरेसँ साड़ी ल' लेती। '

"हम सेफमे साड़ी सभ राखि देलियै आ हीराकेँ लय काज पर निकलि गेलहुँ। मास दिनसँ बंद दोकानक साफ-सफाइमे हम दुनू घंटों लागल रहलहुँ। अचानक हीरा बाजल, 'अनु बहिन, हमर माथ बहुत जोर सँ दुखा रहल अछि, देह सेहो टूटि रहल अछि। लगैत अछि जेना बोखार चढ़त।

जौं अहाँ कही, त’ घर चलि जाइ। '

"ओह, पहिनहिए किएक नहि कहलें? जो बाबूजीकेँ कहियहुन, फरजाना बेग आबथि त’ सेफसँ निकालि साड़ी दय रसीद ल’ लेथिन। हमरा आइ इनकम टैक्सक कागज बनबाबय बर्वे साहेब लग जेबाक अछि। घुरबामे अबेर होयत। '

"हमरा ओहि दिन देरी नहि, बहुत अबेर भ’ गेल। घर पहुँचलहुँ त’ नीलम अपन असलियतक प्रमाण द’ चुकल छल। फ्लैट पर बड़का ताला लागल छल। ताला देखिए क’ हम चौंकलहुँ। हमरा पर्समे फ्लैटक डुप्लीकेट कुंजी रहिते छल, मुदा ओकरा निकालबाक आवश्यकता नहि पड़ल छल। ताला खोलि भीतर गेलहुँ आ नहि जानि कोन आशंकासँ प्रेरित सोझे सेफ दिस गेलहुँ। सेफक कुँजी ओहीमे लटकल छल, मुदा ओ ओतबे खाली छल, जतबा जहिया ओकरा कीनि क’ अनने छलहुँ तहिया छल। पहिने हम फरजाना बेगकेँ फोन केलियनि, मिस बेग, अहाँकेँ साड़ी केहन लागल? हम अपन कँपैत करेज आ घुरमैत दिमागकेँ यथासाध्य संयत कय, हँसिये क’ पुछलियनि।

"साड़ी? व्हाट डू यू मीन? हम त’ अहाँक बुटीक पर समयइये पर पहुँचल छलहुँ, मिसेज कापड़िया, मुदा अहाँ त’ आइ चारिए बजे दोकान बंद कय चलि गेल छलहुँ। हम त’ अहाँकेँ कहनहि छलहुँ ठीक पांच बजे हम दोकान परसँ साड़ी ल लेब। ओ खौंझा क’ कहलनि। मुदा अहाँ त’ हीराकेँ कहने छलियै जे अहाँ हमरा फ्लैट परसँ साड़ी कलेक्ट क’ लेब –

"ओह मिसेज कापड़िया, तखन त’ अहींक दिमाग ख़राब भ’ गेल अछि नहि त’ हमर। काल्हि रातिए त’ अहाँसँ गप भेल छल, दुबारा हम फोन किएक करितहुँ! '

'आई एम सॉरी मिस बेग, आई थिंक आई हैव बीन ड्यूप्ड।' हम कँपैत हाथसँ फोन नीचाँ राखि देलियै। नहि जानि हम कखन धरि हाथ-पर-हाथ धयने प्रतिमा जकाँ बैसल रहलहुँ, फेर साहस कय उठलहुँ। बाबूजीक कोठली दिस जाय लगलहुँ, त’ नहि जानि कोन आशंकासँ दुनू पएर काँपय

लागल। नहि जानि ओ घाघ छौड़ी एक बेर फेर अपन सधल हाथक सफाइ देखा गेल होइ! भ’ सकैत अछि, बिछौन पर हुनकर खूनसँ लथपथ लाशे हमरा भेटय!

"नहि-नहि, ओ एना नहि क’ सकैत अछि", हम बताहि जकाँ बड़बड़ाइत, बाबूजीक कोठली दिस लपकलहुँ आ जल्दीसँ बत्ती जरेलहुँ। पलँग खाली छल। टेबल पर राखल शीशाक गिलास मे ने डेन्चर छल आ ने निश्चित स्थान पर चश्मा। हम रहस्य मे ओझरायल ठाढ़े छलहुँ कि हमर नाम लिखल लिफाफ पर नजरि पड़ल। बाबूजीएक हैंडराइटिंग त’ छलनि।

" 'बेटी अनु,

मात्र दू शब्द लिखि क’ अहाँसँ क्षमा मँगै छी। एहि वयसमे हमरा एहि निर्दोष किशोरीक पवित्र प्रेम भेटल, ई हमर प्रभुक प्रभूत दान छनि। अनु! ई कहैत अछि, हमरा बिना आब एकर जिनगीक एको पल सार्थक नहि छै। एहन स्थितिमे, एकरा ल’ क’ अहाँक छतक नीचाँ हमरा दुनूक रहनाइ ने उचित अछि, ने वांछनीय। भगवान अहाँके सुखी राखथि। अहाँक सभ किछु अहींकेँ दय गेल छी, अपन किछु सामान संग नेने जा रहल छी, ओहो अपना लेल नहि, एकरा लेल। अहाँक शेयर, पासबुक सब पहिनहिए अहाँके दय चुकल छी।

...–अहाँक...बाबूजी '

"हम तामसे बताहि भ’ गेलहुँ। की भ’ गेल छलनि बाबूजीकेँ! कहाँ ओ अठारह वर्षक कुजरनी छौड़ी, कहाँ गुजरातक प्रसिद्ध उद्योगपति करनदास भोगीदास कापड़िया, आसन्नमृत्यु जिनका संग ताल मिला क’ चलि रहल छल, मोतियाबिंदसँ आन्हर प्राय भ’ गेल आँखि, बिन दाँतक मुँह आ चेहरा पर वयसक झुर्रीक जाल! कोना ओ ओहि छौड़ीक विश्वास क’ सकला? कखनो कखनो विवेकशील पुरुषोकेँ अपन नान्हि सन तर्जनी पर नारी कोना नचा सकैत छै, एकर अनुभव जिनगीमे पहिल बेर भेल, बहिन! जे छौड़ी हमरे ठकि लेलक, जे ओकर जेलक कारिखकेँ अमानवीय धैर्यसँ रगड़ि-रगड़ि क’, ओकर मलिन चामके सेहो निखारि

क’ राखि देने छल, ओ की बाबूजीकेँ छोड़ि देतनि? बाबूजी जे अपन सामान्य-सन सामान ल’ जयबाक बात लिखि गेल छथि, निश्चये ओ सामान्य नहि छल, मुदा हम क’ की सकैत छलहुँ? बाबूजी ने अपन पता-ठेकान द’ गेल छला, न हमर किछु लइए क’ गेल छला। ल’ गेल छला हमर प्रतिष्ठा, सुख-चैन, हमर मोनक सुख-शांति आ हमर नीरस जीवनक एकमात्र अवलम्ब-स्वयं अपन स्नेहमय संरक्षण! मुदा एहि सभमे एकहु टा वस्तु एहन नहि छल, जकर रिपोर्ट लिखबामे संसारक कोनो थाना तत्परता देखबैत। जँ ई संभव होइतै, त’ संसारक समस्त बही-खाता एहि तरहक रिपोर्टसँ भरल रहितै? तीन-चारि दिन धरि हम घरेमे चुपचाप पड़ल रहलहुँ। जिनगीमे पहिल बेर हमरा ई अनुभव भेल कि मनुष्यक एकान्त ओकर सभसँ पैघ मित्र होइ छै। जँ हमर पड़ोसी वा मित्रक संख्या विस्तृत रहैत, त’ की ओहि दिन अपन एतेक पैघ लाजक गप, अपन एतेक पैघ दुर्भाग्य, हम समाज सँ नुका सकितहुँ?

"चारिम दिन हम सभ दिन जकाँ काज पर निकलि गेलहुँ। हमर काजे हमरा हिम्मत देलक। फरजाना बेगक साड़ी जुटबै लेल हम हवाइ-यात्रा पर निकलि गेलहुँ। जाहि अनजान आकाशमे हम उड़ैत चल जा रहल छलहुँ, ओ ने हीराकेँ चिन्हैत छलै, ने करनदास कापड़ियाकेँ आ ने अभागिन अनसूयाकेँ एही तरहेँ दू मास बीति गेल। लौटिते हम अपन फ्लैट बदलि लेलहुँ। पुरान फ्लैटक सभ देवारक चून-सीमेन्टमे बसल अतीतक स्मृति हमरा लेल असह्य भ’ उठल। एक बेर मोन भेल जे, डॉक्टर नागर लग जा क’ सभ बात कहि दियनि, मुदा हुनके देल चेतौनी रोकि देलक। जिद क’ क’ जखन ओहि छौड़ीकेँ आनय गेल छलहुँ त’ ओ हमरा एकान्तमे कहने छली, 'आठ वर्षसँ एहि जेलक नाड़ी देखि रहल छी, अनु! हमर बात मानू, एकरा नहि ल’ जाउ। कोयलाक एहि कोठरीक कारिख बहुत पक्का होइ छै, बुझलहुँ?'मुदा हम कतय बुझलहुँ! बुझलहुँ त आब, जखन चिड़िया खेत चुगिए क’ नहि, उजाड़ि क’ पाँखि पसारि चुकल छल।

"घोर अशांतिमे हमर तीन मास बीति गेल। डाकवाला आबय, त’

काँपि जाइ, तार वाला देखाइ, त’ हाथ-पएर थरथराइ लागय। कोन ठेकान, बाबूजीक कोनो दुःसंवाद होन्हि! हमर अंतश्चेतना व्यर्थे मोनक द्वार नहि खटखटा रहल छल, बहिन! एक दिन उत्तरप्रदेशक गुप्तचर विभागक किछु सीनियर ऑफिसर हमरा तकैत-तकैत हमर बुटीकमे आबि गेला। 'मिसेज अनसूया कापड़िया अहीं छी?'

" 'जी हँ, कहू। 'हम कॅंपैत हाथसँ काउंटर थामि लेलहुँ।" 'करनदास कापड़िया अहाँक कोनो आत्मीय छला की?'

"छलाह, एकर की मतलब? की ओ-'हम चिकरि उठलहुँ।"आइ एम सॉरी, मिसेज कापड़िया, मुदा बनारसमे काल्हि रहस्यमय ढंगसँ हुनका केओ मारि देलकनि। पछिला बुध क’ एकटा होटेलमे एकटा युवतीक संग डबल सीटेड रूम ल’ क’ रहय आयल छलाह। परसू बड़ी राति क’ दुनू गोटे सारनाथ घूमि क’ आबय गेला। काल्हि भोरमे केबाड़ खटखटेलाक बादो जखन केओ गोटे नहि खोललनि, त’ केबाड़ तोड़ि देल गेलै। हुनका संग आयल छौड़ी निपत्ता छल आ शोणितसँ लथपथ हुनकर लहास पलँग पर पड़ल छल। लगैत छल, मारबा कालमे आरो क्यो छल। हुनका डायरीसँ अहाँक पता भेटल। अहाँकेँ हमरा सँग चलि ओहि लहासक पहिचान करय पड़त। '

"ओही दिनुका फ्लाइटसँ हुनका सँग हम बनारस गेलहुँ। बर्फ मे राखल हुनकर निर्जीव देह देखि हमर की हाल भेल से हम की कहू बहिन! एतेक बरख धरि अपन स्नेहक छाहरिमे हमरा झाँपि, मायक दुलार आ बापक संरक्षण देलनि, ओ स्वयं आइ केहन असहाय पड़ल छथि। आइओ ओही दिन जकाँ बिना डेन्चरक पोपट मुँह मरल चिड़ैक चोंच जकाँ फूजल छलनि। तहिया हम ‘बाबूजी'कहि चिकरि उठल छलहुँ त’ ओ हड़बड़ा क’ उठि बैसल छलाह, 'की भेल अनु बेटी? एना किएक कानि रहल छी?' मुदा आइ जखन हम 'बाबूजी' कहि चिकरलहुँ त’ हमरा पीठ पर ढाढ़स देनिहार केओ नहि छल।"

ओही शिवालयमे बैसल अनसूया, भरिसक हमर बन्धुत्वक अवलम्ब

पाबि, ओहिना बिचलित भ’ गेली। दुनू आँखिसँ बहैत नोरसँ आँचर भीजय लगलनि। मन्दिरक पट खुजि गेल छलै, दर्शन लेल आयल किछु स्त्रिगण हमरा दुनू गोटेकेँ उनटि-उनटि क’ देखि रहल छली। शून्यमे देखैत अनसूया विक्षिप्त जकाँ बजिते जा रहल छली। अगल-बगल केर उत्सुक दृष्टिसँ हुनका जेना कोनो फर्के नहि पड़ि रहल छलनि। हमहीं हुनकर हाथ पकड़ि मन्दिरक पाछाँ घीचि लेलियनि। मन्दिरक घण्टा बजैत देरी ओ चैतन्य भए रूमालसँ नोर पोछैत बजली :

"हँ, यैह हमर ससुर करनदास भोगीदास कापड़िया छथि, हिनकर संगक युवतीक नाम हीरा छनि। ओ पहिनहु हत्या क’ चुकल छथि। '

"भरि दिन बयान लिखेबामे व्यस्त रहलहुँ। हुनकर अन्त्येष्टिक कठिन काज सेहो हमरे करबाक छल। पुतहु रहितो बेटाक कर्तव्यक भार हमरे पर छल बहिन! हमहीं हुनका मुखाग्नि देलियनि। कतेक काल धरि चिताक अधजरु अंगारकेँ हम निहारैत रहि गेलहुँ। कहिओ बाबूजी कहथिन, 'अनु बेटी, गुजराती कहबी सुनने छी अहाँ-’सूरत नूं जमण ने काशी नूं मरण’- सूरतक भोजन आ काशीक मृत्युक सौभाग्य सभकेँ नहि भेटैत छैक। सूरतमे त’ हमर मातृक छल अनु, ओहो प्रसिद्ध पटेल वंशमे। छतीसो व्यञ्जनक स्वाद हमरा जीहमे रसि-बसि गेल अछि। मुदा की काशीक मृत्यु सेहो हमरा भाग्यमे लिखल होयत?

"मणिकर्णिका घाट पर जरैत ओहि चिताक धुआँ देखि एकदम विह्वल छलहुँ। ठेहुन पर माथ राखि कानय लगलहुँ। तखने पीठ पर ओहि वरिष्ठ अधिकारीक हाथक स्पर्श पाबि चैतन्य भेलहुँ-

"धैर्य राखू, मिसेज कापड़िया, कखन धरि एहि ठाम बैसल रहब। चलू, हम होटेल पहुँचा दैत छी। ओहि अनजान मित्रक कारमे हम होटेल आबि गेलहुँ। तकर बाद हम मुम्बई आबि गेलहुँ। पुलिसिया कार्रवाई त’ चलैत रहल, मुदा लगैत छल जेना गुप्तचर विभाग ओहि छौड़ीकेँ अन्तो धरि नहि ताकि सकल। नहि जानि ओ कोन खोहमे नुका गेल छल। अंतमे हमहीं ओकरा तकलहुँ।

बाबूजीक मृत्युक दुइ वर्ष बीति चुकल छल। अपन बुटीकसँ लागल एकटा छोट सन रेस्तराँ सेहो हम कीनि नेने छलहुँ। दिन कोना बीति जाय पता नहि चलैत छल। श्रान्त-क्लान्त रातिमे जखन घर आबी त' अबितहिं सूति रही।

"पछिला मास कोनो काजसँ दिल्ली गेल छलहुँ। एकटा नामी होटेलमे भोजन करैत छलहुँ कि सोझाँक टेबुल पर एकटा दम्पती देखायल। नाम, गोर युवक, चमचमाइत सूट पहिरने मेन्यू देखि रहल छल। ओकर संगीक पीठे टा हमरा देखायल, मुदा ओहि पीठ पर पसरल आँचरकेँ चिन्हबामे हमरा एको रती आयास नहि करय पड़ल। ई ओएह आँचर छल जे विवाहक दिन फरजाना बेगक पीठ पर पसरबाक छलनि। ओहि साड़ीकेँ हम कोना बिसरि सकैत छलहुँ। हम ध्यानसँ ओम्हर तकलहुँ। हमर अनुमान ठीके छल, ओएह छल। दुइ वर्षमे देह कने भरि गेल छलै दुनू गोटे बहुत चावसँ मुर्गाक टाँग चिंचोड़ि रहल छल कि ओकर बच्चा हाथमे एकटा विशबोन नेने हमरा टेबुल दिस आबि गेल। ओ गुलगोथना गोर-नार बच्चा हमरा लग आबि हमरा देखय लागल, जेना चिन्हबाक प्रयास क' रहल हो। आ हम-जेना हमरा केओ कुर्सी पर गाड़ि देने हो। कने काल लेल हमर आँखिक पुतरी स्थिर भ' गेल। एहि आँखिकेँ त' हम चिन्हैत छलहुँ। बाबूजीए जकाँ स्नेह-भरल दृष्टि, ओहने ममता आ ओएह गम्भीर मुखमुद्रा। कनिओ काल आर जँ ओ ठाढ़ रहैत, त' निश्चये हम बाबूजी कहि चिकरि उठितहुँ।

बच्चा केँ लगमे नहि देखि ओकर माय एम्हर-ओम्हर ताकय लगलै कि हमर सभक नजरि टकरायल। ओह! ओ केहन मारुक टकराहटि छल! एक-दोसराक उपस्थिति दुन्नू गोटेकेँ सुन्न क' देलक। फेर ओ चैतन्य भ', चिल्ह जकाँ झपट्टा मारि बच्चाकेँ कोर मेँ लय ओहि युवककेँ जबरदस्ती घिचने बहरा गेल।

हम उत्तेजित भ' अनसूया केँ झकझोरिकँ पुछलियनि-बुड़बक बनल अहाँ बैसले कोना रहि गेलहुँ? खेहारि क' पकड़लहुँ किएक नहि'?

'धुर बताहि! हम ओकरा की पकड़ितियै। कनिये काल पहिने त' हमर

ओ नान्हि टा देओर दयाक भीख जे माँगि रहल छल।'

बाप रे बाप, कतेक देरी भ' गेल, छः बाजि गेलइ। सात बजे त' हमर ट्रेन अछि। हँसैत ओ उठली आ हमरा गर लगा जल्दीसँ विदा भ' गेली। दुन्नू गोटे केहन बुड़बक छलहुँ, ने ओ हमर पता लेलनि आ ने हम। तखन त' आगाँ सम्पर्क होयबाक आशे व्यर्थ। विकल मोनसँ हम ओहि भगैत रिक्शाक पहिया निहारैत ठाढ़ रहि गेलहुँ। आश्रमक महाकालक त्रिनेत्र सत्ते ओहि सुदर्शन कामदेवकेँ जरा क' भस्म क' देने छलनि। आब त' रहि गेल छल मात्र रतिविलापक दारुण स्वर, जे रहि-रहि क' भरिसक जिनगी भरि हमरा सुनाइत रहत।

गाढ़ निन्न

अरथीक पाछाँ सामान्यतः स्त्रिगण नहि रहैत छथि, मुदा ओहि अरथीक पाछाँ स्त्रीगणक पूरा दल माथ निहुरेने चलल जा रहल छल। क्यो सिसकि-सिसकि क' कानि रहल छली, किनको आँखि-नाक कानि-कानि क' लाल भ' गेल छलनि। दू-तीन गोटे कँपैत स्वरमे रामधुन गाबि रहल छली आ बीच-बीचमे सिसकिओ रहल छली। खबरि भेटिते उमा यादवक पूरा आश्रम उनटि पड़ल छलनि। नहि आयल त' खाली अख्तरी...वैह अख्तरी जकरा प्राणान्तक साधनासँ उमा साधि सकल छली। जहिया ओ पकड़ि क' आश्रममे आनल गेल, ताही दिन उमा पर टूटि पड़ल छल। अपन लम्बा, गन्दा नहसँ ओ उमाक तरहथ्थीक पूरा मांस नोचि नेने छलनि। दोसरे- तेसरे दिन ओकरा हिस्टीरियाक दौरा पड़ैत छलै त' ओ चिकरि-चिकरि क' पूरा आश्रम माथ पर उठा लैत छल। लिखै लेल कॉपी देल जाय त' फाड़ि क' फेकि दै। पेन्सिल चिबा-चिबा क' बर्बाद क' दै। मुदा जेना चतुर रिंग-मास्टर सर्कसक खुजल सिंहनीकेँ साधि लैत छै, तहिना उमा यादव अख्तरीकेँ साधि नेने छलखिन। कखनो ओ बहुत लगनसँ ओहि सती-लक्ष्मी सभक खिस्सा सुनबथिन जे अपन जीवन उत्सर्ग कय अपन पतिकेँ मृत्यु-पथसँ घुरा अनलनि। मुदा अख्तरी खाली हँसि क' दाँत निकालि लै। ओकर की एक्के टा पति छलै? मोहल्ला-टोलामे कम-सँ-कम तीन दर्जन युवा, प्रौढ़ आ खूसट पतिक हृदय ओकर छोट-सन मुट्ठीमे बंद रहैत छलै। ओकर गाँजा, अफ़ीम, चरस केर धन्धा छलै–कखनो ब्लाउजक भीतर नुका क' ल' जाय त' कखनो लहँगामे। कतेक मजा अबैत छलै दिन-राति रेलगाड़ीक यात्रा मे! सब स्टेशन पर ओ किछु-न- किछु खाइत रहैत छल। एहिसँ आश्रममे पहिरनमे हरियर किनारी वाला मोट साड़ी आ

भोजनमे बूटक दालिसँ उबिया गेल छल। ओकर बैगनी रेशमी गरारा घरमे डालडाक टिनमे ओहिना राखल हेतै। ओकर पति बशीर सेहो ओकर धन्धामे साझीदार छलै। ओ आन्हर भिखमंगा बनि जाइत छल आ अख्तरी ओकर लाठी थमने गोंडा, बस्ती, गोरखपुर, नेपाल रोड तक अपन लहँगाक अभेद्य घेरामे नुका क' अफ़ीम-गांजा पहुचाबै। पापक मूलधन ततेक बढ़ि गेल छलै जे चाहलासँ ओ आरामसँ घर बैसल काज चला सकैत छल, मुदा तृष्णा बढ़िते जा रहल छलै।

एक दिन गोंडा स्टेशन पर दुनू गोटे पकड़ल गेल। पति आरो कतेक अपराध कय फरार भेल गुण्डा छल। पुलिस ओकरा जेल पहुँचा देलकै। मुदा अख़्तरीक मासूम चेहरा देखि ओकरा पहुँचा देल गेलै-उमा यादवक 'होम फॉर फालेन वूमन'मे। जाहि धैर्य आ लगनसँ उमा ओकरा कादोसँ बहार केलखिन, ओ वास्तवमे प्रशंसनीय छलै। ओ प्रायः सभकेँ कहथि- "ई हमर प्राइज भेटै वाला केस अछि।" आश्रम देखबा लेल आबय बला पैघ-पैघ खद्धरधारी ऋषि-मुनिक मोन सेहो ओ मेनका डोला दैत छलनि। अख़्तरीक आकर्षण ओकर चेहराक नहि, देहक छल। ओ लम्बा नहि छल, भुट्ट छल, मुदा ओकर सब अवयव ओकर लम्बाइक हिसाबसँ गढ़ल गेल छलै। छोट-सन नाक पर ओ पैघ नग वाला छक पहिरने रहैत छल। दुनू ठोर छलै खूब मोट आ रसगर-एहन ठोर जे कलाकारकेँ नहि, प्रणयी-पुरुषकेँ प्रिय होइ छै। आँखि बदामक आकारक छलै, आ पुतरी मटमैल रंगक। भरिसक ओही कुइर आँखिक कंट्रास्टमे ओकर देह पर ओकर लाल फूल वाला कुर्ती खूब शोभै छलै। कुरतीक देहाती सिलाईसँ असन्तुष्ट भ' क' अख्तरी ओकरा आश्रमक मशीनसँ चुस्त क' लेलक त' उमा ओकरा डँटबो केलखिन। "ढील कपड़ा हमरासँ नै पहिरल होइ अछि "-छिड़िआयल बालिका जकाँ उत्तर दय ओ अपन काजमे लागि गेल। सत्ते खाली कुरतिये नै, ओकर देहक एक-एक पेंच एकदम कायदासँ कसल छलै। ओकर दुनू आँखिमे ककरो किछु नै बुझबाक ऐंठी छलै-एहन ऐंठी जे जरिओ क' नहि जाइ छै। ओ दुनू हाथ पाछाँ बान्हि क' भरिसक एहि द्वारे चलैत छल जे देखै

बलाक दृष्टिमे ओकर बाँहि सेहो बाधक नहि बनै। ओ साड़ी पहिरबा लेल कहुना तैयार नहि भेलै त’ हारि क’ घेर बला छींटक लहँगा सिया देलखिन। ओकरा अपन लहँगासँ फुसिये ठोढ़ी वा माथक पसीना पोछबाक उपक्रम कय आश्रमक चौकीदार-माली दिस कटाक्ष करैत उमा देखि लेने छलखिन, अख्तरी अपन आदत सँ लाचार छल, ओकरा पुरुषे संग रहब नीक लगैत छलै। स्त्रीगणक ईर्ष्या-द्वेष भरल ओछ बात सुनि ओकर खून खौलय लगैत छलै। ओकरा मोन पड़ै-रेलक हिचकोला, स्टेशन पर बिकाइत पान-बीड़ी-सिगरेट, लहँगामे नुकायल अफ़ीम जे गंतव्य धरि पहुँचिते सोना उगलैत छल आर सभसँ बेशी अपन असंख्य प्रेमीक नीक-बेजाय स्मृति।

एहि ठाम ओकर सब संगी एका पर-एक छलै। साढ़े पाँच फुटक भीमकाया सोलह वर्षक जट्टिनी हरदीप जे गड़ाँसक एक्कहि चोटसँ अपन पतिक गरदनि काटि क’ दूर फेकि देने छलै, कोनो सबूत नहि भेटने ओ छूटि गेल छल। सासुरक लोक ओकरा आश्रम पहुँचा गेल छलै। छरहर देह वाली स्वदेश कुमारी जकरा डाकू उठा क’ ल’ गेल छलै, मुदा तीन दिन धरि भूखल-पियासल जंगलमे भटकि फेर ओ पतिगृह पहुँचि गेल छल ;मुदा अभागलिकेँ पतिगृहमे प्रवेश करबाक अधिकार नहि भेटलै। तेसर छल तेरह वर्षक अहीर कन्या फूलमती, जकरा कोनो वेश्यालयसँ पकड़ि क’ आनल गेल छलै। आर नहि जानि कतेक डेढ़, लुल्ह-नांगड़, विकृत-मस्तिष्क आ पंगु व्यक्तित्वक स्त्रिगण प्रेत-मूर्ति जकाँ दिन-राति उमाकेँ घेरि क’ सिलाई-मशीन सँ विचित्र आकारक कुरता, पैजामा आ सलवार सिबैत छली। ओहि महाश्मशानक कापालिक छली उमा। ओ ओहि विचित्र डाकिनी-शाकिनी सभकेँ जीति नेने छली। आश्चर्यक गप ई जे उमा ओकरा सभकेँ जितने छली क्षमा आ अहिंसाक सिद्ध कवचसँ। भोरमे उठिते ओ ओकरा सभकेँ दूर धरि घुमबय ल’ जाइत छलखिन। आपिस अयलाक बाद सभ केओ जाँतमे अन्न पिसै छल। तकर बाद शुरू होइ छलनि उमाक सभसँ पैघ माथ-दर्द-ओकरा सभकेँ पढ़ेनाइ। हरदीप पिछला एक सालसँ 'अ' लिखनाइ सीखि रहल छल। अख्तरी उमाक नजरि बचा, कापीक

पन्ना फाड़ि, हवाई-जहाज बना क' खिड़कीसँ उड़ा दै। एकर अतिरिक्त ओ अपने टा नहि, अपन सहपाठिनी सभक बीसो पेन्सिल चिबा चुकल छल। फूलमती पढनाइ सीखि गेल छल, मुदा ओ सभक पाइ चोरा चौकीदारसँ सारंगाक खिस्सा आ तोता-मैना मँगा क' पढ़ैत पकड़ल गेल छल। ताही द्वारे उमा स्वेच्छेसँ ओकर शिक्षाक प्रगति रोकि, रोटी बनेबाक काज द' देलखिन।

एहनो वातावरणमे उमा ओकरा सभक संसर्गक कलुषसँ बाँचल छली। उमाक सहिष्णुता हुनकर कमनीय चेहराकेँ आओर सुन्नरि बना देने छलनि। सुन्दरी होइतो उमा यादव अविवाहित छली, ई सभक लेल आश्चर्यक विषय छल। मुदा उमा यादव स्वेच्छासँ कौमार्यक फाँसीक फंदा अपना गरदनिमे नहि पहिरने छली। पहिने जखन हुनकर विधुर पिता जीवित छलखिन, एक सँ एक प्रस्ताव अबै छलनि, मुदा हुनकर पिताक पसिन्न आ पद, दुनू ऊँच छलनि। एहन पिताक पुत्रीक विवाहाकाश प्रायः मेघाच्छादिते रहै छै। पिताक मृत्युक बाद विवाहक प्रसंग उठबय वाला केओ रहबे नहि कएलनि। धीरे-धीरे हुनकर चेहराक आकर्षण सेहो घटय लगलनि। जेना नेनुआक कोमल त्वचामे पकला उत्तर एकटा झिल्ली पड़ि सभ मिठास सोखि लै छै, तहिना उमाक कंचन सन देहमे सेहो झिल्ली पड़ि गेलनि। मोट फ्रेमक चश्मा कर्णचुंबी आँखिक आ सुडौल ठाढ़ नाकक सौन्दर्य कम क' देने छलनि, मुदा उजड़ि गेलाक बादो दिल्ली दिल्लीए छलै।

अख़्तरीक अपराध बड़क डारि जकाँ छलै, पूरा उत्तर प्रदेशमे पसरल। तेँ कोनो ने कोनो पुलिस अधिकारी खोज-बीन करबा लेल प्रायः आश्रम आबि जाथि। एक दिन आबि गेला स्वयं डिप्टी पुलिस सुपरिन्टेन्डेन्ट, साढ़े-छः फुटक रवीन्द्र पण्डित। बाप-दादा बहुत साल पहिने कश्मीर छाड़ि उत्तर प्रदेशमे बसि गेलखिन, मुदा हुनकर वंशक रूप-रंग कश्मीरकेँ नहि छोड़ने छलनि।

"कहू, हम अहाँक की सेवा क' सकैत छी?" उमा यादव अपन दुनू पुष्ट बाँहि टेबल लग राखि पानक पात जकाँ बना लेने छली। ओहि दिन

अपन चश्मा कतौ राखि क’ बिसरि गेल छली। बिना चश्माक ओ बहुत सौम्य लगैत छली। डाकूक खोजमे बीहड़ जंगलसँ घुरल ओहि पुलिस अधिकारीक मोन अश्लील उत्तर देबा लेल छटपटा उठलनि, मुदा दोसरे क्षण प्रश्न पूछै वालीक अफसरी मुद्रा हुनका संकुचित क’ देलकनि।

"किछु नहि, हम ई पूछय आयल छलहुँ जे अख्तरी अहाँकेँ तंग त’ नै करैत अछि? अहाँसँ नहि सम्हरत त’ हम ओकरा ठीक क’ लेबै।" स्वरक अहंकार चेहराक लाल रंगसँ मेल खा रहल छलनि। पुलिसक वर्दीमे त’ आलतू-फालतू सेहो नीके लगै छै, फेर रवीन्द्र पंडित त’ वास्तवमे सुदर्शन छला।

"नहि, एहन कोनो बात नहि छै, धन्यवाद! हमरा आज्ञा दिय-हमरा एकटा आवश्यक काजसँ बैंक जयबाक अछि।" बहुत रुक्षतासँ ओ पल्ला झाड़ि उठि गेली त’ रवींद्रकेँ लगलनि जेना ओ कइएक वर्षसँ भुखायल छथि आ हुनका सोझाँसँ छप्पन व्यंजन भरल थारी केओ घीचि क’ भागि रहल छनि। मुदा ओहो हारि मानय वाला नहि छला। ओ त’ भिंड आ मुरैनाक गहन वन-गुफामे खूँखार डकैत सभकेँ घेरि क’ उड़ा देने छलखिन। डाकू सभक अन्तिम पकड़ लेल ओ जाहि कूटनीतिसँ अपन घेरा क्रमशः छोट क’ लैत छलथि, तहिना ओ उमा यादवक चारू दिस अपन घेरा जटिल क’ लेलनि। ओ अपन बिन मायक दुनू बेटीकेँ मातृकसँ ल’ अनलनि। दुनू बेटी बड्ड सुन्नरि छलनि। एक दिन ओ दुनू बेटीकेँ ल’ क’ आश्रम पहुँचि गेला। फेर त’ दूनू बहिन उमा आंटी लग रहय लगलनि। छोट सन जिलामे पहिने दबल स्वरमे कनफुसकी चलल। मालकिनक अढ़मे आश्रमक चञ्चल सदस्या लोकनि अनुशासनक जिंजिर स्वयं ढील क’ लेलनि। जाँच भेल, असेम्बलीमे प्रश्न उठल, रवीन्द्र पंडितक तरक्की रोकि देल गेलनि, मुदा हुनका वांछित तरक्की भेटि गेलनि-उमा यादव हुनकासँ विवाह क’ लेलखिन।

उमा आ रवीन्द्र पंडितक पहिलुक दुनू पत्नीमे आकाश-पातालक अन्तर छलनि। पहिल त’ एकदम फूहड़ छलखिन। हुनकर मृत्युक तेसरे

मास दोसर पत्नी एलखिन। ओ ठसकदार छली। पुलिसक सन्तरी सभकेँ ओ गृहस्थीक काजमे लगौने रहैत छली। केओ मटर छीलै, केओ फुलबारी सींचै, केओ बच्चाकेँ घुमाबै आ केओ कपड़ा साफ करै। प्रत्येक कुशल पुलिस-अफसरक पत्नी जकाँ पतिक घूसक विभाग स्वयं ल' नेने छली। कोन थानेदारक गाँवमे शुद्ध घी भेटैत छै, ककर सासुर देहरादूनमे छै आ ओ एक बेरमे कतेक बासमती चाउर आनि सकैत अछि, हुनका सभ पता रहैत छलनि। मुदा एक दिन हुनका ओएह बासमती ल' बैसलनि।

उमा यादव अबैत देरी पतिक अव्यवस्थित गृहस्थीक व्यवस्था अपना दक्ष हाथमे ल' लेलनि। शीशोक जहाज सन दुनू पलँग गोदाममे पठबा देलखिन। रवीन्द्रक पिछला जिनगीक प्रत्येक स्मृति-चिन्ह कुशलतासँ मेटा देमय चाहैत छली ओ। पतिक संग खिंचाओल दुनू सौतिनक रंग उड़ल फोटो ओ एक्कहि झटकामे गायब क' देलनि। एके सप्ताहक भीतर दुनू पुत्रीकेँ सेहो नैनीतालक एकटा अंग्रेजी बोर्डिंग हाउसमे राखि एलखिन त' समाजमे थू-थू अवश्य भेलनि, मुदा बच्चा सभकेँ पठयबाक पाछाँ हुनकर हृदयमे कोनो दुर्भावना नहि छलनि। बिन मायक बच्चा सभ अनावश्यक दुलारसँ बिगड़ल जा रहल छलै। सत्ते, एक्कहि वर्षमे बच्चा सभक नम्रता आ शालीनता देखि हुनकर नानी आश्चर्यचकित रहि गेलखिन। हुनकर पतिक अहातामे स्वीट पी आ लिली गमकय लगलनि। बँगलाक सामने बला देवार पर कतेक वर्षसँ कोनो कला-मर्मज्ञ 'गुप्त रोगक बिजली द्वारा इलाज' आ 'जालिम लोशन'क इश्तिहार बहुत तत्परतासँ लिखि जाइत छल, ओहि पर स्वयं अपना हाथसँ गेरू लगा क' उमा बोगनबेलियाक लत्ती चढ़ा देलखिन ; किएक त' एहन विज्ञापनक स्याही बहुत जिद्दी होइ छै आ गेरू सेहो गुप्त रोगक अस्तित्वकेँ नहि मेटा सकल छल।

बँगलाकेँ, बच्चाकेँ, एते धरि कि घरक बिगड़ैल भैंसकेँ सेहो उमा साधि लेने छली, मुदा एक्के व्यक्तिकेँ ओ नहि साधि सकली-ओ छला गृहक स्वामी। सात डकैत मारि क' ओकर सभक छाती पर बन्दूक राखि खिचाओल गेल पतिक जाहि फोटो पर ओ अनुरक्त भेल छली, ओ फोटोसँ

बहुत बेशी खूँखार छल। अपन हृदयक रत्नकेँ ओ पुलिस- विभागक गंदगीमे कहिया न हेरा चुकल छल। शराब पीयब त' आदते छलनि। हृदयहीनता हुनका रक्त-मांसमे बसि गेल छलनि। कोनो एहन दुर्व्यसन नहि छलै जाहिसँ ओ बाँचल होथि। घूस लेबामे हुनकासँ केओ पार नहि पाबि सकैत छल। पैघ-पैघ नेता सभक विद्रोही दलक कीमती यजमानक ओ एकमात्र पुरोहित छला। हुनका पदक अढ़मे लाखोक चरस आ गाँजा एक सीमासँ दोसर सीमा नाँघि जाइत छल।

तेसर पत्नी पर पहिने त' ओ भूखल बाघ जकाँ टूटि पड़ला, मुदा धीरे-धीरे ओहो बासी लागय लगलखिन। उमा हुनकर दुनू बेटीसँ बहुत स्नेह करैत छलखिन, मुदा पति हुनकर दुलारक कोनो मोजर नहि करैत छलखिन। कोनो बात त' जरूर हेतै। बिना कोनो तेहन गप्पक ई आइ धरि कुमारि किएक रहितथि? कतेक बेर छल-बलसँ ओ पत्नीक विगत जीवन परसँ परदा उठा झँकबाक चेष्टा सेहो कयलनि, मुदा उमा शान्त दृष्टिसँ पतिकेँ देखि चुप भ' रहथि। उमाक एहि चुप्पी पर ओ आओर खौँझा क' रहि जाइथ। उमाक आहत दृष्टिमे कामुक, शक्की पतिक लेल करुणा आ क्षमाक जे संदेश रहैत छलनि, से ओ नहि पढ़ि पाबथि।

अपन सौतिनक नैहरमे अनधिकार प्रवेश पाबिओ क' उमा सभक मोन जीति नेने छली। सौतिनक विधवा माय लेल बढ़िया तसरक उज्जर साड़ी, भाउज सभक लेल उपहार, मिठाइ, फल, एतेक धरि कि नौड़ी धरि लेल साड़ी रखनाइ ओ नहि बिसरल छली। माँजीकेँ मोन खराब भेलनि, रद्द करबा लेल बासन नहि भेटलनि त' उमा अपन दुनू आँजुर पसारि देलखिन। बूढ़ी हुनकर हाथे पर रद्द क' देलखिन, मुदा उमाक चेहरा कनेको मलिन नहि भेलनि। ओहि विलक्षण नारीक हृदयमे मानव-मात्र लेल करुणा आ प्रेमक अक्षय-भण्डार छलनि। घृणा, द्वेष आ क्रोध हुनकर चित्तक दर्पणकेँ मलिन नहि क' सकल छलनि। मुदा ओहनो साफ दकदक दर्पण एक दिन टुटिए गेलै।

जिद क' क' अख्तरी हुनके संग रहय लागल छलनि। उमा ओकरा

कइएक बेर आश्रम पठेलखिन, मुदा ओ फेर भागि क’ आबि जाय। उमा ओकरा कहिओ एसकर नहि छोड़ैत छलखिन, मुदा एक दिन गलती भइए गेलनि। हुनकर एकमात्र आलिया मौसी बहुत वर्षसँ भुवाली सैनिटोरियममे छली, अंतिम समय जानि डॉक्टर उमाकेँ खबरि पठा देलखिन। ओ अख्तरीकेँ ल’ क’ जा रहल छली कि ठीक स्टेशन जयबाक समयमे ओकरा पएरमे भयानक मोच आबि गेलै। ओ एक्को डेग नहि चलि सकैत छल। भारी मोनसँ उमा एसगरे विदा भेली।

समयसँ पहिने, बिनु खबरि देने उमा पाँचम दिन घुरि एली। गाड़ी राति क’ पहुँचल छलै। स्टेशनसँ रिक्शा लय घर पहुँचली आ नहि जानि की सोचि पछुआड़क खिड़की फानि भीतर पहुँचि गेली। हुनका अचानक देहरि पर ठाढ़ देखि अख्तरी हड़बड़ा क’ उठि गेल। हुनकर अनुमान सत्य निकललनि-हुनक पलँग पर अख्तरी हुनका पतिक बगलमे नहि जानि कहियासँ सूति रहल छल। पतिक बाँहि पलँगसँ नीचा झूलि रहल छलनि। ओ नशाक बेहोशीमे नीक जकाँ डूमल नहि छला, लडख़ड़ाइत स्वरमे अपन जघन्य अपराधक लेल 'सॉरी' कहि करोट फेरि क’ सूति रहला। अख्तरी चलि गेल। उमा भरि राति मुरुत जकाँ सोफा पर बैसलि रहली। खुजल खिड़कीसँ अख्तरीकेँ जाइत देखिओ क’ उमा सोर नहि पाड़लखिन। ओकरा माथ पर एक टा भारी मोटरी छलै। जानि नहि की चोरा क’ ल’ जा रहल छल? मुदा हुनका घरक सभसँ कीमती निधि ओ चोरा चुकल छल! आब की लेत! दोसर दिन पूरा घरमे अख्तरीक गायब होयबाक समाचार पसरि गेलै। एम्हर-ओम्हर खोजलो गेलै, मुदा अख्तरी भरिसक शहर छोड़ि क’ चलि गेल छल। तीन दिन धरि उमाकेँ ने दिनक चैन छलनि न रातिक निन्न! मनक बेचैनी, पतिक चोरी आ सीनाजोरी आ जेहि अख्तरीकेँ ओ नव जीवन देने छलखिन, ओकर विश्वासघात हुनका विक्षुब्ध क’ देने छलनि। चारिम रातिओ क’ जहन निन्न नहि भेलनि त’ नहि रहि सकली। बहुत पहिनेक आनल निन्नक गोलीक शीशी बक्सामे राखल छलनि। आधा रातिमे ओ ओएह शीशी बहार केलनि। दू गोलीक

खोराक छलै, मुदा हुनका जाहि गाढ़ निन्नक कामना छलनि, ओ दू गोलीसँ कोना अबितनि! बहुत काल धरि ओ हाथमे शीशी नेने ठाढ़ रहली, फेर सभ टा गोली मुँहमे ध' लेलनि।

सूति क' उठला पर रवींद्र पंडित अपन पत्नीक निष्प्राण देह देखलनि त' पहिने त' हड़बड़ेला, मुदा फेर बहुत कुशलतासँ तेसर पत्नीक फाइल दाखिल-दफ्तर क' देलनि। शहरमे खबरि पसरि गेलै जे डिप्टी-सुपरिन्टेन्डेन्ट साहबक पत्नी 'हार्ट-अटैक'सँ मरि गेलखिन।

गोंडा कचहरी स्टेशन पर, कनैलक गाछक नीचाँ, सस्त रेशमी बैंगनी गरारा पहिरने, मोचड़ाएल रेशमी फतुहिक जेबीसँ बीड़ी निकालि, लगक दोकानसँ सलाय कीनै लेल अख्तरी उठल, फेर नहि जानि की सोचि क' गन्दा, फाटल सन मोटरीकेँ पएरक बीच दाबि क' बैसि गेल। ओकर ठोर पर लागल सस्त लिपिस्टिकक फूहड़ रेखा ओकर ठुड्ढी धरि पसरि गेल छलै। एक टा डिबिया जरेने फेरीबला ओम्हरसँ निकलल त' अख्तरी ओकरा रोकि लेलकै। पहिने दू आनाक खट्टा चटनी देल पकौड़ी खेलक, फेर दू आनाक मीठ चटनीबला। पिरुकिया वाला एलै त' ओकरो रोकि लेलक। चारि टा पिरुकिया खेलाक बादो मोन नहि भरलै त' खोआक डाढ़ी ल' लेलक। डाढ़ी खेलाक बाद दू खिल्ली पान मुँहमे देनहि छल कि ट्रेन आबि गेलै। माथ पर मोटरी रखने ओ भीड़केँ ठेलैत तेसर वर्गक स्त्रीगणक डिब्बामे घुसि गेल। दू-तीन टा मुसलमान स्त्री गन्दा सन बुर्का पहिरने एक कोनमे बैसल छल। ओकरा खिड़की लगक सीट पर बैसब बहुत पसिन्न छलै, चट स' मोटरी राखि बैसि गेल आ अपन दुनू पएर पसारि लेलक। सामनेसँ दू टा सिपाही ओकरा तकैत निकलि गेल। तकैत रहथु ससुर! आब ओकरा कोनो जिलाक पुलिसक भय नहि छलै। मोटरीकेँ ओ बहुत प्रेम सँ सोहरेलक। गाड़ी चलि देने छलै। आब गाँजाक ओ मोटरिए ओकर पति आ पुत्र छलै। गाड़ी गति पकड़ि चुकल छल-एक-एक क' स्टेशन पर ठाढ़ कुली सभ, बत्ती सभ पाछाँ छूटै लगलै। गाड़ीक हिचकोलासँ दुब्बरि-पातरि अख़्तरीक देह हिलि रहल छलै। नेपाल रोड स्टेशन अबैमे एखन बहुत

देरी छलै। ओ बड़ थाकल छल, सिरमामे मोटरी राखि सूति रहल। थोड़बे कालमे ओकर ठड़ड़क आवाज सुनि स्त्रिगण सभ हँसैत-हँसैत एक-दोसरा पर खसय लागल। प्रत्येक ठड़ड़क संग ओकर सुडौल वक्ष खसि-उठि रहल छलै। बहुत राति भ' गेल छलै। गाड़ीक गतिसँ यात्रीगणक निन्नमे बाधा पहुँचि रहल छलै। एकाएक इंजन आवाज केलकै। अन्हार बियाबान जंगलक बीचो-बीच अकारण ओ दुस्साहसी इंजन पूरा गाड़ीक अंजर-पंजर हिला देलकै। एकटा स्त्रीक गेरुआ मंजीरा जकाँ बजैत नीचाँ ससरि गेलै, दोसरक बच्चा कान' लगलै, तेसरकेँ दमाक विकट दौरा पड़ि गेलै। गाड़ी चलल आ एकटा लम्बा पुल पर लड़खड़ाइत, झपताल जकाँ ठेका दैत धीरे-धीरे चलैत रहल। एतेक भेला पर त' भरिसक कुम्भकर्णक निन्न सेहो टूटि जयतै, मुदा अख्तरी निश्चिन्त सूतल रहल।

विचित्र शिल्पी विधाता सेहो पता नहि केहन-केहन आश्चर्यजनक मूर्ति गढ़ैत छथि! एक टाकेँ सुतबा लेल भरि शीशी गोली खाइ पड़लनि आ दोसर बिनु गोली खेनहि गाढ़ निन्नमे डूमल अछि!

लाल हवेली

ताहिरा बगल केर बर्थ पर सूतल अपन पतिकेँ देखलनि आ लम्बा साँस लय करौट फेरि लेलनि। कम्मलसँ झाँपल रहमान अलीक तोंद गाड़ीक हिचकोलाक संग रहि-रहि क' काँपि रहल छलनि। ताहिरा अपन हीराक रिस्ट वाचकेँ मनेमन गरियबैत सोचलनि जे आइ कतेक देरीसँ घंटी बाजि रहल अछि। भरि राति ताहिराक एक्कहु बेर आँखि नहि लगलनि। गन्तव्य धरि पहुँचबामे एखन तीन घंटा देरी छलै। लगक बर्थ पर ताहिराक पति आ नीचाँक बर्थ पर बेटी सलमा निभेर सूतल छलथि। बेचैन भए ताहिरा उठि बैसली। पतिक कहलासँ ओ किएक अयबा लेल तैयार भ' गेली, कोनो बहन्ना बना सकैत छली। जेहि घावकेँ समय भरि देने छलै ओहि पर ओ स्वयं छूरी राखि लेलनि, आब ओहि घावक टीससँ कोना बचि सकती?

स्टेशन आबिए गेलै। ताहिरा कारी रेशमी बुर्कासँ चेहरा झाँपि लेलनि। दामी सूटकेस, नया बेडिंग, एयर बैग, चानीक सुराही आदि उतरबा क' रहमान अली ताहिराक हाथ पकड़ि एहि तरहेँ उतारलनि जेना ओ शीशाक गुड़िया होथि, कनेको ठोकर लगलासँ टूटि क' छिड़िया जयती। सलमा पहिनहि कूदि क' उतरि गेल छली। दूरसँ भगैत, हाँफैत हाथमे कारी टोपी नेने एक टा भुट्ट सन आदमी लपकि क' रहमान अलीकेँ गर लगा लेलखिन। दुनूक आँखिसँ नोर बहि रहल छलनि। ताहिरा मोने-मोन सोचलनि जे यैह मामा बित्ते छथि। बेटीकेँ देखि मामा कहि उठलथि-"एकदम इस्मत अछि, रहमान।" ओएह चेहरा-मोहरा, ओएह आँखि-नाक। इस्मत नहि रहली त' खुदा दोसर इस्मत पठा देलनि।

ताहिरा पाथरक मूरुत जकाँ चुपचाप ठाढ़ छली। हुनकर हृदयमे जे आगि धधकि रहल छल ओ के देखि सकैत छल? ओएह स्टेशन, ओएह

कनैलक गाछ! पंद्रह वर्षमे एहि छोट सन स्टेशनकेँ केओ नहि बदलि सकल!

"चलू बेटी।" मामा बजला, "बाहर कार ठाढ़ अछि। जिला त' छोट अछि, मुदा अल्ताफकेँ पहिल पोस्टिंग एत्तहि भेटलनि। इंशाअल्ला आब कोनो पैघ शहर भेटतनि।"

मामाक बेटाक विवाहमे रहमान अली पाकिस्तानसँ आयल छथि। ताहिरा फेर मोने-मोन खिसिया क' सोचलनि, अल्ताफकेँ पुलिस-कप्तान बनि क' की अही शहरमे अयबाक छलनि?

घर पहुँचला त' रहमानक नानी ख़ुशीसँ बताहि भ' गेलखिन। ओ बेर-बेर रहमान अलीकेँ गरदनिसँ लगा लेथिन आ चुम्मा लेथिन। सलमाकेँ देखि क' त' ओ ताहिराकेँ देखबो बिसरि गेलखिन।"या अल्लाह! ई अहाँक केहन माया? इस्मतेकेँ पठा देलिऐ!" दुनू पुतहुओ कहलखिन "हँ अम्मीजान, एकदम इस्मत आपा, मुदा पुतहुक मुँह त' देखू। ई अशर्फी लिय'।" हाथमे अशर्फी थमा ननिया सासु ताहिराक बुर्का उनटि देलखिन "अल्लाह, चानक टुकड़ा छथि।"

ताहिरा लाजसँ मूड़ी निहुरा लेलनि। पंद्रह सालमे ओ पहिल बेर सासुर आयल छली। बहुत मुश्किलसँ वीजा भेटल छलनि। तीन दिनक बाद आपिस चलि जयती, मुदा कोना कटती ई तीन दिन?

"चलू कनियाँ, उपरका कोठरीमे चलि क' आराम करू। हम चाय पठबै छी" ई कहि नन्हीं मामी ताहिराकेँ ऊपर पहुँचा देलखिन। रहमान निच्चेमे बैसि क' मामासँ गप करय लगला आ सलमाकेँ त' रहमानक नानी कोरेमे बैसा लेलखिन।"हमर इस्मत, हमर बच्चा!"कहि बेर-बेर ओकर माथ पर हाथ फेरथिन आ हिचकि-हिचकि कानथि।

एकान्त कोठरीमे आबि क' ताहिरा बुर्का हटा लेलनि। बंद खिड़कीकेँ खोललनि त' करेज धक् सँ रहि गेलनि-सामने लाल हवेली छलै। चटसँ खिड़की बन्न कय ओ खसैत-पड़ैत पलँग पर बैसि गेली, "या खुदा! अहाँ हमरा किएक सता रहल छी?" मुँह झाँपि क' ओ सिसकि उठली। ओ

किएक ककरो दोष देथिन? हुनका त’ पता छलनि हिन्दुस्तानक जाहि शहर ओ जा रहल छथि, ओहि ठामक एक-एक कंकड़ हुनका पर पहाड़ जकाँ टूटि क’ खसतनि। हुनकर सज्जन पतिकेँ की पता?रहमान अली, जनिक पवित्र आँखिमे ताहिराक प्रति प्रेमक गंगा छलकैत छलनि, जे हुनका पालतू हरिणी जकाँ बना क’ अपन बेड़ीसँ बान्हि नेने छलनि, ओहि पतिकेँ ओ की कहितथिन?

पाकिस्तानक बँटवारामे कतेक पिसायल, ओहिमे सँ एक छली ताहिरा! सोलह वर्षक कनकछड़ी सन सुंदरी, सुधा! अपन मामाक बेटीक विवाहमे मुल्तान आयल छली। दंगाक ज्वाला हुनका फूकि देलकनि। मुस्लिम गुण्डाक भीड़ जतय भूखल कुकुर जकाँ हुनकर बोटी-बोटी चिचोड़ै लेल तैयार छलनि, तखने फरिश्ता बनि रहमान अली पहुँचि गेला। ओ सभ हिनका छोड़बा लेल किन्नहु तैयार नहि छल, मुदा रहमान अलीक मीठ आवाजक डोरी ओकरा सभकेँ बान्हि लेलकै। श्यामल, दुब्बर-पातर रहमान सुधाकेँ कठोर मेघ बनि झाँपि लेलखिन। सुधा बचि गेली मुदा ताहिरा बनि क’। रहमानक जवान पत्नीकेँ सेहो दिल्लीमे एहिना पीसि देने छलै। स्वयं ओ भागि क’ पाकिस्तान आबि गेल छला-घायल मोन आ हृदय ल’ क’। सुधा आ रहमान सोचि-सोचि क’ परेशान भ’ गेला। हारि क’ एक-दोसरा पर की बीतल ई बिनु सुननहि लाचारीसँ समझौता क’ लेलनि। ताहिरा उदास होथि त’ रहमान अली किछुओ करय लेल तैयार भ’ जाथि। ताहिरा हँसथि त’ रहमान नेहाल भ’ जाथि। एक वर्ष बाद बेटी भेलनि त’ रहल-सहल मैल सेहो साफ भ’ क’ बहि गेलनि। ताहिरा आब हुनकर बेटीक माय छलखिन, हुनकर भाग्यक बुलन्द सितारा। पहिने कराचीमे छोट सन बजाजीक दोकान छलनि, आब सभसँ पैघ डिपार्टमेंटल स्टोरक मालिक छथि। दस-दस टा ऐंग्लो-इण्डियन लड़की सभ हुनका इशारा पर नचैत, धड़ाधड़ अमेरिकी नायलॉन आ डैकरॉन बेचै छनि। दुब्बर-पातर रहमान आब मोटाइ लगला। पेट निकलि गेलनि, अकड़सँ गरदनि ऊंच भ’ गेलनि, सीना तनि गेलनि, आवाजमे अपने-आप अमेरिकी डौल आबि गेलनि।

मुदा नीलम-पुखराजसँ जड़ल, हीरासँ चमकैत-दमकैत ताहिरा शीशोक हाथी-दाँत जड़ल पलँग पर एखनहुँ बेचैनीसँ करौट फेरथि। सभ मार्च मासमे ओ पानिसँ निकालल माछ जकाँ छटपटा उठथि। मस्ती भरल होलीक दिन जे हुनकर पाकिस्तानी जिनगीमे कहिओ नहि औतनि। गुलाबी मलमलक ओ ओढ़नी हुनका आइओ यादि छनि, जाहिमे सासु हल्लुक सन गोटा टाँकि देने छलखिन। हाथमे मोट सन किताब नेने हुनकर तरुण पति किछु पढ़ि रहल छलखिन। घुँघरल केशक गुच्छा चौड़ा कपार पर झुकि गेल छलनि, हाथक आधा जरल सिगरेट हाथे मे मिझा गेल छलनि। गुलाबी चुनरीक गोटाक चमक देखिते ओ आर माथ झुका लेलनि, चंचल, सुंदरी बालिका नव कनियाँसँ बेचारा लजा क' रहि जाइत छला। पाछाँसँ चुपचाप आबि सुधा दुनू गाल पर अबीर मलि देने छलखिन, आ झटसँ भनसा घरमे घुसि क' सासुक संग पिरुकिया बनबैमे लागि गेली। ओहि ठाम सँ सासुक नजरि बचा क' पति दिस देखि चटसँ गुलाबी जीह निकालि मुँह दूसि देलखिन। जखन ओ मुल्तान जयबा लेल तैयार भेली त' पति कतेक कहने छलखिन "सुधा, मुल्तान नहि जाउ।" मुदा ओ की जनैत छली जे दुर्भाग्यक मेघ हुनका पर मँडरा रहल छनि? पति अही स्टेशन पर छोड़य लेल आयल छलखिन। यैह कनैलक गाछ छलै, यैह जंगला। मामाजीक संग मोटरी सन बनल सुधाकेँ घोघ उठयबाक अवकाश नहि भेटलनि। गाड़ी चलय लगलै त' ओ साहस कय कने घोघ हटा क' हुनका अंतिम बेर देखलखिन। वैह अमृतक अन्तिम घोंट छलनि।

सुधा त' मरि गेली, आब ओ ताहिरा छथि। ओ फेर कँपैत हाथसँ खिड़की फोललनि, ओएह लाल हवेली छलै हुनकर ससुर वकील साहेबक, ओएह छत पर चढ़ल राति-रानीक लत्ती, तेसर कोठली जतय हुनकर जीवनक कतेक रस-भरल राति बीतल छलनि। नहि जानि ओ की करैत होयता, विवाह क' नेने हेताह! बाल-बच्चा सेहो होयतनि! आँखिसँ फेर नोर बहय लगलनि आर अनजान मोहसँ भरि उठली।

"ताहिरा, कतय छी?"रहमान अलीक स्वर अयलनि त' ओ हड़बड़ा

क’ आँखि पोछि बेडिंग खोलय लगली। रहमान अली ताहिराक भीजल आँखि देखलखिन त’ ठेहुन रोपि क’ हुनका लग बैसि गेलखिन, "यै बीबी, की भेल? माथ त’ नहि दुखाइ अछि? चलू-चलू पड़ि रहू। कतेक बेर कहलहुँ जे ई सभ काज नहि करू, मुदा के सुनै अछि! कुर्सी पर बैसू, हम बेडिंग खोलै छी।" मखमली गद्दा पर रेशमी चद्दरि बिछा क’ ताहिराकेँ पड़ा देलखिन आ शरबत आनय लेल विदा भेला। सलमा आबि क’ माथ दबबै लगलखिन, नानी आबि क’ कहलखिन "नजरि लागि गेलनि, आर की?" नन्हीं मामी जरैत आगि पर चून आ मिरचाइसँ नजरि उतारि देलखिन। केओ बाजल धात्रीक मुरब्बा चटा क’ देखियनु, भ’ सकैत अछि हार्ट अटैक भेल होइन।

दुलारक बरखा कए सभ चलि गेला। लग मे पड़ल रहमान अली जखन ठड़ड़ पारय लगला त’ ओ पएर दाबि क’ खिड़की लग गेली। बहुत दिनसँ पियासलकेँ जेना ठंढा पानिक झरना भेटि गेल होइन, मुदा पानि पिबिओ क’ जेना पियासले होथि। तेसर मंजिल पर इजोत जरि रहल छलै। ओहि घरमे रतुका भोजन देरीसँ होइत छलै। खेलाक बाद हिनका दूध पीबाक आदति छलनि। एतेक वर्ष बीति गेलै, तैंयो हुनकर एकहक आदति ताहिराकेँ दूक खोढ़ा (पहाड़ा)जकाँ जबानी यादि छलनि। सुधा, सुधा कतय छी अहाँ? हुनकर हृदय हुनका स्वयं धिक्कारि उठलनि, अहाँ अपन गरदनि किएक नहि मोंकि लेलहुँ? इनारमे कूदि क’ अहाँ मरि किएक नहि गेलहुँ? की पाकिस्तानक सभ इनार सुखा गेल छलै? अहाँ धर्म छोड़लहुँ, मुदा संस्कार रहि गेल, प्रेमक धार मोड़लहुँ, मुदा बेड़ी नहि कटल, सभ होली, तीज, दिवाली अहाँक करेजमे भाला भोंकि क’ निकलि जाइत अछि। सभ ईद अहाँकेँ ख़ुशीसँ किएक नहि भरि दैत अछि? आइ अहाँक सोंझां मे सासुरक हवेली अछि, जाउ, हुनका पएर पर खसि क’ अपन पाप धो लिय’। सिसकी रोकबा लेल ताहिरा ओढ़नीसँ मुँह दाबि लेलनि।

रहमान अली करौट फेरलनि त’ पलँग चरमरेलै। ताहिरा पएर दाबि क’ आबि फेर पड़ि रहली। भोरमे उठली त’ शहनाइक आवाज सुनलनि,

रंग-बिरंगक रेशमी गरारा-कमीज, अबरखसँ चमकैत ओढ़नी, मेंहदी आ बेलीक सुगन्धिसँ पूरा घर गमकि रहल छलै। पुलिस बैंड तैयार छलै। बरियातीमे घरक सब स्त्रिगण सेहो जयती। एकटा बसमे रेशमी चद्दरि तानि देल गेल छलै। सुरमा लागल पैघ-पैघ आँखि सँ बिजुरी खसबैत लड़की सभ, पानदान समेटि क' आराम-सँ बैसय लेल जा रहल प्रौढा आ बूढ़ी सभ आ सभक पाछाँ-पाछाँ कारी बुर्का ओढ़ने ताहिरा गुमसुम चलल जा रहल छली, जेना सुधि-बुधि हेरा बैसल होथि। एहने छलै एकटा ओहो साँझ, जखन ओ कनियाँ बनि एहि शहरमे आयल छली, बसमे सिमटल-सिमटायल लाल ओढ़नीसँ झाँपल, न! मुदा आइ छनि स्याह बुर्का, जे हुनकर चेहरे टा नहि, पूरा पिछला जिनगी अन्हारमे डुबा क' राखि देलकनि।

"अरे, केओ वकील साहेब एतय कहा पठौलकनि कि नहि?" नानी पुछलखिन आ ताहिराक हृदय पर फेर छुरी चलि गेलनि।

"कहने छलियनि अम्मी, हुनकर मोन ठीक नहि छनि, तही द्वारे नहि एलखिन।"

"बहुत नीक लोक छथि।" मुँहमे पान-सुपारी लैत नानी बजली-"शहरक सभसँ नामी वकीलक बेटा छथि मुदा निःसंतान छथि। दंगामे पत्नी मरि गेलखिन त' फेर विवाहे नहि कयलनि।"

बहुत धूम-धामसँ विवाह भेलै। चान सन कनियाँ घर अएली। साँझमे सिनेमाक प्रोग्राम बनलै। नव जोड़ा, नानी, मामा-मामी, लड़की सभ, एतेक धरि कि घरक नौड़ी सभ सेहो बनि-ठनि क' तैयार भ' गेली। मुदा ताहिरा नहि गेली, हुनकर माथ दुखाइत छलनि। आलतू-फालतू प्रेमक गीत सुनबाक शक्ति हुनकामे नहि छलनि। एसकर अन्हार कोठरीमे ओ पड़ल रहय चाहैत छली-हिंदुस्तान, प्रिय हिंदुस्तानक आखिरी साँझ।

जखन सभ गोटे चलि जाय गेला त' ओ तेज इजोत जरा क' ऐनाक सोझाँ ठाढ़ भ' गेली। समय आ भाग्यक अत्याचार सेहो हुनकर अलौकिक सौन्दर्य नहि लूटि सकल छल। ओएह पैघ-पैघ आँखि, गोर रंग आ संगमरमर सन उज्जर देह- के कहि सकैत अछि जे ई एक टा जवान बेटीक माय छथि?

हुनकर यौवन सेहो एखन छलनिहे। काल्हि चारि बजे भोरुका गाड़ीसँ ओ चलि जयती। हुनका लेल जे देवता सर्वस्व त्यागि वैरागीक वेश धारण क' लेलनि, की एकहु बेर हुनकर दर्शन नहि होयत? कोनो शैतान चंचल बच्चा जकाँ हुनकर आँखि चमकै लगलनि।

झटपट बुर्का ओढ़ि ओ बाहर निकलि गेली, पएरमे बिजलीक गति आबि गेलनि, मुदा हवेली लग आबि ओ घामसँ नहा गेली। पछुआड़क सीढ़ी हुनका यादि छलनि जे सोझे हुनकर कोठरीक छोटकी खिड़की लग जाइ छै। एक-एक पएर दस-दस मनक भ' गेलनि, करेज फाटि क' मुँहमे आबि गेलनि, मुदा आब ओ ताहिरा नहि छली, ओ सोलह वर्ष पूर्वक चंचल बालिका नव कनियाँ सुधा छली जे सासुक नजरि बचा क' तरुण पतिक गाल पर अबीर मलय जा रहल छली। मिलनक ओहि अमूल्य क्षणमे सैयद-वंशक रहमान अलीक अस्तित्व मेटा गेलनि। अंतिम सीढ़ी एलै, साँस रोकि, आँखि मूनि ओ मनबै लगली- "हे बिल्लेश्वर महादेव, अहाँक चरणमे हीराक ई औँठी चढ़ायब, एक बेर हुनका देखा दिय', मुदा ओ हमरा नहि देखथि।"

बहुत दिनक बाद भक्त भगवानक स्मरण कयने छलनि, कोना नहि सुनितथिन? नोरसँ आन्हर बनल आँखिसँ देवताक़ें देखलनि। ओएह गंभीर मुद्रा, ओएह लट्ठाक एकबर्रा पैजामा आ मलमलक कुर्ता। टेबुल पर अभागिनी सुधाक ओएह फोटो छलनि जे द्विरागमनमे बड़का भैया घिचने छलखिन।

"मोन भरि देखि ले बताहि आ भागि जो, भाग ताहिरा, भाग!" हुनका कानमे जेना स्वयं भोलानाथ गरजलखिन।

सुधा फेर डूमि गेली, ताहिरा जगली। सब सिनेमासँ लौटे पर होयथिन। अंतिम बेर आंखिएसँ देवताक चरणधूलि लय ओ घुरली आ बिल्लेश्वर महादेवक निर्जन देवालय दिस भगली। नहि जानि कतेक कबुला ओ एहि देहरि पर कयने होयती। माथ पटकि, आँचर पसारि ओ आखिरी कबुला कयलनि, "हे भोलानाथ, हुनका सुखी रखबनि। हुनकर पएरमे काँटो नहि

गड़नि।" हीराक औँठी खोलि क' महादेव पर चढ़ा क' भगैत-हँफैत घर पहुँचली।

रहमान अली घर अयला त' ताहिराक पीयर चेहरा देखि क' नाड़ी पकड़ि क' देखै लगलखिन जे बोखार त' नहि छनि? अरे औँठी की भेल? ओ औँठी रहमान हुनका अही साल विवाहक दिनमे पहिरेने छलखिन।

"नहि जानि कतय खसि पड़ल?" थाकल स्वरमे ताहिरा बजली।"कोनो बात नहि? रहमान झुकि क' बर्फ सन ठंढा नाम आँगुर चूमि बजला, ई आँगुर रहल ताकय। इन्शाल्लाह एहि बेर तेहरानसँ चौकोर हीरा मँगबा लेब।"

ताहिराक हेरायल दृष्टि खिड़कीसँ बाहर अन्हारमे डूमैत लाल हवेली पर छलनि, जकर तेसर कोठरीक इजोत दपसँ मिझा गेलै। ताहिरा एकटा ठण्ढा साँस लय खिड़की बंद क' लेलनि। लाल हवेली अन्हारमे डूमि चुकल छल।

भिक्षुणी

ओ दोसर दिस पीठ केने ठाढ़ छली। हमर टैक्सी हुनका लगमे रुकल। ओ हडबड़ा क' घुमली आ हमर करेज मुँहमे आबि गेल। हुनकर चारू कात छोट-छीन गेरुआ रंगक मोटरी सब छलनि, पीठ पर मोट सनक डोरीमे बान्हल दू-तीन टा भारी कम्मल लादल छलनि। अपन खर-खर, तिब्बती लबादा सम्हारैत, ओ एक कोनमे ठाढ़ भ' गेली।

हमर ड्राइवर अपन टैक्सीक यात्री सभकेँ सम्बोधित कय कहलकनि- "अहाँ सभकेँ चाय पीबाक अछि त' पीबि लिय। गाड़ी फेर सोलन धरि नहि रुकत।" एक-एक क' तीनू सहयात्री उतरि गेला। एसकर हमहीं हाथ-पर-हाथ धेने अधखुजल शीशासँ एकटक हुनकर पीठ देखैत रहलहुँ। निश्चय ओ किकी छली। एक बेर मोनमे आयल, दौड़ि क' जाय आ हुनका आलिंगित कय पुछियनि-'किकी हमरा नहि चीन्हि रहल छी की?

मुदा पाथरक मुरुत जकाँ बिनु हिलने ठाढ़ ओहि भिक्षुणीक घूमल पीठकेँ अपना दिस मोड़बाक हमर प्रयासक साहस स्वयं समाप्त भ' गेल। जाहि किकीक चिताभष्मक विकृत दुर्गन्धक साक्षी स्वयं हुनकर भाय छलखिन, ओहि मरल ननदिक पीठकेँ अपना दिस मोड़बाक प्रयास हमर मूर्खता नहि त' आर की अछि? ओ एखनहुँ अपन पीठ हमरा दिस केने ठाढ़ छली। सन्देहक काँट एक बेर फेर हमर हृदयमे गड़ैत, हमरा विचलित क' देलक। जखन टैक्सी आबि क' रुकल छल, हड़बड़ाक' हँटबासँ पहिने ओ हमरा देखलनि। हुनका कि कनिओ उत्सुकता नहि भेलनि ई जनबाक जे आन यात्री सभक संगे हम उतरलहुँ वा नहि? मुदा ओ त' आन नारीसँ भिन्न संसार-त्यागिनी भिक्षुणी छली। हुनकर हाथमे पैघ-पैघ दाना बला सुमिरनी छलनि, जकर दाना पर तेजीसँ आंगुर चलबैत किछु बुदबुदा रहल

छली। तुरत मुड़ायल माथ पर दूभिक अंकुर जकाँ छोट-छोट केश आ हाथमे सींगक पैघ-पैघ-चूड़ी, छीया-छीया, ई किकी नहि भ' सकैत छथि, ओ किकी जिनकर घनगर केशक खोपा दू-दू दर्जन काँटासँ नहि सम्हरैत छल, जिनकर साड़ीक भाँज रवि वर्मा द्वारा अंकित मेनकाक साड़ीक चित्रांकित भाँज जकाँ, ओहि बिल्वस्तनीक मोहक अंग-भंगिमाकेँ आरो भव्य बना दैत छलनि।

हम कहियनि, कमाल अछि किकी, अहाँ दिन-भरि यैह साड़ी पहिरने उठै-बैसै छी, सभ काज करै छी, आ लगै अछि जेना एखनहि तह खोलि क' नब साड़ी पहिरने होइ। एकटा हम छी, जे मिनटे भरिमे साड़ीक गति बनि जाइत अछि।

ओ हँसि क कहथि- 'अहाँ नहि बूझि सकबै भौजी, अहाँक ननदोसि कहैत छथि, पद्मिनीक सभ गुण विधाता-प्रदत्त होइ छै; ओकर ने वस्त्र मलिन होइ छै, न देह-परिमल। कहैत छथि यैह त' अहाँक विशेषता अछि। अहाँ दू मील दूरो ठाढ़ रहब, तैंयो हम सांस लइते अहाँकेँ पकड़ि लेब।'

आइ जँ हमर ननदोसि संग रहितथि, त' भ' सकैत अछि, ओहि जंगलमे ठाढ़ जाहि पद्मिनीकेँ चिन्हबामे हम हिचकि रहल छी, ओकरा ओ पकड़ि लितथि। विस्मृत अतीतक मधुर स्मृति, कोनो मजार पर जरि रहल लोबानक मदिर धूम्र-रेखा जकाँ, हमरासँ लेपटाइत चलि गेल। हमर दुनूक सासुरे टा नहि, नैहरो एक्के शहरमे छल। दुनू गोटे संगहि बचपन आ कैशौर्यक देहरि पार केने छलहुँ। विवाहो लगभग संगहि भेल छल। प्रथम प्रसवक पीड़ा संगहि सहबासँ पूर्व, देहमे बंदी बनल नवागत बच्चाक धड़कन सेहो बारी-बारीसँ कान लगा क' सुनने छलहुँ। किकीक पैघ-पैघ मुखर आँखिक ओहि दृष्टिकेँ हम आइओ नहि बिसरि पयलहुँ-'देखू-देखू, हाथ लाउ एम्हर। देखलिऐ, केहन नट जकाँ कूदि रहल अछि।

हुनकर हँसमुख चेहरा, कने-कने तोतराइत चंचल बोली आ अनुपम हँसी-मज़ाक, हुनकर एकदम अलग व्यक्तित्वक नित नवीन झाँकी देखबैत रहैत छल। ई सत्य छल जे हमर सरल समाजक नीति-निपुण नारी-समुदायमे

जेहने हिनकर निन्दा छल, तेहने लोकप्रियता पुरुष-वर्गमे प्राप्त छलनि। होली अबै त’ शहर भरिक देओरकेँ रंग-अबीरक रक्तिम आभामे आकण्ठ डुबा क’ राखि देथि। अपन सभसँ पातर साड़ीक चयन ओ रंग खेलाइ लेल करथि।"भरि पिचकारी गोरे सम्मुख मारी"। गाबैमे त’ ओ कोनो निपुण गायिकाकेँ सेहो पछाड़ि सकैत छली। दूरक छोट-पैघ दियादिनी सभ संयुक्त मोर्चा बान्हि हुनकर निन्दा करथि- ‘सासु अपने हाथे फलाहार बनबै छथिन, आ अपने पुरुषक संग रभसैत रहैत छथि।’

एक दिन हम पूछि देलियनि त’ हमरे पर तमसा गेली, अहूँ आबि गेलहुँ सभक गपमे? चूल्हिमे जाथु सासु! हम की हुनका कहलियनि जे भूखल रहू? जहिया देखू तहिया व्रत-आइ एकादशी त’ काल्हि प्रदोष। बारह बजे खेनाइ खा क’ दू बजे फलाहार बनाउ? हम इहो क’ दैत छलियनि, मुदा हमरा माथ पर सवार भेल बेर-बेर पूछथि- ‘कनियाँ हाथ-पएर धो लेने छलहुँ ने? बासनमे ऐंठ त’ ने लागल छल?' सत्त कहै छी हमरा सौंसे देहमे आगि लागि जाइत छल। एक दिन हम साफ-साफ कहि देलियनि- ‘माँ, आइसँ अहाँ अपने फलाहार बना लेल करू।’

कौखन हमरा हुनकर एहने दुस्साहस अपदस्थ क’ दैत छल। किकी हमर पतिक पितयौत बहिन छली, कखनो हुनकर सासुरक लोकक उलहन सेहो सुनय पड़ैत छल। किकीक पति पाँच बहिनक एसकर भाय छला, सहजहिं बहिन सभक रोआब कने बेशी छलनि। किकीक सौभाग्यसँ चारि ननदिक विवाह बहुत दूर भेल छलनि। ओ सभ नैहर बहुत कम्मे अबैत छली, मुदा छोटकी ननदि अविवाहित छलखिन। ओ बगलेक शहरमे डॉक्टरनी छली, बिना खबरि देनहि ओ संक्षिप्तो अवकाशमे आबि जाइत छली। किकी हुनका फुटलियो आँखिए नहि सोहाइत छलनि।

विवाहसँ पहिने ओ अपन भायक दुलरी बहिन छली, ओएह भाय सुंदरी पत्नीक घोघ उठबिते बहुत रुक्षतासँ आत्मीय स्वजन सभसँ मुँह मोड़ि नेने छलनि। आइ धरि ओकरा अपन शिक्षा, रुचि आ चेहरा पर बहुत गर्व छलै, मुदा भाउजक आकर्षक व्यक्तित्वक सोझाँ ओ एकदम

साधारण बनि क' रहि गेल छल। एक त' ओहि आकस्मिक पराजयक आघातकेँ ओ सहि नहि पबैत छल, ताहि पर दिन-दिन विलम्बित कौमार्य स्वभावकेँ आर रुक्ष बना देने छलै। ओ नहला त' किकी दहला! हम कतेक बेर मध्यस्थता करबाक चेष्टा कयलहुँ, मुदा ओ बाज नहि आयल। धीरे-धीरे ओहि ननदिक कारण महाभारत शुरू भ' गेल। ओहि साल हमर पतिक बदली भ' गेल छलनि। किकीक पत्र हमरा ओत्तहि भेटल छल।

'विवाहक आठ वर्षक बाद हनीमून मना रहल छी। माँ ओही करिलुट्ठी सँगे रहै लेल चलि गेली। खूब नाटक भेलै, जाइत-जाइत अपन बेटासँ कहलखिन- 'भगवान करथि हमर अर्थीकेँ तोहर कन्हा नहि भेटय। ई हम बूझै छियै जे ई अभगली तोरा किछु खुआ देने छौ। ठीक छै, निखट्टू बनल एकरे आँचरमे बन्हायल रह बेटा; देखिहें, एक दिन यैह आँचर तोरा घिसियेतौ। '

ओहि पत्रक बाद एके बेर हुनकासँ भेंट भेल छल। हुनकर पति आब ऊँच पद पर पहुँचि गेल छलखिन। हुनकर सुव्यवस्थित गृहस्थी, सुरुचिसँ सजाओल सुंदर बंगला, चपरासी, मोटर आ मखमली लॉनमे खेलाइत बेटा-बेटी देखि मोन प्रसन्न भ' गेल छल। गृहस्थीक सुख-संतोषसँ जेना हुनकर रंगमे आर निखार आबि गेल छलनि। मातृत्वक गरिमा यौवनक चपलताक़ें अंग-अंगसँ धो-पोछि क' बहा देने छलै। सभसँ बेशी आश्चर्य हुनकर पतिकेँ देखि क' भेल। बलरामकेँ त' हम नेनपनेसँ देखैत आबि रहल छलियनि। हुनकर व्यक्तित्व ओहने छलनि, जेहन समृद्ध घरक एसगरुआ बेटाक होइ छै। नेनपनेसँ गरिष्ठ निमकी आ घीसँ तर बेसनक लड्डू खयबाक अभ्यस्त यकृत, समयसँ पहिनहि थाकि क' सिकुड़ि गेल छलनि। ताहिसँ उदरक परिधि विराट बनैत गेलनि। हुनकर कोटक बटन, कखनो क्रम सँ लागल नहि रहैत छलनि। कखनो-कखनो त' पैंटक खतरनाक खुजल मुहानीक प्रति हुनकर उदासीनता देखै बलाकेँ एकदम्मे अपदस्थ क' दैत छलै। पब्लिक स्कूलक शिक्षा सेहो हुनका सामान्यो शिष्टाचार नहि सिखा सकलनि। कखनो कोनो सहभोजमे आनन्दपूर्वक भोजन कय, दर्जनो ढेकार

लैत, सोफे पर दूनू पैर उठा क’ जंगली जकाँ बैसि जाथि आ एहन-एहन सड़ल चुटकुला सुनबै लागथि जे सुनै बलाकेँ हँसीक बदला विरक्ति होइ। मुदा अपन स्वतंत्र गृहस्थीमे किकी बलराम पर जेना कोनो जादू क’ देने छलखिन। चुस्त पैंट पर किकीक बुनल स्वेटर, यत्नसँ झाड़ल केश आ यार्डले लैवेंडरक सुगन्धि।

"आउ-आउ, किकी काल्हिएसँ अहाँक अयबाक तैयारीमे जुटल छथि।" ओ अपन वाक्यो पूरा नहि क’ सकल छला कि किकी आबि क’ हमरासँ लिपटि गेली। जेठक ओहि दुपहरमे हम दूनूगोटे फेरसँ स्मृतिक रेशमी पैराशूटमे बन्हल, अपन नैहर-सासुरक पर्वत-श्रृंखलाक बीच सरसराइत उतरै लगलहुँ। दूनू बच्चाकेँ ओ आयाक संग घुमबा लेल पठा देलनि। गपमे हमर सभक दिन कखन बीति गेल पता नहि चलल। हमरा चारि बजेक ट्रेन पकड़बाक छल। भरि रस्ता हम हुनके गप सोचैत ऐलहुँ। ओहि चेहराक स्निग्धतामे कतौ अभिनय नहि छलै। हमर मोन संतोषसँ भरि उठल। एहि संतोषक एकटा आरो कारण छलै। अपन एहि दुःसाहसी ननदिक कैशौर्यक एकटा प्रणय-प्रसंगक कारण कतेक बेर हम हुनकर भविष्यक प्रति शंकित भ’ जाइत छलहुँ। तहिया हुनकर पिता कोनो पूर्वी जिलामे पुलिसक पैघ अफसर छला। हुनकर मातृहीना पुत्री एक तरहेँ थानेदारे सभक कोरामे खेलि-कूदि क’ पैघ भेल छली। जहन पैघ भेली त’ पिताक अधीनस्थ एकटा सुदर्शन कर्मचारी बहुत अधिकारसँ बहुत रास दामी उपहार लय, हुनकासँ राखी बन्हबाबय पहुँचि जाइत छल। भ’ सकैत अछि जे हम स्वभावेसँ शंकालु रहल होइ, मुदा बिना सम्बन्धक राखी बन्हबाबय बला भाय पर हमरा कहिओ श्रद्धा नहि रहल। राखी बान्हय वालीक हाथक स्पर्शक संगहि, ओ प्रायः जाहि अधिकारसँ ओकर गट्टा सेहो पकड़ि लैत छलै से हमरा नीक नहि लगैत छल। पता नहि पुलिसक पेशामे रहिओ क’ किकीक पिता एहन मूर्खता कोना क’ बैसला। ई ठीक छल जे हुनकर ओ अधीनस्थ विवाहिते नहि, दू बच्चाक बापो छलै, तथापि चपला पुत्रीकेँ जाहि विश्वासक संग ओहि व्यक्तिक संरक्षणमे देने छलाह, ओ कोनो अनुभवी, बुद्धिमान पिताकेँ

शोभै नहि छलै। कहिओ सुनैत छलहुँ जे किकी रिपुदमनक संग अलीगढ़क नुमाइश देखय गेल छथि, कहिओ गढ़मुक्तेश्वरक मेलामे। किकीकेँ राखी बान्है बला भाय संगे छाड़ि हुनकर पिता अपन ड्यूटी पर निकलि जाइत छला। भेलै ओएह जे एहन परिस्थितिमे होइ छै। मातृहीना किकी अविवेकी कैशौर्यक लहरिमे असहाय कटकी जकाँ बहल जा रहल छली कि हुनकर एकटा चतुरा मौसी चील जकाँ झपट्टा मारि हुनका लय दूर चलि गेली। ककरो कानो-कान खबरिओ नहि भेलै आ किकीक विवाह भ' गेलनि। हुनकर उदास, रिक्त दृष्टि आ हरदम फूलल आँखिक रहस्य हमरे तीनू धरि सीमित छल-हम, हुनकर पिता आ मौसी।

फेर भरिसक परमहंस पतिक निश्छल हँसिए, स्मृतिक श्यामपट्टसँ हुनकर बेमेल, नादान प्रेम-प्रसंगकेँ बहुत स्वाभाविकतासँ मेटा देलकनि।

किकीक सुखी गृहस्थी देखि, कतेक आश्वस्त भ' हम घुरल छलहुँ, मुदा हम की जनैत छलहुँ जे हुनकर क्षणिक समृद्धिक महल खाली बालू पर टिकल छनि। दुर्भाग्यसँ हुनकर ननदिक बदली ओही शहरमे भ' गेलनि आ हुनकर सासु पहिलुक शत्रुता स्वेच्छासँ बिसरि फेर हुनके संग रहय लगली। कखनो-कखनो हुनकर पत्र अबै त' सासु-ननदिक संग चलि रहल खटपटक उल्लेख रहैत छलै।

फेर, एक दिन अचानक हुनकर मौसीक तार आयल, "जरूरी काज अछि, आबि रहल छी।" हमर माथ ठनकल। हमरासँ हुनका की काज भ' सकै छनि? निश्चय अभगली किकी किछु क' बैसल होयत। अबिते ओ हमरा एकान्तमे घीचि लेलनि।"ओहि अभगलीक सर्वनाश हुअ' जा रहल छै। अहीं ओकरा बचा सकै छियै।" "की बात भ' गेलै मौसी? हालेमे त' हुनका सँ भेंट कय आयल छी, कतेक प्रसन्न छलथि।"

"खाक प्रसन्न अछि। ओ दूनू चुड़ैल ओकर छाती पर मूँग दड़रै लेल फेर पहुँचि गेल छै। ओम्हर ओ अभागा सेहो पुलिस-कप्तान बनि ओत्तहि पहुँचि गेल छै।"

"के मौसी?"हम सभ बूझि क' अनजान बनि रहल छलहुँ।

"आर के, वैह रिपुदमना। सुनलियै, एक दिन मेवा-मिठाइ ल' क' राखी बन्हबाबय पहुँचि गेलै। एक बेर राखी बन्हबा क' त' ओ काण्ड केलक चाण्डाल। एक दिन ननदि रोकि देलकै। बस, फेर की छलै! किकीकेँ त' अहाँ जनिते छियै, जखने केओ रोआब देखेलक कि छौंड़ी पर शैतान सवार भ' जाइ छै। आब सुनै छियै खुल्लमखुल्ला अपन ओहि भायक संग आधा-आधा राति धरि ताश खेलाय अछि।"

"बलराम?ओ किछु नहि कहै छथिन?" हम पुछलियनि त' मौसी खौंझा उठली। ओ माटिक माधो की टोकि सकै छै। ओकरा त' किकी दस जूतो मारतै तैंयो नहि बाजत।"

"आब? आब की हेतै मौसी?"

" आब आर की हेतै। बौआ, एक बेर अहाँ चलि जाउ। हमर बात दोसर अछि, हम बेटीक सासुर कोना जा सकै छी? एक बेर जा क' ओकरा बुझा-सुझा दियौ बेटी! आब की नेन्ना अछि? बेटी पैघ भ' रहल छै। एक त' किकीक पिताक बीसो दुश्मन छनि-नहि जानि कखन कोन दुश्मन थानेदार आबि समधिनक कान भरि दैनि-अपटी खेतमे मरतै छौड़ी!"

हम नहि गेलहुँ। किकीकेँ हम जनैत छलियनि। जिद चढ़ला पर, अपना पएर पर कुल्हड़ियो मारैमे ओ कनियों नहि हिचकिचा सकैत छली। हमरा त' आइओ यैह लगैत अछि जे जँ हुनकर ओ कुण्ठाग्रस्त, रुक्ख ननदि हुनका संग रहै लेल नहि अबितथिन, त' बीसो रिपुदमन हुनकर किछु नहि बिगाड़ि सकितनि। ननदिक अविश्वास आ ईर्ष्ये हुनका अविवेकक खत्तामे धकेलि देने होयतनि।

फेर, एक दिन अचानक सुनलहुँ- 'अपन समृद्ध गृहस्थीकेँ स्वयं लात मारि, किकी अपन कैशौर्यक प्रेमी संग मुँह कारी कय भागि गेली। हुनकर ओ दुस्साहस आ निर्लज्ज आचरण हमरो स्तब्ध क' देलक। की अभगलीकेँ पुत्रियोक भविष्यक लेल ममता नहि भेलै? पैघ हेतै त' लोक आँगुर उठा-उठा क' कहतै-एकरे माय अपन प्रेमीक संग भागि गेल छलै।

आ फेर, बालक सन निष्कपट पति, जे हुनका प्रति अपन अपूर्व निष्ठाक

जीवन्त प्रमाण देने छलखिन-जन्मदायिनी जननीक त्याग कय! माय ठीके कहने छलखिन "देखि लिहें, एक-न-एक दिन ई तोरा आँचरसँ घिसियाक' राखि देतौ।"कलंकिनी खाली पतियेकेँ नहि, पितृकुल आ श्वसुर कुलकेँ सेहो कलंकित क' देलक।

कतोक वर्ष धरि, हमरा हुनकर कोनो समाचार नहि भेटल, कोनो उत्सुकतो नहि छल।

किछु वर्षक बाद, एकटा विवाहमे गेलहुँ त' हुनकर नवीनतम दुष्कीर्तिक समाचार हमरा फेर स्तब्ध क' देलक। अपन जाहि प्रेमिकाक जीवित देह ल' रिपुदमन, कतौ दूर क्षितिजमे विलीन भ' गेल छल, ओकरे कफ़नमे लपेटल मृतदेह लय आधा राति क' हुनके पिताक दुआरि खटखटा क' ठाढ़ भ' गेलनि। एहिसँ पहिने कि ओ तटस्थ भ' पबितथि, ई कहि ओ प्रेतछाया जकाँ अमावस्याक अन्हारमे बिला गेल-"ने हम एकरा ल' क' गेल छलहुँ, ने आइ हमरासँ ई किछु कहि क' गेल। एहने एकटा अन्हार रातिमे हमरा किछु कहबा-सोचबाक अवसर बिनु देनहि, हमरा लग भागि आयल छल, आ आइओ बिनु किछु कहने, किरासन तेल ढारि, धुपकाठी जकाँ सुलगि गेल। हम आब ओत्तहि जा क' एकरासँ हिसाब मँगबै। अहाँक बेटी छल, अहाँ लग पहुँचा देलहुँ। हम ठाकुर छी सर, ब्राह्मणक क्रिया-कर्म कय अपन परलोक नहि बिगाड़ब। गुड नाइट सर..."

ई सभ बात हमरा किकीक मौसी कहने छली। किकीक पिताकेँ अपन निर्मम पेशामे एहन अनेको लाशक फाइल दाखिल-दफ्तर करबाक अनुभव छलनि। इजोत होइसँ पहिनहि कफनमे लपेटल अपन कलंकिनी पुत्रीक मुँह बिनु देखिनहि मुखाग्नि द' देलखिन। खबर पाबि जखन हुनकर पति श्मशान घाट पहुँचला, त' किकीक चाम रहित हड्डी चटचट क' रहल छलनि। ओ घंटों ठाढ़ भेल, शून्य दृष्टिसँ ओहि धुँआक बिलाइत रेखाकेँ देखैत रहला। हाथ पकड़ि क' फेर मौसे हुनका घर नेने एलखिन।

"अहाँ हुनकर मुँहो नहि देखलियनि काकाजी?" किकीक पितासँ बहुत दिनक बाद एक दिन पुछलियनि त' हुनकर ऐँठल मोछ तमसायल साहीक

कांट जकाँ सोझ भ’ गेलनि–"नहि"।

ओह, कफन उठा क’ ककाजी हुनकर चेहरा देखने रहितथिन! मुदा जाहि कफनक पर्दाकेँ ककाजी नहि उनटौलनि ओकरा आइ नियति स्वयं उनटि रहल छल। पंद्रह मिनट रुकै बला हमर टैक्सी भद्रा नक्षत्रसँ बन्हल घंटो रुकल रहल। पहिने एकटा सहयात्रीक पएरमे शीशा गड़लनि, फेर ड्राइवरकेँ नक्सीर फुटलनि। होटलक पहाड़ी छौंड़ा, दोसर सहयात्रीक बटुआ निकालि लेलकनि। गेरुआ लबादामे लेपटायल ओ पाथरक मूर्ति सन भिक्षुणी, ओतेक काल धरि हमरा दिस पीठ केने ठाढ़ रहली। दूर पहाड़क चोटी पर असंख्य बत्ती जगमगाय लागल छल। प्रतिपल, प्रतिक्षण नाग जकाँ फन उठबैत हमर सन्देह, हमरे डँसबा लेल बढ़ि रहल छल। ड्राइवर हमर सहयात्री सभकेँ नेने, रूमालसँ मुँह पोछैत तेजीसँ आबि रहल छल। ओम्हर बहुत रास बेडिंग, सेबक पेटी आ पोटरी सभक बीच ठाढ़ ओ भिक्षुणी सेहो हिलली, भरिसक अपन संगी भिक्षु-भिक्षुणीक बाजब सुनि चौंकि क’ घूमल छल हेतीह।

हमरा जेना क्यो झिकझोरै लागल–थोड़बे कालमे हमर सभक एकान्त, एकान्त नहि रहि जायत। कियेक नहि लग जा क’, एक बेर चेहरा देखिए लियै। फेर हम एको क्षणक विलम्ब नहि कयलहुँ। गाड़ीक द्वार खुजले छोड़ि हम हुनका सोझाँ पहुँचि गेलहुँ। कनी काल लेल हम हुनकर सब कलुष-कलंक बिसरि गेलहुँ।

"किकी, हम अहाँ के देखिते चीन्हि गेल छलहुँ-किकी!" हमर मोन भरिया गेल।

मुदा ओहि क्षण हमर उत्साह, कौतूहल, खुशीक वेग, दूधक फेन जकाँ बैसि गेल। हुनकर पैघ-पैघ मुर्दा आँखिमे खाली उदासी छलनि-ओहि भावहीन दृष्टिमे, मैत्रीक एक्कहु टा बिसरल लहरि, हमरा आश्वस्त नहि केलक।

'किकी! किकी!"हम हुनकर दूनू हाथ पकड़ि, चतुराइसँ हुनकर दहिना तरहथ्थी उनटयबाक चेष्टा कयलहुँ।

ओहि चाकर, चिक्कन तरहथ्थी पर कतेक बेर मेंहदीक लत्ती, गमला बनौने छलहुँ, ओही तरहथ्थीक बीचोबीच जे गोल-चिक्कन तिल छलै, केश मुड़ेलो पर की ओकरा मेटा सकल होयती?

मुदा झटकि क' ओ हाथ छोड़ा लेलनि आ तखनहि हुनकर रुक्ष, खूँखार चेहरा वाली संगी सब हमरा घेरि लेलक-"ऐ! ओकरा किएक तंग करै छियै? ओ हिन्दी नहि जानै छै? की पूछब, हमरा पूछू।" दुष्टा सन एकटा वराहदान्तिनी पुरुषाह भिक्षुणी अपन विकराल आँखिसँ हमरा घूरय लागल।

"किकी!"ओहि भिक्षुणीक बात नहि मानि हम फेर किकीक दहिना हाथ पकडि लेलियनि आ अपन अन्तिम पाशा फेकलहुँ- "अहाँक बेटीक विवाहमे हम गेल छलहुँ किकी! अहाँक जमाय बहुत सुन्दर छथि आ अहाँक बेटा सेहो एहि साल इंजीनियर बनि जायत।"

एक क्षणक लेल, ओहि मरल-मिझायल आँखिमे वात्सल्यक असंख्य दीप जरि गेलै। अवसर भेटिते हम तरहथ्थी उनटि देलिऐ। ओ किकी छली।

"मेम साहब चलू।" अधैर्यसँ हॉर्न दय ड्राइवर हमरा बजेलक।

हम एक बेर विवश दृष्टिसँ हुनका देखलियनि-ओ फेर मंत्रक जापमे डूमि, तेजीसँ मनका चलबैत बेडिंग पर बैसि गेली।

"ई सभ दलाईलामा मठक तिब्बती भक्तिन छथि, धरमशाला जा रहल छथि।"ड्राइवर, हमर कोनो सहयात्रीकेँ हुनकर सभक परिचय दय रहल छलनि। हम घूमि क' देखलहुँ, ओहि दर्जनों छोट-छोट आँखिक कौतूहल, एक्युपंक्चरक सूई जकाँ हमर शरीरकेँ बेधैत हमर चेतना हरि रहल छल। छोट-छोट आँखि आ ओहि मंगोल चेहराक बीच, बेमेल लागि रहल ओहि शान्त-स्निग्ध चेहरा पर जड़ल पैघ-पैघ आँखिक प्रलम्ब पल नीचाँ झुकल रहल। आह, एक बेर, खाली एके बेर जँ ओहि झुकल पलकेँ उठा क' हम देखि सकितहुँ! की स्मृतिक आकस्मिक अछार ओकरो भिजा देने हेतै?

बौका

सुख, सन्तोष आ स्वास्थ्यक चमकसँ दमकैत डॉ पांड्याकेँ देखि लगै जेना केओ अंग्रेज होथि। हुनकर हाथमे किछु एहन यश छलनि जे हाथ लगबिते गंभीर रोगी सभ सेहो स्वस्थ भ' जाय। डॉ पाण्ड्याक व्यक्तित्वे सन फीस सेहो रुअबगर छलनि। हुनकर फीस सुनिते एहन-ओहन लोकक त' चेहरा पीयर पड़ि जाइत छल, मुदा डॉक्टरक आँखिमे करुणा नहि छलनि। कखनो काल ओ अपन फ़ीसमे कटौती करबो करथिन, जँ रोगिणी सुन्दरी होथु वा कोनो विशेष रोगक नमूना। मुदा केहन-केहन असाध्य रोगक इलाज करयबला ई डॉ. अपन स्त्रीक इलाज नहि क' सकलथि। पहिलुक संतानकेँ जन्म देलाक बाद सोइरियेमे ओ बताहि भ' गेली आ सर्जन हुनका ठीक नहिए क' सकलखिन।

सोलह वर्षसँ ओ आगराक पागलखानामे पड़ल छथि। बीच-बीचमे सर्जन हुनका देखय जाइत छलखिन। ओहि ठामसँ अयलाक बाद पत्नीक उन्मादक सम्बन्धमे ने पिता किछु कहथिन आ ने बेटिए किछु पुछथिन। सर्जनक बेटीक नाम छलनि कृष्णा। वर्ण गौर त' नहि छलनि, मुदा मुँहक गढ़नि धरि अनुपम! पिताक दुलरी छली। पिताक स्नेहमे कृष्णाकेँ माइक अभावक अनुभव कहियो नहि भेलनि। दुलारक संगहिं पिताक शासन सेहो कड़गर छलनि। अध्ययनक सँगहि कृष्णा नृत्य-गीतक शिक्षा सेहो पओलनि। पएरमे घुँघरू बन्हितहि ओ स्वर्गक अप्सरा जकाँ लगैत छली। पैघ सँ पैघ कला-मर्मज्ञ वा नृत्य-गीतसँ एकदम अनभिज्ञ, रसिक वा अरसिक- सभ हुनकर नृत्यक रस-माधुरीमे डूमि जाथि, यैह छलनि कृष्णाक नृत्यक विशेषता!

एक बेर नृत्योत्सवमे ओ तीन घंटा धरि नृत्य कय दर्शक लोकनिकेँ

मंत्रमुग्ध क’ देलनि। पूरा हॉल थोपरीसँ गूंजि उठल। पिताक आँखिमे आनन्दक नोर भरि अयलनि। ओहि छविकेँ एकटक देखैत एकटा आओर व्यक्तिक आँखि सेहो भरि आयल छलनि, ओ छला युवा स्क्वैड्रन लीडर वी डिसूजा। ओ कृष्णाक पड़ोसी डॉ. डिसूजाक बेटा छला। डॉ. डिसूजा सर्जन केर क्लिनिकमे काज करैत छला। सर्जरीक क्रममे छुरी लगला सँ टिटनेस भ’ गेलनि आ मृत्यु भ’ गेलनि। डिसूजा माय टुग्गर त’ छलाहे, बपटुग्गर सेहो भ’ गेला। अपन छुट्टी ओ सर्जनक सँग बितबै लगला। ओहि सौम्य युवककेँ सर्जन सेहो बड़ मानैत छलखिन। डिसूजा कृष्णासँ बहुत प्रेम करैत छलाह, तैंयो ओ बचि क’ रहय चाहथि। जतबे ओ बचय चाहथि, कृष्णा ततबे घेरि लैनि।

एहि बीच अपन निःसंतान बूढ़ कक्काक संस्कार करबा लेल सर्जनकेँ पहाड़ जाय पड़लनि। किछु दिन पहिने कक्का केर अनुनय भरल चिट्ठी आयल छलनि-"हम मरणासन्न छी, मृत्युक बाद कहुना हमर श्राद्ध क’ देब, नहि त’ हमर आत्मा भटकैत रहत।" प्रगतिशील विचारक होइतो पूरा सनातनी छला सर्जन। लघुशंकासँ निवृत्त होमय जाथि, त’ कान पर जनउ चढ़ल रहनि।

कक्काक आत्माकेँ भटकयसँ त’ सर्जन बचा लेलनि, मुदा बेटीक आत्मा भटकि गेलनि। कक्काक श्राद्ध-कर्म पूरा कय आपिस अयला त’ मोन बड़ प्रसन्न छलनि। अप्पन लोक-वेद हुनकर बेटीक लेल हीरा सन सुयोग्य वर खोजि देने छलनि।

पापाकेँ अनबा लेल कृष्णा हवाइ अड्डा पर आयल छली।-‘की बेटा, कन्तम्मा अहाँकेँ एसकर छोड़ि छुट्टी ल’ क’ चलि त’ ने गेल?' कन्तम्मा हुनकर बहुत पुरान आया छलनि।

-‘ ई सभ गप्प छोड़ू पापा, ओ कत्तहु नहि गेल अछि। अहाँ ई कहू जे हमरा लेल बालसिंघौरी अनलहुँ कि नहि?'

‘आनब किएक नहि, सँगहि एकटा आर चीज हम अप्पन दुलरी बेटी लेल अनने छी।’

‘की पापा?'

अहाँ लेल सुन्दर वर ताकि क’ अनलहुँ अछि। प्रायः ओही लेल भगवान हमरा पहाड़ पठौलनि।’

किछुये दिनमे बेटी अनकर भ’ जेतनि ई सोचि सर्जनक हृदय ममतासँ भरि अयलनि। ई गप्प सुनतहिं कृष्णा, कनेक काल त’ गुम्म भ’ गेली। मुदा फेर दृढ़ स्वरमे बजली-"अहाँकेँ हमर वर नहि ताकय पड़त पापा, हम अपन वर ताकि चुकल छी।" कृष्णाक गप्प सुनि कनेक काल त’ सर्जन अवाक् रहि गेला। फेर संयत भ’ करुण स्वरमे पुछलखिन-"धुर बताहि, केहन वर?"

‘हम विकीसँ विवाह करब पापा। ई हम्मर अंतिम निर्णय अछि। हम दुनू गोटे एक-दोसराकेँ पसिन्न करै छी।’

ई सुनि सर्जन तामससँ बताह भ’ गेला। सामान्य पायलट डिसूजा, ताहि पर इसाई आ एम्हर कुमाउँक महापण्डित खानदानक बेटी कृष्णा! घर पहुँचला त’ विकीकेँ बजा पठौलखिन, मुदा ओ चेन्नइ गेल छल। कृष्णाकेँ कठोर शासनमे बान्हि मोन कने निश्चिन्त भेलनि। एहि बीच पिताकेँ जयपुरमे भ’ रहल सेमिनारक अध्यक्षता करबा लेल जाइ पड़लनि। कान्तम्माकेँ कठोर आज्ञा दय, दुइटा आर बूढ़ खबासिनिक व्यवस्था कय ओ जयपुर विदा भेला। अपना हिसाबेँ ओ बढियाँ व्यवस्था कयने छला, मुदा ई नहि बूझि सकला जे तीन जोड़ी बूढ़ आँखिकेँ ठकबा लेल एक जोड़ी जुआन आँखि बहुत होइत छैक। खबर भेटिते विकी छुट्टी ल’ क’ आबि गेल आ दुनू गोटे नुका-चोराक’ भेँट करय लागल। एक दिन कृष्णा विकीकेँ कहलखिन जे पापाकेँ अयबामे आब आठे दिन बाँचल छनि आ पाँच दिनक बाद अहाँकेँ फ्रांस जयबाक अछि, किएक नहि सेंट पॉलक पादरीक खुशामद कय विवाह क’ ली? विवाहक बाद पापा की क’ लेथिन?

जयपुर सँ आपिस अयलाक बाद दुइ-तीन मास धरि सर्जन अप्पन रोगी सभमे व्यस्त रहला। एक दिन अख़बार हाथमे लैते पहिले पृष्ठ पर 'जुआन भारतीय पायलटक मृत्युक' खबरि देखि अचंभित भ’ गेला। विकीक मृत्यु भ’ गेलै। मोने-मोन ओ ईश्वरक धन्यवाद कयलनि कि कृष्णाक चिकरब

सुनि चौंकि गेला। कृष्णाक कानब केओ नहि सुनथि, ई सोचि सर्जन भीतरसँ केबाड़ बन्न क’ लेलनि। कृष्णा सिसकिते रहली।

"अहाँ की अनघोल मचौने छी? अहाँ कोनो छोट बच्चा नहि छी, अहाँकेँ ई पता होयबाक चाही जे अहाँक विवाह ठीक भ’ गेल अछि।"

छटपटाइत कृष्णा उठि बैसली आ बजली-"हम्मर विवाह भ’ गेल अछि पापा।"

‘की अनर्गल बाजि रहल छी?'- तामसे बताह भेल सर्जन बेटी दिस थापड़ उसाहलनि, मुदा बिन मारनहि हाथ हटा लेलनि।"हँ पापा, विकी हमर पति छल। तीन मास पहिनहि सेंट पॉलक पादरी हम्मर विवाह करौने छल।"

“चुप, एकदम चुप! अहाँ एखन नाबालिग छी, अहाँक विवाह कोना भ’ सकैत अछि?विवाह कोनो खेल नहि छै।"

“नहि खेल किऐक रहतै? एकटा आओर गप्प सुनू पापा! हम माय बनय वाली छी।"

नियतिक आगाँ ककर वश चलै छै? अपवाद सर्जन सेहो नहि रहला। भरि राति ओ पिंजरामे बन्न सिंह जकाँ घुमैत रहला। मुदा भोर होइत-होइत एकटा निर्णय ल’ लेलनि। पहिने पादरी ओहि ठाम जाय नहि जानि कतेक राशिक चेकसँ ओकर मुँह बन्न कयलनि आ दोसरे दिन बेटीकेँ सँग लय विदा भ’ गेला। सभकेँ कहलखिन जे बेटीक सगाइ करबा लेल पहाड़ जा रहल छी।

बाटमे कृष्णाकेँ बहुत बुझौलखिन, जमानाक ऊँच-नीचसँ सेहो परिचय करौलखिन। अहाँक पूरा जिनगी एखन पड़ल अछि, अठारह वर्षक सेहो नहि छी। समाज एसकर जीबय नहि देत। कोनो ना कृष्णा राजी भेली। दिल्लीक एकटा बहुत पैघ महिला आश्रमक संचालिका काशीबाईकेँ सर्जन जनैत छलखिन। किछु वर्ष पहिने कशीबाइक ब्रेस्ट- कैंसरक इलाज कय ओकरा जीवनदान देने छलखिन, आइ ओकरे प्रतिदान माँगय जा रहल छला। सभ बात सुनि काशीबाई हँसि क’ कहलकनि- “अहाँ निचेन

रहू सर्जन, किनको कानो-कान खबरि नहि हैतनि।"

भगवतीक कृपासँ कृष्णा समयसँ पहिनहि मुक्त भ' गेली। सतमस्सू बेटाकेँ जन्म दय चारि मासक बाद कृष्णा घर घुरि अयली। किछुए दिनक बाद विवाहक तैयारी जोर-शोर सँ चलय लागल। विवाह निर्विघ्न सम्पन्न भेलनि। सर्जनक माथ परसँ बड़का भार हटलनि। किनको कोनो शंका नहि भेलनि। सर्जनकेँ काशीबाई पर पूरा भरोस छलनि।

समय बीतैत गेल। कृष्णाक विवाहक छः वर्ष भ' गेल छल। पाँच वर्षक एकटा बेटा सेहो छलनि, मुदा हुनकर सौंदर्यमे एखनहुँ कोनो अंतर नहि आयल छलनि। ओएह अल्हड़पन, ओएह मासूमियत।

नृत्यक अभ्यास ओ एखनो नियमित रूपसँ करैत छली। हुनकर ओडिसी आ भरतनाट्यम केर प्रसिद्धि राजधानी धरि पहुँचि चुकल छल। महारानीक स्वागत-समारोहमे हुनका आग्रहपूर्वक बजाओल गेल छलनि। ओ पति-पुत्रक संगहिँ दिल्ली आयल छली। ठीक सातम दिन पतिकेँ वाशिंगटन दूतावासमे सेक्रेटरी पदक भार ग्रहण करबाक लेल पहुँचबाक छलनि। दुर्भाग्यसँ ठीक नृत्य-समारोहक दिन राजीवकेँ बहुत बेशी बोखार भ' गेलै। एसगरुआ बच्चा- जिद्दी आ दुलारू, कहुना मायकेँ छोड़बा लेल तैयारे नहि छल। बहुत मुश्किलसँ इलेक्ट्रिक ट्रेन आ चॉकलेटक घूस पर छोड़लकनि। ताहि दिनुका नृत्य-प्रदर्शन कृष्णाक यशमे चारि चान लगा देलकनि। स्वयं महारानी एलिजाबेथ दुन्नू हाथ पकड़ि क' हुनका बधाइ देलखिन। प्रशंसा आ थोपड़ीक निशाँमे झुमैत ओ पति सँग आपिस अबैत छली कि एकाएक महिला आश्रम दिस नजरि गेलनि। एक्कहि क्षणमे हुनकर प्रसन्नता उड़ि गेलनि। जाहि घावक सुखायल पपड़ी धरि झड़ि गेल छलनि, वैह आइ फेरसँ हरियर भ' गेलनि। घर आबि, बच्चाकेँ करेज सँ लगा पड़ि रहली, मुदा कहुना निन्न नहि भेलनि।

पिपरक गाछक छाहरिसँ घेरायल आश्रमक छोट सन कोठरीमे झूला सन खाट पर एकटा अभागल सूतल छल, मुँह नुकेबा लेल ओकरा लग ककरो आंचर नहि छलै। ने ओकरा मायक घुरि अयबाक प्रतीक्षा छलै,

आ ने कहियोक स्नेहिल स्मृति छलै जे बिछोहक दर्द होइतै। दिन भरि ओ आश्रमक बच्चा सभसँ मारि खाइत छल। ओकरा आँखिमे एक तरहक अनाम उदासी छलै। ने ओ ककरोसँ बजैत छल आ ने ककरोसँ झगड़ा करैत छल। झगड़ा ओ करबे कोना करितै? ओ बेचारा त' जन्महिसँ गोंग आ बहिर छल। कृष्णाकेँ ई सभ नहि बूझल छलनि। पाँच वर्षमे कतेको बेर बच्चाकेँ देखबा लेल मन औनेलनि, मुदा आश्रममे पएर नहि रखबाक वचन पापा ल' नेने छलखिन। कोन ठेकान मरिए गेल होइ। बेचारी कृष्णाकेँ ई गप्प नहि बूझल छलनि जे जकर मृत्युक कामना कएल जाइ छै ओहन बच्चा नहि मरै छै। मरै छै ओ जकरा जीवनक लेल आँचर पसारि क' भीख माँगल जाइ छै।

सोम दिन कृष्णाकेँ वाशिंगटन जयबाक छलनि। आइ राजीवक बोखार सेहो उतरि गेल छलै। ओ रेलसँ खेला रहल छल आ पति सेहो कतौ गेल छलखिन। कृष्णा अपन कार निकालि ओही दोकानसँ रेल आ एकटा पैघ सन भालू किनलनि आ बहुत रास चॉकलेट सेहो लय आश्रम दिस विदा भेली। आश्रम लग पहुँचलाक बाद कृष्णाक करेज धड़-धड़ करय लगलनि। जानि नहि काशीबाइक बदली भ' गेल होइ तखन की करब?, तैंयो साहस कय भीतर गेली त' गेटे पर काशीबाइ भेटि गेलनि-"अरे तों! आबह, ऑफिसमे बैसैत छी। बहुत दिनक बाद मोन पड़लह।"

" अबितहुँ कोना? पापाकेँ वचन जे देने छलियनि।"

" की ओकरा देखबहक?"

कृष्णा माथ डोला क' सहमति देलखिन।

"देखह कृष्णा, ओकरा बजबा त' लै छियै, मुदा अपना पर नियंत्रण रखिह'। ओ अभागल त' बौक अछि, मुदा खबासिनी सभकेँ कनिओ शंका हेतै त' ब्लैकमेल करय लगतै।"

घंटी बजा क' काशीबाइ पूरनदेइकेँ बजा क' कहलकै- "सुन कने बौकाकेँ नेने त' अबही। बड़की डॉक्टरनी आयल छथिन, ओकर जीह देखथिन।"

पूरनदेइ एकदम कसैनी छल। बौकाकेँ गदहा जकाँ हँकने नेने आयल। ओ ककरो अनकर बुशर्ट पहिरने छल, जकर बाँहि ओकरा हाथसँ बहुत नीचाँ लटकि रहल छलै। भ’ सकैछ जे कमीजक लम्बाइ एहि लेल बढ़ा देल गेल होइ कि फटलाहा पैंट निचला अंगक लाजो झँपबा जोगर दढ़ नहि छलै।

“एकरा तैयार किएक नहि केलही?"-सकपकाइत काशीबाइ पूरनदेइकेँ डँटलकै।

"ई हरामी केहन जिद्दी छै से बुझल नहि अछि? कतबो कहलियै जे कपड़ा बदलि ले, किन्नहुँ नहि मानलक।" कठोर दृष्टिसँ बौकाकेँ देखैत पूरनदेइ बहरा गेल। कृष्णाक सजल आँखिमे राजीवक चेहरा नाचि गेलनि, जकर सौ-सौ नखरा उठबैत ओ, पति आ आया हारि जाइत छल। केबाड़क किल्ली लगा काशीबाइ बौकाकेँ बजेलकै-"इम्हर आ बेटा!"

"घम-घम " कोनो महान दार्शनिक जकाँ हँसि जेना अप्पन मायसँ बौका कहि रहल होइ-एकरा गप्पमे नहि अबिहें माँ, ई बड़ लबरी अछि। कृष्णा ओकर सभ बात बुझि गेली। एहन भाषा माइये टा बुझि सकैत अछि। कृष्णाक आँखिसँ नोर झहरै लगलनि। अनमन छोट सन डिसूजे त’ ठाढ़ छल। ओ लपकि क’ बौकाकेँ घीचि करेजसँ सटा लेलनि। कखनो ओकर माथमे चुम्मा लेथिन, कखनो मैलसँ कारी गालक। लगैत छल जेना चुम्मेसँ ओकरा अपनामे भरि लेथिन।

“आब बस करह। किएक ओकरा माथ पर चढ़ा रहल छहक " कठोर स्वरमे काशीबाइ बाजल।"

खिसिया क’ कृष्णा ओकरा छोड़ि देलखिन। छुटिते बौका खेलौना लग ठाढ़ भ’ गेल। काशीबाइ ओकरा खेलौनाक डिब्बा द’ देलकै। कखनो ओ इंजन उठबै, कखनो रेलक लाल, हरियर डिब्बाकेँ, कखनो थोपड़ी पारै, कखनो गोल-गोल घुमि क’ नाचै-"घम-घम, मम-मम।"

"कृष्णा आब तों चलिए जाह, बहुत कालसँ केबाड़ बन्न छै, मरलाही पूरनदेइ कतौ कान लगा क’ सुनैत ने होइ। वाह! ई औँठी त’ बड़ सुन्दर छह

हे कृष्णा।"। ललचायल दृष्टिक सन्देश कृष्णाकेँ बुझबामे आबि गेलनि। चट द’ अप्पन औँठी खोलि क’ काशीबाइकेँ पहिरा देलखिन आ बौकाक ध्यान रखबाक मूक प्रार्थना केलखिन। हृदय पर पाथर राखि एक बेर फेर बौकाकेँ करेजसँ सटाय तीर जकाँ बहरा गेली।

सोम दिन ओ पतिक सँग विदेश चलि गेली। थोड़बे दिनक बाद भारतीय सेक्रेटरीक नृत्यनिपुणा पत्नीक चर्चा पूरा एम्बेसीमे छल। एक बेर टेलीविज़न पर कृष्णाक नृत्य अयलनि। तकर किछुए दिनक बाद बौक-बहिर बच्चाक संस्था चलौनिहारि मदर मारियाक चिट्ठी भेटलनि-"की ओ हुनकर अभागल बच्चा सभक सोझाँ अपन मनोहारी नृत्य प्रस्तुत कय कृतार्थ करती?”

कृष्णा सकारि लेलखिन। तीन घंटा धरि ओ लगातार नृत्य करिते रहली। ओहि बच्चा सभक चेहराक खुशी करोड़ो थोपड़ीक गड़गड़ाहटिसँ बढ़ि क’ छल। नृत्य समाप्त भेल आ मदर केर हाथ पकड़ि एकटा देवदूत सन सुन्नर बालक आबि हुनका फूलक गुलदस्ता देलकनि।

"धन्यवाद बाउ, अहाँक की नाम अछि?" पुछिते कृष्णाकेँ अपन अल्पबुद्धि पर बड़ तामस भेलनि।

"ओह मिसेज त्रिपाठी, ई बेचारा त’ जन्महिसँ बौक अछि। एकर माय एकरा आश्रमक गेट पर छोड़ि क चलि गेलै, फेर कहियो घुरि क’ नहि एलै-इशू ओकरा क्षमा करथुन।" ओहि सोन सन बच्चाकेँ देखि हुनका आँखिसँ टप-टप नोर खसय लगलनि।

"ई की मिसेज त्रिपाठी, अहाँ कनै छी?"जँ अहिना सभ मनुष्य एक-दोसरक दुःख लेल कानि सकैत? एकटा विदेशी बच्चाक लेल अहाँक आँखिमे नोर देखि हमरा कतेक ख़ुशी भेल एकर वर्णन हम नहि क’ सकैत छी।" बेचारी मदर की जनैत छली जे ओ नोर खाली ओहि विदेशी बच्चा लेल नहि छलै। ओ ओकरो लेल छलै जे अपन दुब्बर हाथसँ खिड़कीक छड़ पकड़ि क’ सूतल छल आ जकरा छातीसँ एकटा मैल सन भालू चेपटल छलै। ओकर रेल काशीबाइ खेलौना बला कोठरीमे बन्न क’ देने छलै।

ओ कतेक कानल, मुदा ओकर कानब के सुनैत? मोटरमे बैसि, खादीक टोपी पहिरि नेता लोकनि आश्रम आबथि, त' बच्चा सभकेँ साफ कपड़ा पहिरायल जाय, मिठाइ बाँटल जाइ, मुदा बौका मिठाइ फेकि रेलक लेल जिद्द करय। समुद्रक हिलोर जकाँ, कतेक तर्क-वितर्कक हिलोरि ओकर छोट सन करेजक कछार पर माथ पटकि व्यर्थे आपिस भ' जाय। ओ पूछय चाहैत छलै-हमर रेल किएक छिनलहुँ? कतेक लोक अबै छै, ओ किएक नहि अबैत छथि जे हमरा दुलार कय खेलौना देलनि? आइ हमरा पीठ पर काशीबाइ बेंतसँ किएक मारलनि? हम त' पूरनदेइक पीठ पर दाँते कटने रहियै, मुदा ओ त' हमरा रोज मारै अछि, ओकरा बेंत किएक नहि पड़लै? मुदा ओ अभागल त' ककरोसँ किछु नहि पूछि सकैत छल। मैल-कुचैल, बेजान भालुकेँ छातीसँ सटने एकटा अन्हार कोनमे नुका क' बैसि रहल, जतय कनेक काल ने काशीबाई ओकरा ताकि सकितै आ ने पूरनदेइ।

सात समुद्र पार ओकर माय सेहो सिसकि रहल छल। ओकर दुलार भरल सिसकीक लोरी भरिसक बौकाकेँ सेहो सुता देलकै। मधुर निन्नमे सूतल बौका अपन सपनाक दुनियाँमे पहुँचि हेरा गेल अछि, जतय ने काशीबाइ छै आ ने पूरनदेइ। ओहि ठाम त' पैघ सन बिजुलिक रेल छै, सोनक गाछ पर खेलौना सभ झुलै छै आ वैह सुन्दर सन स्त्री कोरामे बैसाय दुलार क' रहल छै।

निन्नमे मुस्कैत बौका भालुकेँ आर छातीमे साटि लेलक।

मित्र

आइ बहुत बरखक बाद कामेश्वरक मित्र राघव आबि रहल छथिन। ओ छथिन पैघ लोक, हुनकर अबैया सुनि पूरा घर उथल-पुथल भेल अछि। साफ सफाइ क' कहुना घर ठीक करबामे सभ जुटल छथि। बड़की बेटी रम्भा स्पिरिटसँ शीशाकेँ साफ क' रहल छथि आ मॅझिली ड्राइंगरूम सजा रहल छथि। बेटी सभक जिदसँ नब परदा, नब टी सेट किनाइये गेल छलै। खिड़की-केबाड़ पर नब परदा टंगा गेलै। दुनू बहिन अप्पन छोट भायकेँ डँटैत कहलखिन-'बब्बूजी, अहाँसँ त' कोनो काज होयत नहि। जखन देखू तखन किछु ने किछु खाइते रहैत छी। एगारह बजे कालका मेल अबै छै, साढ़े दस बाजि गेलै आ अहाँक पैजामा ससरिए रहल अछि। जाउ, पहिने जा क' कपड़ा बदलू। '

सभ गोटे गप-शपमे लगले छलि कि तखने रिक्शाक आवाज सुनाइ पड़लनि। रिक्शाक आवाज सुनिते तीनू भाय-बहिन घसकि गेल। हाथमे ढाकन आ करछु नेने गृहस्वामिनी राधा बेचारी सोचिते रहि गेली जे कतय नुकाउ, ताबत हुनकर पतिक मित्र दुआरि पर ठाढ़ बजलाह-

नमस्कार भौजी!

पतिक मित्रकेँ देखिते राधा काँपि उठली। केहन कुदरूप आ भयावह छल ओ। यद्यपि पति पहिनहि कहने छलखिन जे हम्मर मित्र देखबामे जरूर कारी आ कुदरूप अछि मुदा अंतस बड़ पवित्र छैक। मुदा एतेक खटखट कारी, एतेक मोट ठोर, एहन खल्वाट माथ आ पिच्चल नाक! ओह! क्षण भरि त' ओ अवाक् रहि गेली। कतय सुरुचि-संपन्न, सुदर्शन कामेश्वर आ कतय ई बनरमुंहा! सामान्यतः पतिक मित्र वा आत्मीय, खाहे केहनो सुरुचि-संपन्न किएक नहि होथु, पत्नीकेँ नहिए सोहाइ छनि, मुदा एतय त'

वस्तुत: एहने स्थिति छलै। राधाक दुर्भाग्यसँ पाहुन मासक सत्ताइस तारीख क' आयल छलखिन, मुदा तइयों स्वागत-सत्कारमे ओ कनियों कमी नहि रहय देलखिन। नब सेटमे ब्रुकबांड चाह बनलै, कुरकुर मोनेको स्नैक्सक चमचमाइत टिन खुजलै आ मित्रकेँ घेरि क' पूरा परिवार बैसि गेल।

कोयला सन कारी राघव लग कामेश्वरक तीनू बच्चा देवदूत सन लगैत छलै। राघव बहुत स्नेहसँ बब्बूजीकेँ अपना कोरामे उठा नेने छलखिन। ओ बेराबेरी तीनू बच्चासँ किछु ने किछु प्रश्न पूछि रहल छलखिन। कखनो सामान्य ज्ञानक परीक्षा चलैत छलै त' कखनो बड़की बेटीक अंग्रेजी साहित्यक वाइवा लेल जा रहल छलै। ओ अपना पांडित्यसँ मित्रक परिवारकेँ प्रभावित करबाक चेष्टा क' रहल छला। सवाल-जवाब, गप-शप होइत बहुत अबेर भ' गेलै। रतुका भोजन होइत-होइत एगारह बाजि गेलै। राधा थाकि क' चूर भ' गेली। एतेक राति धरि जागि क' काज करबाक आदति राधाकेँ नहि छलनि।

राघवक जोर-जोर सँ बाजब-हँसब, हुनकर सुन्नरि बेटी सभकेँ आंखि गड़ा क' देखब हुनका एको रत्ती पसिन्न नहि पड़ि रहल छलनि तथापि ओ चुप्पे रहली। कतबो खराब होथु, छथि त' पतिक मित्र। बेचाराक एसकरुआ जिनगीमे स्त्रिगणक छाया नहि पड़ल छलनि, ताहि द्वारे भरिसक मित्रक सुखी जीवन देखि मुँहमे पानि भरि आयल छनि। फेर हुनका दुइए दिन त' रहबाक छनि, तेसर दिन त' चलिए जयता। यैह सब सोचि अपन कर्तव्यक पालन करैत गेली। पति केँ किछु कहितथिन त' हुनका अनेरे कष्ट होइतनि।

प्रात भेने राघवकेँ मीटिंगमे जयबाक छलनि। भोरुका चाह पीबि ओ मीटिंगमे चलि गेला। दिनुका भोजन ओम्हरे छलनि। हुनका जाइते देरी बच्चा सभ बासी पत्तीमे चाह बनौलक। दोबारा चाह-जलखइ भेलइ, जोर-जोरसँ राघव कक्काक गुण-अवगुणक विवेचना भेलै फेर हुनकर मँहग सामान सबहक चीर-फाड़।

साँझमे राघव एलथि त' फेरसँ महफ़िल लगलै। रतुका भोजन होइत-होइत बारह बाजि गेलइ। राधा तीन-चारि बेर खेनाइ परसै लेल उठइयो

लगली, मुदा पाहुन मना क' देलखिन। ओहि अलमस्त पाहुनकेँ ई नहि बुझल छलनि जे सभ गृहस्थ-घरक अपन-अपन नियम आ सीमा होइ छै। तेसर दिन भोरुका मेलसँ हुनकर जयबाक गप छलनि, मुदा कामेश्वर बहुत आग्रहसँ रोकि लेलखिन। राधा मने-मन खौंझइबो कयली, दुइए दिनमे ढेरी पैसा खर्च भ' गेल छलनि। बच्चा सभकेँ सेहो राघव कक्काक गरिष्ठ विवेचनासँ अपच भ' गेल छलै। देश-विदेशक मंत्रिमंडलक लेखा-जोखा दैत दुन्नू बहिन उबिया गेल छली। जहिना नबका टीसेटकेँ राधा धो-पोछि क' राख' जाथि कि फेरसँ चाहक फरमाइश भ' जाय। रोज चारि-चारि टा तरकारी बनबैत राधा अपसियाँत भ' चुकल छली। पहिल दिनक पाहुन आब अकच्छ करय बला भ' गेल छलथि।

आइ राघव जा रहल छला। राधाकेँ मोन भेलनि जे बाटमे खयबा लेल चारि टा पूरी बना दियनि। ओ पूरी बनाइए रहल छली, कि तखने कामेश्वर शोर पाड़लखिन। सुनइ छी, अहाँ लग किछु टका होयत?'केहन टका?'

विदा होयबा काल राघवकेँ अचानक ध्यान अयलनि जे किछु टका कम छनि, पहुँचिते देरी पठा देता। 'अहाँ लग हरदम किछु टका रहैत अछि, प्लीज, द' दियउ। देरी भ' रहल छै। 'पतिक अनुरोध राधा टारि नहि सकली आ लक्ष्मी पूजा वाला टका निकालि क' दय देलखिन। '

मित्र-परिवारक मधुर-स्मृति आ एक सै पचीस टका लय राघव ओहि ठामसँ विदा भेला। हुनका गेलाक बाद कामेश्वरक परिवारक पुरना दिनचर्या शुरू भ' चुकल छलै। देवार पर फेरसँ रोल नंबर आ दूधक हिसाब लिखाय लगलै। राधा अपन फटलाहा साड़ी सभ पहिरय लगली, कामेश्वर सेहो अपन पुरना ड्रेस-कोडमे आबि गेला। नबका टी सेट बक्सामे रखा गेल। पुरना केटलीमे फेर सँ चाह बनय लागल। कहियो काल क' राघवक चर्चा होइन्हि त' राधा अपन टकाक गप अवश्य उठबथि।

कतेको मास बीति गेल। राघव ने कोनो चिट्ठी लिखलनि आ ने पाइये पठौलनि। टका लेल राधा हरदम किच-किच करथि।

एहि बीच मँहगी सहो चरम पर छलै, कोनो ना गृहस्थीक गाड़ी घीचि

रहल छली राधा। नाना अभावक बीच ओहि सै टकाक स्मृति हुनका कना दैनि। ओ पूजाक निमित्त राखल टका छलनि, ताहि द्वारे आर कष्ट होइनि।

एक तरहसँ राधा टकाक आशा छोड़िये चुकल छली कि एक दिन राघवक पत्र अयलनि। दिल्लीसँ बेदाना, अनार आ अँगूर पठौने छलखिन। पहिने त' राधा कचकचेली-'एहि ठाम लोक गहुम लेल तरसै अछि आ पठा देलनि अनार, बेदाना आ अंगूर। एहिसँ नीक त' मनीऑर्डर पठा दितथि।' एक बेर गढ़वालक दौरा पर गेला त' अखरोट पठा देलखिन।

राघवकेँ एक बेर फेर कोनो काजसँ मित्रक शहर अयबाक संयोग बनलनि। मित्र-परिवारक संग बिताओल स्मृति ततेक मधुर छलनि, जे फेरसँ हुनका सभसँ भेंट करबाक इच्छा भ' गेलनि। मुदा एहि बेर बिनु खबरि कयनहि पहुँचि क' हुनका सभकेँ अचंभित क' देबनि ई सोचि एकटा दोकानसँ तीनू माय-धी लेल खूब बढियाँ साड़ी किनलनि। पेमेन्ट करबा काल ओहि दोकानक एकटा तख्ती पर नजरि पड़लनि। लिखल छलै- 'उधार मित्रताक कैंची अछि।' ई वाक्य जेना हुनकर विस्मृतिक दरबज्जाकेँ जोर जोरसँ ढकढका देलकनि! ओह! हमहूँ त मित्रसँ पाइ ल 'क' आयल छलहुँ, केहन बिसरभौर छी हम।' हमरा बारेमे ओ सभ जानि नहि की सोचैत होयताह? मुदा आब त' हम जाइये रहल छी, मनीऑर्डर पठेबाक कोनो औचित्य नहि अछि।

जाहि दिन राघव मित्रक ओहि ठाम पहुँचला ओ मनहूस दिन छलै। दुइ दिनसँ पति-पत्नी मे झगड़ा बझल छलनि। झगड़ाक आरम्भ अर्थाभावेसँ भेल छलनि। पूरा दरमाहा मासक दसे तारीख क' ख़तम भ' गेल छलै। पत्नीक कहला पर एकदम रुक्ख स्वरमे कामेश्वर कहलखिन जे हमरा मासमे एक्कहि बेर दरमाहा भेटैत अछि, दुइ बेर नहि। पतिक अनेरोक खर्चक चर्च करैत-करैत राधाक स्वर तामसे ऊँच भ' गेलनि। उकटा- पैंचीक क्रममे केओ नहि छूटल आ ओहिमे नाम छलनि राघवोक-

'एकटा अहाँक मित्र छथि, दस-बीस टकाक फल आ मँगनीमे भेटल अखरोट पठा क' पूरा सै टका पचा लेलनि। हुनकर सत्कारमे सेहो कतेक

पाइ खर्च भ' गेल छल। खाली देहेसँ नहि, मोनसँ सेहो कारी छलथि अहाँक मित्र। '

बिनु सूचना देने आबि क' मित्र-परिवारकेँ आनन्दसँ अभिभूत करबाक संकल्पसँ आयल राघव केबाड़ लग ठाढ़े रहि गेलाह। पति-पत्नी तेना एक-दोसर पर आरोप-प्रत्यारोप क' रहल छलथि जे लगै किछु अनर्थ ने भ' जाय। डर आ आशंकासँ राघव काँपि उठला। ओ बेचारा त' व्यर्थे कँपैत छला। पारिवारिक लोकक तनावसँ ओ अनभिज्ञ छला। हुनका नहि बुझल छलनि जे जिनका विवाहित जीवनक आकाशमे एहन घनघोर घटा नहि घेराय छनि ओहि ठाम रसक बरखाक आशा सेहो व्यर्थ छै। ओ ई कल्पनो नहि क' सकला जे आइ एक-दोसराक खूनक पियासल, काल्हि फेरसँ एक प्राण भ' जयता। ओ आर ठाढ़ नहि रहि सकला। कोन ठेकान, तामसमे कामेश्वर अपन पत्नीक कण्ठे ने मोंकि देथिन! मित्र-पत्नीक हत्या ओ नहि देखि सकता। हुनकर कारी चेहरा आर स्याह भ' गेलनि, मोट ठोर पछतावासँ थरथराय लगलनि। की ओ सत्ते देह आ मोन दुन्नूसँ कारी छथि?

नोर भरल आँखिसँ राघव मित्र दिस तकलनि। की भीतर जा क' उपहार आ टका दय अबियनि? नहि, नहि आब ओ भीतर नहि जा पओता। तारसँ टका पठा देथिन। कनेक काल ओ थम्हला, फेर हाथमे सूटकेस उठौने, मित्रक दुआरिसँ बेरंग विदा भ' गेलाह।

प्रतिशोध

सौदामिनीमे सभटा गुण छलन्हि, जे एकटा पैघ अफसरक पत्नीमे होयबाक चाही। हुनकर चालि-ढालि, उठबा-बैसबाक ठसक आ तटस्थ भाव सभ दर्शनीय छलनि। बेटी आ पतिसँ ओ अँग्रेजिएमे गप करैत छली आ अँग्रेजीओ केहन? विशुद्ध कन्वेंटक लटका। अर्दली सभ हुनका डरे डेराइत रहैत छल। आटा, दालि, चाउर, मसाला, एतेक धरि जे चाहक पत्ती सेहो चम्मचसँ नापि क' ओ नौकर सभ केँ दैत छलखिन। सदिखन भण्डार घरक कुँजी हुनका डाँड़मे लटकल रहैत छलनि। ओ ओहन गृहिणी नहि छली जे पतिक पैघ ऑफिसर बनिते अपन गृहस्थीक प्रति बेपरवाहि भ' जाथु। नौकरे टा केँ नहि, पतिक नीचाँ काज करय बला ऑफिसर सभकेँ सेहो ओ अपन आँगुर पर नचबैत रहैत छली। किनको सरकारी गाड़ी घर पठेबाक लेल फोन करथिन, किनको सरकारी माली पठबै लेल। किनको अपन मोहक मुस्की दैत कहथिन-'आंइ यौ, अहाँ देहरादून जा रहल छी? एक बोरा बासमती चाउर नेने आयब! "केओ इटावा जाइ बला होइ त' कहब, थोड़ेक घी मँगेबाक अछि। 'प्रदेशक कोन-कोन जिलासँ की मँगायाल जा सकैत अछि, से हुनका नीक जकाँ बुझल छलनि। शहरमे कोनो नृत्य-संगीतक गोष्ठी होउ वा कोनो बहुचर्चित फिल्मक प्रीमियर, मनक अनुकूल पास हुनका लग पहुँचिए जाइनि। एहन रुअबगर व्यक्तित्वक पत्नीक सोझाँ प्रतिभासम्पन्न पतिक व्यक्तित्व सेहो दबिए जाइत छैक। तहिना शंकरक व्यक्तित्व सेहो कुंठित भ' क' रहि गेल छलनि। ओ किनकासँ भेँट करता, किनका सँग उठता-बैसता, कखन की पहिरता- ई सभ निर्णय सौदामिनीक होइत छलनि। शंकरक बाल्यकालक एकटा मित्र अही शहरमे छलखिन, सौदामिनीसँ नुका क' भेंट-घाँट कय अबैत छलाह। मुदा एक दिन ओ

देखि लेलखिन। तहियासँ ओहो दुआरि छूटिए गेलनि। सौदामिनीकेँ अपन अनुशासित गृहस्थी पर बड्ड गौरव छलनि। एक्कहि टा बेटी छलनि आ ओकरो ओ नैनीतालक बोर्डिंग स्कूलमे दय देने छलखिन। एकटा सजातीय पड़ोसी परिवारक बालक जखन आइ.ए .एस कम्पीट केलकै त' ओ एकटा दूरदर्शी योजना बनौलनि आ अपन बेटीकेँ नैनीतालसँ आनि एहि ठामक कॉन्वेंटमे दय देलखिन। बेटीकेँ ओहि तरुण सँग दोस्ती करबा लेल माय स्वयं प्रोत्साहित कयलखिन। मोनमे छलनि जे ओ तरुण जँ वशमे आबि जायत त' कम खर्चमे बेटीक विवाह नीक ठाम भ' जायत। शंकर बेचारा त' मात्र दर्शक छलाह।

शंकरक सभसँ पैघ गुण छलनि हुनकर संयम। पत्नी छाड़ि आइ धरि आन कोनो स्त्रिगणक आकर्षणमे नहि बन्हायल छलथि, मुदा कंचनसँ हुनका परहेज नहि छलनि। अहू दुर्बलताक कारण सौदामिनिये छली। ओएह हुनका हाथ पकड़ि क' एहि कुपथ पर घीचि क' ल' गेल छलखिन। आब हुनकर एहि दुर्बलताक चर्चा खुलेआम होइत छलनि। माटिक मोलमे सोनक टुकड़ा एक टा प्लॉट कीनि सौदामिनी देखैत-देखैत बड़की टा महल ठाढ़ क' लेलनि। ठीकेदार-मजूरक बीच ठहाठही रौदमे एकहक ईंटाक हिसाब रखैत नक्शा नेने ठाढ़ रहथि ओ। गृहप्रवेश होयबासँ पहिनहि ओ फ़र्टिलाइजर्सक कोनो नामी कम्पनीक ऑफिस लेल किरायाक बयाना लय चुकल छली। ऊपरका मंजिल लेल टाइप मशीन बलासँ गप क' चुकल छली। पछुआड़मे आम, कटहर, नेबोक गाछ हॉर्टिकल्चर बला सँ लगबा लेने छली। बेशी संभव अगिला वर्षसँ गाछ सभ फरइयो लगनि।

एक राति डेराइते-डेराइत शंकर पुछलखिन-'किछु वर्षमे त' हम रिटायर भए जायब। अपना सभक लेल की दुइओ टा कोठरी नहि राखब?'-एतबा सुनिते सौदामिनी हुनकर तेरहो पुरखाकेँ तारि देलखिन।

सौदामिनी सुंदरी छली, अलौकिक व्यक्तित्वक स्वामिनी छली त' शंकरक व्यक्तित्व सेहो कनियों कम नहि छलनि। मुदा शंकर गरीब, संस्कारी परिवारक छोट पुत्र छला त' सौदामिनी अत्यन्त प्रगतिशील

आधुनिक परिवारक पुत्री। हुनकर पिता खाली शंकरक गुण आ आगाँ बढ़बाक संभावना देखिए क' पुत्रीक विवाह क' देने छलखिन। विवाहमे आयल बरियातीकेँ देखि सौदामिनी खूब कनली। सासुर पहुँचली त' सासु, दियादिनी सभकेँ देखि ठामहि खसली। धीरे-धीरे सौदामिनी अपन सौन्दर्य आ लूरि-बुद्धिसँ पतिकेँ वशमे कयलनि आ हुनका लय फराक भए गेली। बहुत बुधियारीसँ ओ हड्डीसँ मासु एना छोड़ा लेलनि जे हड्डी सासुरेमे रहि गेलनि आ पूरा बोटी हिनका मुँहमे आबि गेलनि। पुत्रीक जन्म पर एक बेर सासु-ससुर आयल छलखिन्ह, मुदा सौदामिनी हुनका सँग तेहन खराप व्यवहार कयलखिन जे ओ सभ तेसरे दिन पड़ेला। यावज्जीवन कहियो ओहि ठाम जयबाक साहस नहि कय सकला।

कहियो काल शंकरकेँ माय-बाप सँ भेँट करबाक अनुमति भेटनि, मुदा निश्चित समयमे घुरि अयबाक विवशता सेहो छलनि। आब शंकरकेँ देखि क्यो नहि कहि सकय जे ओ ओहि परिवारक पुत्र छथि। शंकरकेँ ओ आपादमस्तक बदलि देने छलखिन, मुदा हुनकर सुन्दर व्यक्तित्वमे लागल अतीतक एकटा मलिन स्मृतिचिह्न एखनो सौदामिनीकेँ बताहि बना दैत छलनि।

जतय पतिक कारी केश पर सौदामिनीकेँ गौरव छलनि त' ओत्तहि पतिक टीक सौतिनोसँ बेशी टीस दैत छलनि। बीस वर्षक दाम्पत्य-जीवनमे अनेको बेर ई टीक माहुर घोरि चुकल छलनि। चारि वर्ष पहिने एकटा सेमिनारमे शंकरकेँ विदेश जयबाक छलनि। सौदामिनी फेरसँ हुनकर टीकक पाछाँ पड़ि गेलखिन। ई टीक केहन लागि रहल अछि? विद्वानक ओहि गोष्ठीमे टीक ल' क' हम किन्नहु नहि जाइ देब। आन खन जे शंकर पत्नीक सँग भेल बहसमे पाछाँ हटि जाथि, ओएह शंकर आइ तामसे बताह भ' गेला।"तखन अहूँ सुनि लिय', अहाँकेँ छोड़ि सकैत छी, मुदा एहि टीककेँ नहि, बुझलहुँ? एहि घमंडमे नहि रहब जे जहिना माय-बाप केँ छोड़बा देलियनि, इहो छोड़बा देबनि!"

शंकर तामस उठला पर कखनो-कखनो दिशा-ज्ञान बिसरि पाहुनो

सभक सोझाँ बेइज्जत क' सकैत छथि, ई सौदामिनीकेँ बुझल छलनि। एक बेर अपन विदेशी पाहुन सभक लेल ओ मासु बनेबाक बात कहलखिन त' शंकर साफ मना क' देलखिन, "देखू! आइ हमर बाबूजीक श्राद्ध छनि, चाहे गवर्नर आबय वा राजदूत, हमरा घरमे मासु नहि बनत।"

"ठीक छै, नहि बनतै" कहि चतुरा सौदामिनी चुपचाप अर्दलीकेँ बजार पठा जीमखानाक प्रसिद्ध मुर्ग कबाब, मुर्ग आ मुर्ग बिरयानी मँगा, टेबुल पर सजा देलनि। अपन विदेशी पाहुन लेल ओ विशुद्ध भारतीय परिवेशक चंदोवा तानि क' राखि देने छलखिन।

"ओह मिसेज चंद्रा, व्हाट ए ट्रीट!" कहि छौ फुटी मिसेज एनरसन अनभ्यस्त आँगुरसँ रुमाली रोटीक स्कर्ट जकाँ घेर फहराइये रहल छली कि मुर्गाक टाँग पर नजरि पड़िते शंकर तामसे बहरा गेला। नहि जानि कतेक बहन्ना बना सौदामिनी अपन पतिक अशिष्ट व्यवहारकेँ झँपबाक चेष्टा कयलनि। तहियासँ ओ पतिसँ सोझाँ-सोझी टक्कर नहि लैत छली।

मुदा सौदामिनीक ई ठसक सभ दिन नहि रहलनि। नियतिक कठोर आघात हुनका निश्चेष्ट बना देलकनि। अपन समाज-सेविकाक दलक नेतृत्व करबा लेल ओ जापान गेल छली। ओही बीच अपन जाहि सुशीला आज्ञाकारिणी बेटी पर हुनका बहुत गौरव छलनि, ओएह बेबी रकाबगंजक कोनो मुसलमान व्यापारीक नरहेर बेटा सँग चौक परहक मस्जिदमे निकाह पढ़ा मायक नाक कटा देलकनि। शहर भरिमे अनघोल मचि गेलै। पतिक तार पाबि वापस अयली त' देखै छथि जे शहरक देबार सभ पर हुनके बेटीक विजातीय विवाहक पोस्टर लागल छनि। बेटी एखन बालिग नहि छलनि, चाहितथि त' कानूनन वापस आनि सकैत छली, मुदा कोर्ट-कचहरीक चक्करमे पड़लासँ आब आर बेशी थुक्कम-फज्जति होइतनि। अपन जाहि बेटीक नीक स्वभावक चर्चा करैत ओ नहि अघाथि, ओकरे कलंकक कथा अपने मुँहे कोना कहितथिन। एहि द्वारे ओ स्वयं अपन सामाजिक जीवनसँ अपनाकेँ काटि लेलनि। बेटीक निर्लज्जतासँ मोन हटेबा लेल नबका मकानक काजमे अपनाकेँ ततेक व्यस्त कय लेलनि,

जे किछु सोचबाक पलखतिए नहि भेटय। बेटीक पलायनकेँ ओ ओकर अकालमृत्युक रूपमे स्वीकार कय चुकल छली। थाकि क' घर आबथि त' पतिक असहानुभूतिपूर्ण व्यवहार क्षुब्ध कय दैनि। हुनका नजरिमे पुत्रीक मर्यादा रहित व्यवहारक कारण पत्निए छलखिन।

"ओ कतय जाइ छै, कखन आबय छै, ककरा सँग घूमै छै, की अहाँ कहिओ देखलियै? फेर अहाँक महत्वाकांक्षो त' यैह छल न जे बेटी प्रेम-विवाह करय! से पूरा भ गेल, आब त' मोन शान्त भ' गेल होयत अहाँकेँ।"

सौदामिनी विकल भ' जाथि। दिन-रातिक घरेलू कलहसँ उबिया क' शंकर बेशी सँ बेशी पाइ कोना कमायल जाय, एहि पर ध्यान केंद्रित कयलनि। हुनकर कुण्ठित, अशान्त जीवनक एकमात्र यैह ध्येय रहि गेल छलनि। किनकर बिल पास करौला पर कतेक पर्सेंटेज भेटि सकैत अछि, वा कोन सरकारी अनुदान पर दस्तखत करिते पाबयबला सोना उगलि सकैत अछि, ई बात ओ नीक जकाँ बुझि गेल छला। आब बिनु बजौनहि लक्ष्मी घुंघरू छमकबैत हुनका जेबीमे आबि स्वयं बैसि जाथिन। एहि क्रममे एक दिन एकटा कर्जदारक मधुर बजाहटि हुनकर नारी-बुभुक्षित प्राणक सोझाँ छप्पन व्यंजनक थारी परसि क' राखि देलकनि। जुआनिओक दिनमे सौदामिनी प्रणयक आदान-प्रदानमे कंजूसे छली। ओ जुआनी आ धन दुन्नूकेँ सैंतने आयल छली। प्रौढ़ भेला उत्तर हुनकर ई कंजूसी अस्वभाविक रूपसँ उग्र भ' गेल छलनि। एक त' नब बनि रहल मकानक एकहक टा ईंटा हुनकर पूरा शक्ति सोखि नेने छलनि, ताहि पर रहल-सहल कसरि बेबी पूरा कय देलकनि।

राति क' कहिओ शंकर हुनका अपना दिस घिचबाक प्रयास करथिन त' ओ खौंझा क' हुनकर हाथ झटकि करोट फेरि क' सूति रहथि।" ई सभ करैत अहाँकेँ लाज नहि होइत अछि? दू वर्षमे पूरा पचास बरखक भ' जायब।" बेचारा शंकर भरि राति करौट बदलैत रहि जाथि। अपन ओहि मूर्खा पत्नीकेँ की ओ कहियो बुझा सकैत छलाह कि पचासक भेलाक बादो पुरुषक भूखल प्राण भुखायल नेन्ने जकाँ समय-असमय किछु नहि

देखैत छैक। ताहि द्वारे जखन ओ कुटिल उद्योगपति अपन मोहक प्रस्तावक चुग्गा फेकलकनि, त पहिले बजाहटिमे आकर्षित भ' गेला।

"सर, हमर यैह एकटा हॉबी अछि, एकटा छोट सन खूब सुन्दर फ्लैट नेने छी, ओकर खिड़की, केबाड़ सब साउंडप्रूफ छै। ओत्तहि सामान्य फूल-बेलपातसँ अहाँ सभ सन देवता सभक पूजा ई सेवक करैत अछि। फूल-बेलपात सेहो सम्भ्रान्त घरक फुलवारीसँ अनै छी सर! स्कूल, यूनिवर्सिटी, मेडिकल कॉलेज आदिक संभ्रांत घरक लड़की सभक देह-सौंदर्यकेँ परखैमे थोड़ेक हाई ब्राउ छी सर, ताहि द्वारे एकदम एयर होस्टेस बला मापदण्ड राखै छी।

जखने बाइस वर्षसँ ऊपर भेल कि एकदम अनफिट। हम अहाँक पसन्दकेँ नीक जकाँ बूझै छी। एकदम अहाँक पसिन्नक व्यवस्था कय बजबय आयल छी। हम कि एतबहु नहि बुझबै कि जे व्यक्ति इम्पोर्टेड सिगरेट छाड़ि आन कोनो सिगरेट ठोरसँ नहि लगबैत छथि, शिवाज रीगल पानि जकाँ पीबय छथि, ओ केहन (क्षीण कटि) रमणीक कामना करता? एक बेर ओहि फ्लैट पर अहाँकेँ आबय पड़त।

शंकरक आपत्तिकेँ देखि ओ घाघ हँसि क' कहलकनि "सर, सर, अहाँ एकदम निश्चिन्त रहू! एहि ठाम एहन कोनो खतरा नहि भ' सकैत अछि। आब हम अहाँ सँ की नुकाउ, एक सँ एक ऊँच खानदान आ पद-प्रतिष्ठा बला लोक सभ एहि ठाम अबै छथि, फेर हमहूँ ई बुझै छियै जे अहाँ सभक अफसरी देशी अस्तूराक धार पर टिकल रहैत अछि। अहाँकेँ विश्वास नहि हो, त' एक दिन हमरा कोठरीमे लागल मैजिक आइसँ स्वयं देखि लियौ, कोना कान पर जनउ चढ़ा लघुशंका करयबला प्रसिद्ध नेता, कलाकार, यूनिवर्सिटीक प्रोफेसर, अहाँक बिरादरीक महानुभाव सभ नकाब पहिरि, सीना तानि हमरा फ्लैटमे अबै छथि आ सन्तुष्ट भए निर्भीक वापस चलि जाइ छथि। कोयलाक एहन आन कोनो कोठरी नहि अछि, जाहिमे गेला पर कनियो कारिख नहि लागय। आर ककरा करेजमे एतेक दम छै, जे हमरासँ भिड़त?"

मुदा शंकर सेहो काँच गोली नहि खेलायल छलाह। ओ नीक जकाँ देखि-परेखि कोनो निर्णय लेबय चाहैत छलाह। ओहि मैजिक आइसँ ओ तेहन-तेहन दिव्य झाँकी देखलनि जे पहिने त' हुनका अपना आँखि पर विश्वासे नहि भेलनि। ओह! इहो सब एतय अबै छथि?

अभ्यागत सभ आबथि आ अपन नकाब हटा लेथि। सँग मे एकटा किशोरी रहैत छलनि। देखैत-देखैत सभ कोठरी सँ हँसीक फुलझड़ी छुटय लागय। सन्तुष्ट भय कनखीसँ एम्हर-ओम्हर देखैत अपन-अपन नकाब लगा सीढ़ी उतरि जाथि। चतुर प्रबन्धक प्रत्येक पाहुनकेँ जयबासँ पहिने स्वयं बाहर जा 'लाइन क्लियर' केर हरियर झण्डा देखा देथिन, कतौ एहन ने भ' जाय जे एकटा सम्भ्रान्त निशाचर कोनो दोसर सम्भ्रान्त निशाचरसँ टकरा जाथि।

चारिम दिन आश्वस्त भए शंकर पहिल बेर नकाब पहिरलनि। एकटा विचित्र परिचित सन मादक सुगन्धिसँ हुनकर नाक फड़कि उठलनि, प्रबन्धकक रुचि निश्चय उच्च कोटिक छलनि। एहने सुगन्धि सौदामिनीक ब्लाउजसँ सेहो अबैत छलनि। एक क्षणक लेल ओ सुगन्धि हुनका विचलित कय देलकनि। हुनका लगलनि जे नाक पर लागल ओ नकाब नहि, सौदामिनीक ब्लाउज छनि। ओहि समयक कतेक मधुर क्षणक यादि आबय लगलनि। मुदा ओएह मोहक बन्धन हुनकर माय-बापक मोहक बन्धनकेँ निर्ममतासँ काटि देने छलनि। एहि ठाम आबि क' ओ ओहि निर्मम पत्नीसँ प्रतिशोध लय रहल छथि। तत्क्षणे ओ एकदम कठोर बनि अपन अलॉटेड कोठरी दिस बढ़ि गेला। कोठरीक सजावटि अनुपम छलै। देवार पर लागल नग्न यक्ष-यक्षिणीक मिथुन जोड़ाक चित्रक ऐश्वर्य खजुराहोक देवालयक देवार पर खोदाओल मूर्तिसँ कम नहि छलै। एकटा टेबुल पर प्लेब्यॉय पत्रिका छलै, आ ओहिमे डूमल किशोरीक पीठ हुनका दिस छलै। पएरक आवाज सुनितहि ओ शालीनतासँ उठि ठाढ़ भ' गेल।

"गुड इवनिंग सर!"

"इवनिंग, "शंकर हँसि क' प्रत्युत्तर देलखिन, मुदा तखनहि अनेको बेर

अभ्यास कयल गेल हुनकर हँसी विलुप्त भ’ गेलनि। लड़की सेहो हुनका चकोर जकाँ चकित दृष्टिसँ देखि रहल छलनि। भरिसक दुन्नु गोटे एक-दोसरक अप्रत्याशित व्यक्तित्व लेल प्रस्तुत नहि छलाह। लगै जेना ओ रुअबगर, गम्भीर पाहुन एहि ठाम अयबासँ पहिने भयरहित होयबा लेल हजरतगंजक बजरंगबलीक सिनुरक टिक्का लगा आयल छथि। ओम्हर स्कर्ट- ब्लाउजमे मुस्की दैत ओहि किशोरीकेँ देखि लगै जेना कोनो स्कूल जाइ बाली मासूम लड़की होइ। एक क्षणक लेल दुन्नू गोटा अवाक् रहि गेला। फेर सिगरेट-केससँ सिगरेट निकालि, लाइटरसँ सुनगा शंकरे चुप्पी तोड़लनि-"की नाम अछि?"

'कोयल।"

"वाह! नाम त' बड्ड सुन्दर अछि-एकदम अहाँक आवाज सँ मेल खाइत! कहियासँ एहि आम्रकुञ्जमे कुहकि रहल छी?"

"सर, हम नहि बुझलहुँ? असलमे हमर एलिमेंटरी हिन्दी अछि, आ ताहूमे हरदम फेल होइत आयल छी।"

'ओह, "मुदा एक विषय मे त' अहाँक असाधारण प्रतिभा होयत, जे एतेक छोट अवस्थामे एहि ठाम पहुँचि गेलहुँ।"

ओ आँखि झुका लेलक। ओकर चेहरा एकदम उदास भ’ गेलै। शंकरक दृष्टि ओकरा चेहरा पर गेलनि त’ मोन कोना-दन भ' गेलनि, मुदा आब हुनकर नजरि चेहरासँ हटि देह पर फिसलै लगलनि। चेहरा श्यामल छलै, मुदा देहक गढ़नि लाखोमे एक छलै। प्रबंधक निश्चित रूपसँ हुनकर रुचि चीन्हि गेल छलनि। जँ देहक बढ़नि आँखि नहि अटकबितै त' ओकर शरीरक पूरा नक्शा तेरह-चौदह वर्षक किशोरीक छलै। पातर सन गट्टामे बान्हल ढीला घड़ी बाजूबंदे जकाँ लटकि गेल छलै। नहि जानि ओ अपन बापक घड़ी पहिरि क' आयल छल वा कोनो पाहुनक देल उपहार? एहि बीच बेयरा ट्रे मे दुइ टा गिलास, सोडा आ हुनकर प्रिय पेय राखि गेलनि। अपनाकेँ संयमित करैत शंकर गिलास भरलनि आ एकटा गिलास संगिनी दिस बढ़ा, हँसि क' बजला, "चियर्स!"

एहि बेर ओ हँसि देलक। देखैत-देखैत दुन्नुक चेहराक उदासी उड़ि गेलनि।

"एखन पढ़ि रहल छी की?"

"हँ, एहि साल सीनियर केम्ब्रिज दय रहल छी।"

शंकर केर करेजमे जेना क्यो मुक्का मारि बैसलनि। जँ ओहि मुसलमान छौड़ा सँग बेबी भागल नहि रहितथि त' ओहो एहि साल बी.एस .सी मे. रहितथि। कहीं ई बेबीएक संगी ने होइ! बहुत काल धरि ओ किछु बाजि नहि सकला।

कोयल बेर-बेर हाथक घड़ी देखि रहल छल। अपना अधैर्यसँ जेना बिनु किछु कहनहि हुनका कहि रहल छलनि-हम्मर समय सीमित अछि, समय पर घर पहुँचबाक अछि, नहि त' डांट पड़त।

शंकरकेँ बेर-बेर अपन बेटी मोन पड़नि जे साँझ भरली घर अबैत छलनि, सौदामिनीकेँ त' कहियो बेटीक चिन्ता नहि भेलनि। कहियो क' ओएह तमसा क' पुछथिन, "कतय घुमैत छलहुँ एतेक अबेर तक?"

"पापा, हमर एक्स्ट्रा क्लास छल, मदर सभ लड़कीकेँ रोकि लेलखिन त' हम कोना आबि जयतहुँ?"

तहन कि इहो छौंड़ी अपन अभागल पापाकेँ एक्स्ट्रा क्लासक धोखा दय एहि गुप्त अड्डा पर भटकि गेल अछि?

"अहाँक पिता की करैत छथि?" एकाएक शंकर पूछि बैसलखिन। हुनकर प्रश्नसँ कोयल चिहुँकि उठल। एक्कहि क्षणमे ओकर चेहराक एकहकटा निर्दोष रेखा बिला गेलै। नब-नब पकड़ाएल क्रुद्ध नागिन सन फुफकारसँ ओ अपन सीना तानि लेलक, "अहाँकेँ मतलब?"

स्पष्ट छलै जे सम्भ्रान्त पिताक कुल, गोत्र उगलै लेल ओ एहि ठाम नहि आयल अछि।

"तमसाउ नहि, हम त' ओहिना पुछि बैसलहुँ–आउ " हँसैत शंकर अपन दुन्नु बाँहि पसारि देलखिन। ओहि आवाहनक भाषाकेँ ओ नीक जकाँ बुझैत छल।

तकरा बाद कोयल शंकरक नीरस जीवन केर सरल अभिन्न अंग बनि गेलनि। कार्यालयक फाइलक अम्बारकेँ बिजुरिक गतिसँ चिरैत आब समयसँ पहिनहि ओहि गुप्त अड्डाक सीढ़ी चढ़य लागथि। कोयल रोज नवीन वेश-भूषामे अपन नब प्रेमीकेँ पूर्ण रूपसँ मोहि चुकल छली। अपन नब प्रेमिकाक बचपना बला फरमाइश पूरा करबामे शंकरकेँ खूब आनंद आबय लगलनि-कहियो चॉकलेट, कहियो नटीज, कहियो हल्लुक-फल्लुक उपन्यास। एक दिन त' ओ अमानवीय दुस्साहससँ बिनु नकाब पहिरनहि हैम बर्गर आ सॉफ्टी सेहो खुआ अनलखिन। एक दिन त' हुनकर दुस्साहस मर्यादाक चरम सीमाक सेहो उल्लंघन कय देलकनि। सौदामिनीसँ कोनो काल्पनिक कैबिनेट-मीटिंगक बहन्ना बनाय कोयलकेँ लय कुकरैलक बीहड़ जंगलमे बाँहिक घेरामे बान्हि दिन भरि घुमैत रहला। लगै जेना ई यौवनक अन्त नहि, यौवनक आरम्भ हो। दुर्भाग्यसँ कोयल सेहो अपन ओहि व्यक्तित्वसंपन्न प्रेमीक प्रेममे आकण्ठ डूमि चुकल छली। एही तरहेँ कतेक मास बीति गेल। एक त' प्रेम ओहिना आन्हर होइ छै, मुदा प्रौढ़ावस्थाक प्रेमक प्रवाह असाध्य होइ छै। एम्हर सौदामिनी नब कोठीक व्यावसायिक रूपकेँ सजबैमे लागल छली। जखन ओ बेचारी फ्लश, बेसिन आदिक अरसिक सञ्चालनमे लागल छली, शंकर जीवनक रस-तरंगमे ऊम डूम क' रहल छलथि। पतिक प्रसन्न चेहरा देखि कखनो सौदामिनी कहबो करथिन-"लगै अछि जे अहाँ पर आब जवानी चढ़ि रहल अछि! गोल्फ खेलबाक लाभ देखा रहल अछि!"पति केहन गोल्फ खेलाइ छथिन, ओहि बेचारीकेँ की पता!

मुदा तखने रससँ लबालब छलकैत शंकरक जीवनक ओ मधुपात्र स्वयं एक दिन फूटि गेलनि। ओहि दिन शंकर केँ अबिते कोयल लग आबि कानय लागल। हमरा जाहि बातक डर छल, ओएह भेल। हमरा चारि मासक गर्भ अछि शंकर। अहाँ हमर डैडीकेँ नहि जनै छियनि शंकर! ओ हमरा गोलीसँ उड़ा देता।

एक क्षणक लेल शंकरक चेहरा उज्जर भ' गेलनि, मुदा फेर तुरत सतर्क

भ' गेला। भरिसक हुनका बुझबामे आबि गेल छलनि जे एखन जँ कनियो नरम पड़ब त' अनर्थ भए सकैत अछि। कान्ह पर पड़ल पानिक बुन्न जकाँ झटकि कय एक्कहि झटकामे दूर फेकय पड़त।

"त'?" ओ एकदम उदासीन, हृदयहीन मुद्रामे पुछलखिन।

यू मस्ट डु समथिंग!" नोर पोछैत कोयल कहलकनि।

"किएक, हम किएक करब? हाउ एम आइ कंसर्न्ड? की हमहीं टा अहाँक एकमात्र ग्राहक छी?"

"किएक मजाक करै छी शंकर! हम किरिया खाइ छी जे जहियासँ अहाँ आयल छी, अहाँ छाड़ि कोनो आन पुरुषक स्पर्शो नहि कयने छी। हम्मर डैडी...-"

"चूल्हिमे जाथु अहाँक डैडी! बेटीसँ धन्धा करबैसँ पहिने नहि सोचलनि अहाँक डैडी?"

आर एक तरहेँ कोयलकेँ ठेलिये क' ओहि ठामसँ बहरा गेला। भरि राति ओ जगले रहला। बेर-बेर कोयलक डेरायल हिरणी सन विस्फारित दृष्टि हुनका बेधैत रहलनि।

दोसर दिन दिल्लीसँ कोनो मीटिंगक बजाहटि आबि गेलनि। ओहि दिन पहिले फ्लाइटसँ ओ दिल्ली निकलि गेला। तेसर दिन आपिस अयला त' अर्दली नब-पुरान अखबारक मिलल गड्डी चाहक संग टेबुल पर राखि गेलनि। अचानक हुनकर दृष्टि पहिले पृष्ठक कोनामे छपल पंक्ति पर पड़लनि

–गोमतीमे वरिष्ठ अधिकारीक किशोरी पुत्रीक लहास भेटलै, मृत्युक कारण आत्महत्या अछि। लहास पोस्टमार्टमक लेल गेल छै।

शंकरक अपराधी, शङ्कित भीरु चित्त उद्विग्न भ' गेलनि। कोयलक सिसकैत छवि कखनो हुनका दिमागसँ निकलबे नहि करनि। जाहि डैडीक नामकेँ ओ सात ताला मे बन्न कय नुकबैत रहैत छल, ओ नाम पानिमे हेलैत लहासक सँग ऊपर आबि गेल छलै। शंकर सपनहुँमे नहि सोचने छलाह जे अपने अफसर समाजक कोनो संभ्रांत सदस्यक पुत्रीक मृत्युक कारण ओ बनता। तखने हुनका मोनमे इहो शंका भेलनि जे कोनो चिट्ठी-तिट्ठी त' नहि

छोड़ि क’ मरल अछि अभगली? अपने त' डुमबे कयल, कतौ एहन नहि हो जे हमरो नौकरी ल’ डूबय! हुनकर आशंका व्यर्थ नहि छलनि। अखबारक पहिल पेजक कोनमे छपल आत्महत्याक ओ छोट सन खबरि, देखैत-देखैत विराट रूप ल' लेलकै। फेर अनेक सर्वशक्तिसंपन्न लोकक नाम लपेटमे अबैत देखि, सतर्क प्रेस अपन पैंतरा बदलि मानसक महान सत्य हृदयंगम क' लेलक-'समरथ कैँ नहि दोष गोसाई!' ओहि अस्पष्ट गुनगुनाहटिमे जे नाम सभसँ प्रखर भए बहार भेल, ओ सुनिते व्यवहारकुशला सौदामिनी सतर्क भ' गेल छली। बहुत चतुराइसँ अपन डूबैत पतिकेँ पानिक गहीर धारसँ बाहर घीचि घाट पर आनि पटकि देने छलखिन। बाहर ल' त' अनलखिन, मुदा ओहि घीचा-घीची मे पति-पत्नीक सम्बन्ध मृत-प्राय भ' गेल छलनि।

छल त' छले होइत छै मुदा जुआनिक क्षमाशील चित्त एहन प्रवञ्चनासँ समझौता कइयो लैत छै, मुदा जखन एतेक वर्षक साहचर्य छलल जाइत छै त' ओहि छलनाकेँ क्षमा करब ने पतिक लेल सम्भव होइ छै ने पत्नीक लेल। दुन्नूक बीच गप-शप त' एकदम बन्दे भ' गेल छलनि, मात्र लोकलाज द्वारे खेनाइक टेबुल पर वा सुतबाक कोठरीमे एक-दोसर सँ आमना-सामना होइनि। दिन भरि फेर दुन्नु गोटे अपन-अपन काज पर निकलि जाथि। साँझ क' आबथि त' दुन्नुक बीचमे मरघट सन मौन पसरल रहैत छलनि। एक दिन शंकर ऑफिससँ घुरला त' सौदामिनी केँ घरमे नहि देखलखिन। नौकरकेँ बजा क’ पुछलखिन, "मेम साहेब नबका कोठीसँ घुरल नहि छथि?"

"सर! आइ मेम साहेब ओहि ठाम नहि गेल छली। भोरक दसे बजे कत्तहु गेल छथि–"

शंकरक डेरायल मोन खाली खराबे संभावनाक जाल बुनै लगलनि। पत्नीक तन-मनक मजगूत काठी केँ ओ नीक जकाँ चिन्हैत छला। भावुकताक क्षणिक आवेशमे ओ अभागिन कोयल सन मूर्खता नहि करती ई ओ जनै छला, तथापि डेरायल त' छलाहे। बहुत रातिमे सौदामिनी घुरली त' हुनकर सुखायल मुँह देखि पहिने त' शंकरकेँ पत्नी पर दया अयलनि। मुदा छनहिमे ई कोमलता बिला गेलनि जखने ई मोन पड़लनि जे अही

अहंकारी, स्वार्थी, धनलोलुप स्त्रीक कारण त' आइ हम्मर ई दुर्दशा अछि। दुन्नु गोटे सभ दिन जकाँ निःशब्द भोजन कयलनि, बिछौन पर अगल-बगल पड़ि रहला, फेर सभ दिन जकाँ बत्ती मिझा सौदामिनी अपन पलँगकेँ पतिक पलँगसँ दूर घीचि लेलनि। ओ पड़ले छला मुदा सौदामिनी पलँग पर बैसल छली। सहमल स्वरमे शंकर पुछलखिन, "आइ मोन ठीक नहि अछि की?"

शंकरक प्रश्न पुछिते ओ भुखायल बाघिन जकाँ हुनका पर टूटि पड़ली ", निर्लज्ज! बेहया! ई पुछैत मुँह नहि गलि गेल! आब हमर मोन की ठीक होयत! ई लिय', एकरा पढ़ू! जनै छी, एहि चुरकुटकेँ असुलै मे हमरा नैहरसँ भेटल हीराक जड़ाउ सेट बेचय पड़ल, हमर सभटा सेविंग सर्टिफिकेट, सभ युनिट, सभ चलि गेल–पूरा बीस हजार लेलक ओ राक्षस।"

" के लेलक, केहन चुरकुट?" शंकर भयत्रस्त उठि बैसला।

"ओएह, जे अहाँकेँ मधुकुंज पहुँचयने छल। लिय' पढ़ू एकरा।" बत्ती जरबिते संक्षिप्त पत्रक कॉन्वेन्टी लिखावट चिन्हबामे हुनका देरी नहि लगलन्हि।

'शंकर!

'लोक कहै छै जे मरनिहार फूसि नहि बजैत अछि। जाहि बिनु जनमल सन्तानकेँ अहाँ नहि स्वीकार कयलहुँ, ओकरा आन के स्वीकार करितै? ताहि लेल ओकरा नेनहि जा रहल छी। ओ अहींक सन्तान छल शंकर! अहाँ सँ परिचय भेलाक बाद हम आन कोनो पुरुषक स्पर्श नहि कयलहुँ–.

कोयल,'

पतिक हाथसँ चिट्ठी छीनि, तामससँ बताहि भेल ओकरा चिर्री-चिर्री कय क' फेकि देलनि।

बड़ी राति धरि सौदामिनीक सिसकैत, कँपैत देहकेँ शंकर देखैत रहला, फेर उठि क' बाहर चलि गेला। कोनो विशेष मौका लेल अपन कैबिनेटमे एकटा बोतल नुका क' रखैत छला। नहि जानि कखन धरि ओहि अन्हार कोठरीमे ओकरा घुटकैत रहला। जहन निशाँमे धुत्त भ' गेला त' कोनो तरहेँ

आबि पलँग पर पड़ि रहला। बड़ी कालक बाद अपना माथ पर ककरो स्पर्श पाबि अकचका क' जागि गेला। लगलनि जेना, सिरमा लग केओ ठाढ़ अछि। निशाँमे मातल होइतो पत्नीक देह चिन्हबामे कोनो गलती नहि कयलनि ओ।

सुखद आश्चर्य भेलनि। तखन की जीवनक लाज आ कलङ्क दुन्नू गोटेकेँ लग लय अनने छलनि? दुन्नु बाँहि पसारि मुस्कैत बजला। "आउ, आउ सौदामिनी! हम निर्दोष छी–आउ!"

खबरदार जँ हमरा छूलहुँ! "ओ छिटकि क'दूर ठाढ़ भ' गेली।" शराबी, हत्यारा नहितन!" कोन मुहें बजै छी जे हम निर्दोष छी?

'पाखंडी नहितन, देखू, आइ हम अहाँक अंतिम, मुखौटा सेहो उतारि देलहुँ, एतेक वर्षक बाद आइ हम अपन बदला लय सकलहुँ अछि!' साक्षात् उग्र चण्डिके जकाँ ओ अपन दुन्नु बाँहि ऊपर उठा लेलनि। हुनका एक हाथ मे कैंची छलनि, दोसर हाथ मे छलनि पंखाक हवामे फहराइत पतिक निष्प्राण शिखा।